# 2. Field Exploration

| S.No. | Subject | Assignment |
|---|---|---|
| 1. | Course - 1: Childhood and Growing Up | Submit the report along with the photograph of Inclusive institution. |
| 2. | Course 13: Field Engagement | Plan and organize a field trip/excursion to a nearby area of educational important and submit a report. |

**PRINCIPAL**

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

# GULAB BAI YADAV SMRITI SHIKSHA MAHAVIDHYALAY,BORAWAN

**B.Ed: first Year**

**2021-22**

## Subject: Child hood and growing up

**Assignment Topic**

**Submit the report along with the photograph of inclusive institution**


Submitted By

Arjent Dawar

Submitted to

Dr.Parinita Ratnaparkhi

Asst. Professor


Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

# शास. दृष्टि एवं श्रवण बा. उ. मा. विद्यालय खरगोन

# भ्रमण दिना.

## 2021-22

SUBMITTED BY

1. Rohit patidar
2. Rahul patidar
3. Sweta patidar
4. pallavi sharma

SUBMITTED TO-

Shrinath

Topic _____ Date _____

Page 2

बालक / बालिकाओ कक्षा उपस्थिति पत्रक

दृष्टि बा. सवर्गी शैक्षणिक सत्र - 2022-23

| | | छात्र | | | छात्रा | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्र. | ~~छात्रावासी~~ कक्षा | छात्रावासी छात्र | दैनिक छात्र | योग | छात्रावासी छात्रा | दैनिक छात्रा | योग | कुल-योग |
| 1. | नर्सरी | – | – | – | – | – | – | – |
| 2. | ग्रेड-I | – | – | – | – | – | – | – |
| 3. | 1 ली | 0 | – | – | – | – | – | – |
| 4. | 2 री | 0 | – | – | – | – | – | – |
| 5. | 3 री | 01 | 01 | 02 | – | – | – | 02 |
| 6. | 4 थी | 01 | – | 01 | – | 01 | 01 | 02 |
| 7. | 5 वी | 0 | – | – | – | – | – | – |
| 8. | 6 ठी | 0 | – | – | – | – | – | – |
| 9. | 7 वी | 01 | 01 | 02 | – | – | – | 02 |
| 10. | 8 वी | 01 | – | 01 | – | – | – | 01 |
| 11. | 9 वी | 02 | – | 02 | – | – | – | 02 |
| 12. | 10 वी | – | 01 | 01 | – | – | – | 01 |
| 13. | 11 वी | 01 | – | 01 | – | – | – | 01 |
| 14 | 12 वी | 02 | – | 02 | – | – | – | 02 |
| योग | | 09 | 03 | 12 | – | 01 | 01 | 13 |

# बालक / बालिकाओ कक्षाउपस्थिति पत्रक

श्रावणा/मूख बा. संवर्ग शैक्षणिक सत्र 2022-23

| क्र. | कक्षा | छात्र | | | छात्रा | | | कुलयोग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | छात्रावासी छात्र | दैनिक छात्र | योग | छात्रावासी छात्रा | दैनिक छात्रा | योग | |
| 1. | नर्सरी | – | – | – | – | 01 | 01 | 01 |
| 2. | ग्रेड 1 | | | | – | 01 | 01 | 01 |
| 3. | 1 ली | 02 | 01 | 03 | – | – | – | 03 |
| 4. | 2 री | 03 | – | 03 | – | | | |
| 5. | 3 री | 01 | 01 | 02 | – | | | |
| 6. | 4 थी | 01 | – | 01 | – | | | |
| 7. | 5 वी | – | 01 | 01 | – | | | |
| 8. | 6 वी | 01 | 01 | 02 | – | | | |
| 9. | 7 वी | 05 | – | 05 | – | | | |
| 10. | 8 वी | 05 | 01 | 06 | – | | | |
| 11. | 9 वी | 09 | – | 09 | – | 02 | 02 | 11 |
| 12. | 10 वी | 06 | 01 | 07 | – | – | – | 07 |
| 13 | 11 वी | 10 | 01 | 11 | – | – | – | 11 |
| 14. | 12 वी | 10 | – | 10 | – | 02 | 02 | 12 |
| योग | | 53 | 07 | 60 | – | 06 | 06 | 66 |

# विद्यालय भ्रमण अहवाल

विद्यालय का स्तर :- उच्चतर माध्यमिक (नर्सरी से 12वी तक)

विद्यालय का नाम :- मूक बधिर तथा दृष्टिबाधित उच्चतर विद्यालय खरगोन (म.प्र.)

विद्यालय स्थापना वर्ष :-

विद्यालय स्थान :- केन्द्रिय विद्यालय के पिछे खरगोन

समय :- 10:30 से 5:00 बजे तक

विद्यार्थियो की संख्या :- 79

दृष्टिबाधित :- 13
मूक बधिर :- 66

अध्यापक, अध्यापिकाओ की संख्या :- 05

प्रधानाध्यापक का नाम :- धर्मेन्द्र गांगले
मो. न. :- 9826418873

अध्यापक, अध्यापिकाओ के नाम :- मो. न.

1. अनिता पाटील :- 9754534032
2. दुर्गा भिलाला (दृष्टिबाधित) 7581871284
3. बालमुकुंद यादव :- 94256-25730
4. नरेन्द्र खोडे (व्याख्याता)

* विद्यालय मे कक्षाओ की संख्या :- 12

विद्यालय सहगामी पाठ्य क्रियाएं :- प्रार्थना, खेल प्रतियोगिता।

संसाधन :-

पानी की व्यवस्था :- हाँ (✓) ना ( )

विद्यालय मे पीने के पानी के लिए नलके व नहाने के लिए टंकी मे पानी की उत्तम व्यवस्था है।

खेल सामग्री :- विद्यालय मे खेलने के लिए क्रिकेट, वॉलीबाल, बेट - बाल आदि की व्यवस्था थी।

शौचालय :- विद्यालय मे शौचालय की उत्तम व्यवस्था थी, साफ - सुथरा तथा बालक - बालिकाओ के लिए अलग - अलग व्यवस्था थी।

खेल का मैदान :- बच्चो के खेलने - कुदने के लिए विद्यालय मे खेल का मैदान था जिसमे बच्चे खेल - खेलते है।

प्रार्थना तथा सर्दी के मौसम मे पढाई करने की उत्तम व्यवस्था :-

प्रार्थना के लिए विद्यालय के मध्य उत्तम व्यवस्था, व सर्दी के मौसम मे बच्चो को धूप मे पढाई करने की व्यवस्था थी।

Good

होस्टल :- मूकबधिर तथा दृष्टिबाधित बच्चो की रहने की उत्तम व्यवस्था थी।

1. खाना :-
होस्टल मे सुबह से चाय, दूध बिस्कीट, नाश्ता तथा खाने की उत्तम व्यवस्था थी।

निशुल्क पाठ्यपुस्तक व यूनिफार्म :-
बच्चो के लिये निशुल्क पाठ्यपुस्तक व यूनिफार्म की उत्तम व्यवस्था थी।

ब्रेल लिपि वर्णमाला :-
दृष्टिबाधित बच्चो को पढाने हेतु निम्न चार्ट के द्वारा बच्चो वर्णो का अध्ययन कराया जाता है, जो निचे चित्र मे दर्शाया गया है।

शिक्षिका :- दुर्गा मिलाला

## ब्रेन लिपि द्वारा अध्ययन :-

दृष्टिबाधित शिक्षिका दुर्गा - मिताला द्वारा ब्रेन लिपि मे शब्दो को कैसे लिखा जाता है, लिख कर बताया गया।

ब्रेन लिपि मे लिखे गये हमारे नाम :-
रोहित, श्वेता, पल्लवी, और राहुल।

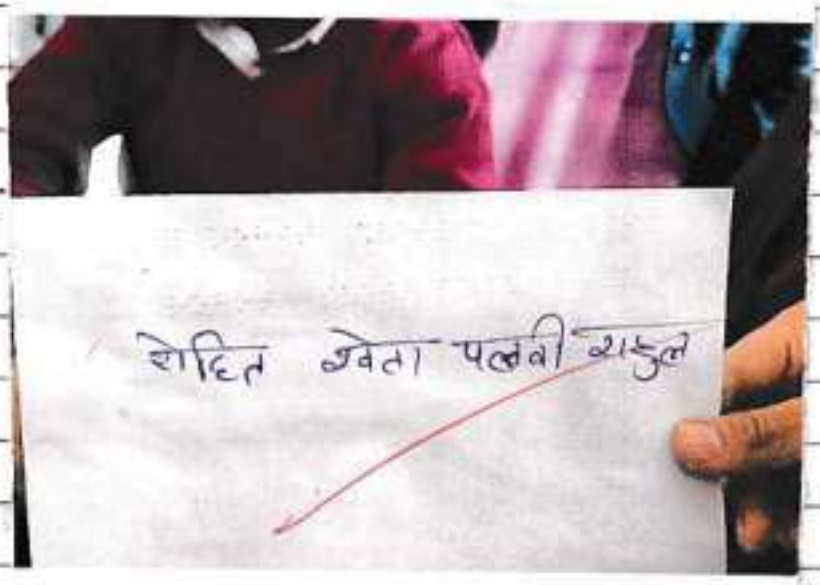


दृष्टिबाधित बच्चो द्वारा ब्रेन लिपि मे लिखि हुई पुस्तक को पढते हुए। उंगलियो से छुकर पढा जाता है।

Good

गणितिय संक्रियाए :- दृष्टिबाधित बच्चो को गिनती व जोड / घटाव, गुणा और भाग ब्रेल बोर्ड तथा अबेकस के माध्यम से सिखाई व लिखवाई जाती है।

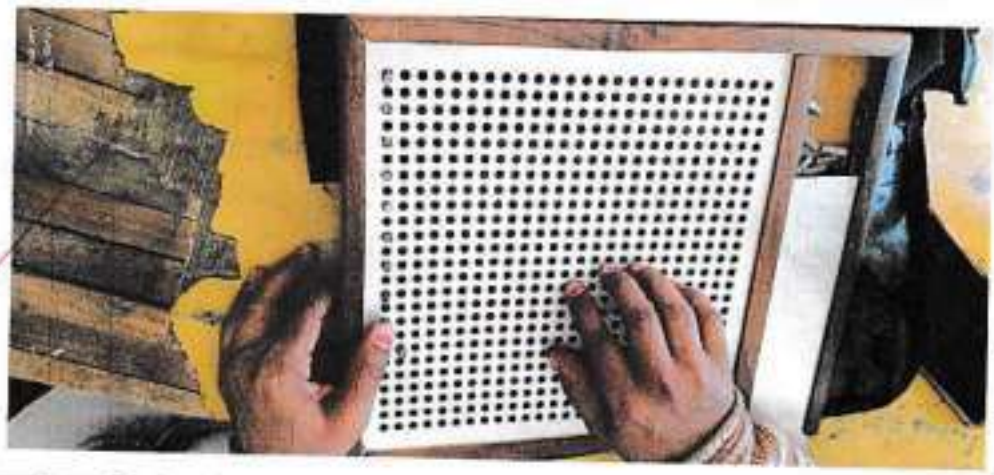

(ब्रेल बोर्ड)

इसमे एक बाक्स मे 8 प्रकार से या 1 से 8 तक की संख्याए लिख (दर्शाया) जाता है।

Shrinath

Topic

Date

Page 10

## श्रवण / मूक बधिर बच्चे :-

मूक बधिर बच्चो को शिक्षक नरेन्द्र खोड़े (सारथी) द्वारा, प्रोजेक्टर के माध्यम से पढ़ाते हुए ?

प्रोजेक्टर की मदद से चित्र तथा प्रश्न का हल करवाये जाते है।

Shrinath

Topic _____ Date _____

Page 11

विद्यालय समुदाय सम्बन्ध :-

विद्यालय मे हर 2 महिने मे शिक्षक अभिभावक संघ रखा जाता है जिसमे विद्यालय मे विद्यार्थी के माता-पिता को बुलाया जाता है और बच्चो की प्रगति के बारे मे बताया जाता है।

मूल्यांकन :- यह विद्यालय समाज मे एक नयी शिक्षा की नीव रखने तथा सामाजिक विडम्बनाओ को दुर करने के लिए अग्रसर है।

विशेष :- विद्यालय के प्रधानाध्यापक और अध्यापक सभी ने अत्यधिक सहायता कि गई और अच्छे व्यवहार से बच्चो की जानकारी प्रदान कि गई।

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

# GULAB BAI YADAV SMRITI SHIKSHA MAHAVIDHYALAY, BORAWAN

**M.Ed. II Year**

***Subject: Field Engagement***

**Assignment Topic**

## Plan and organize a field trip/excursion to a nearby area of educational important and submit a report


**Submitted By**

Varsha Mahodya

M.Ed Scholar

**Submitted to**

Surmal Narve

Asst. Professor


Prof. S.K. Tiwari
*Principal*
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

Example -

- Teacher - Children, opening their books page. Lesson number 3 children, take out your books.

- Teacher - Now I will read the story of the monkey and the crocodile. All of you listen carefully and keep reading in your book as well. (Teacher reads aloud in front of the whole class).

- Teacher - Write the meaning of difficult words in your answer books, which I am writing on the black board.

- Teacher - Now let us read the story again. The teacher starts explaining the story.

- Teacher - Have you understood the story, you must have understood it.

- Teacher - See more of the blackboard. I am writing the answer to the question given in the book. You try your answer book, take them down and remember these questions and answers tomorrow. I will ask you this question tomorrow. whoever does not answer me will be punished.

Submit the report along with the photograph of any one social institution. (Inclusive institution).

Narmada Narmadalaya NGO

N - Nimar
A - Abhyudaya
R - Rural
M - Managment
A - And
D - Development
A - Association

It was founded in october 2010 by Bharti Thakur after she completed Narmada parikrama. It runs free pre-school to high school level educational centres at lepa punarwas (Bairagarh) Bhattyan and chhoti khargone specially for the children of economically weaker section of the society in Khargone district of Nimar region of Madhya Pradesh.

The education program adopt an innovative approach of training and empowering local village women as educators. Additional initiatives are planned in the area of vocational training health and environmental awarness

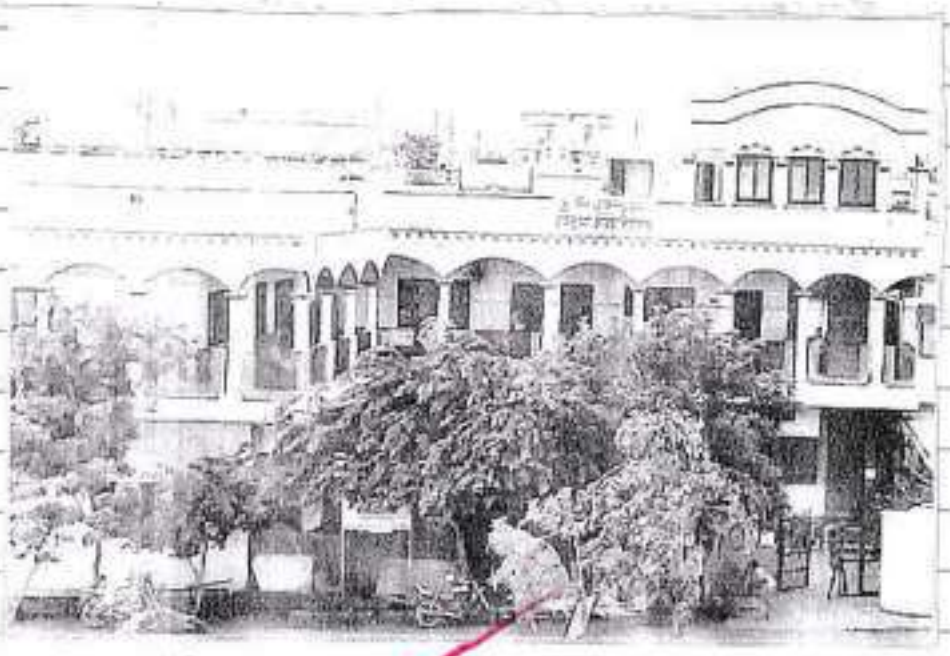

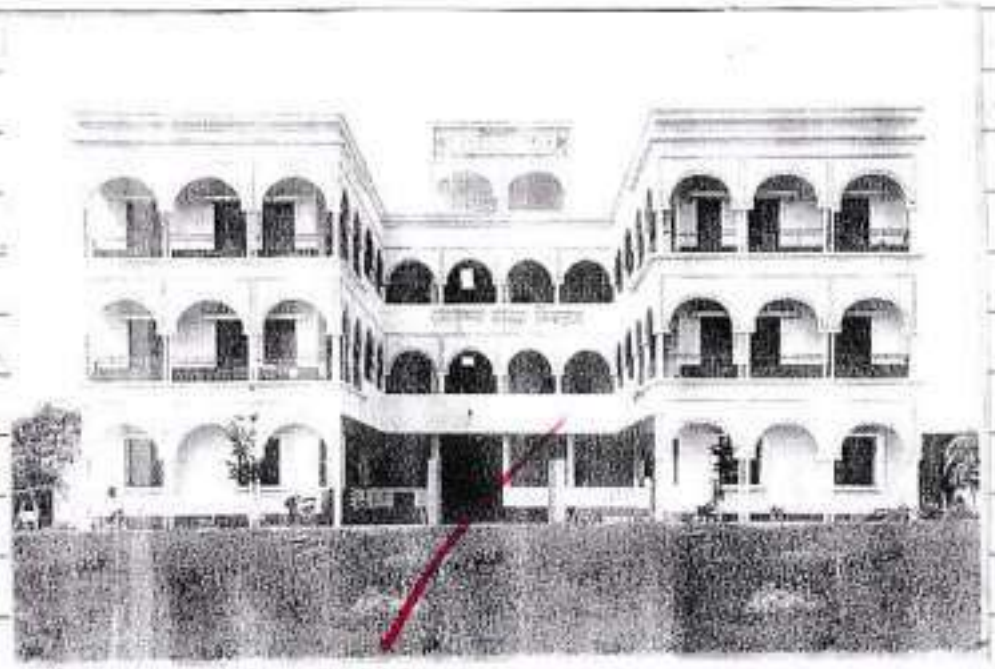

Good


रामकृष्ण सारदा निकेतन

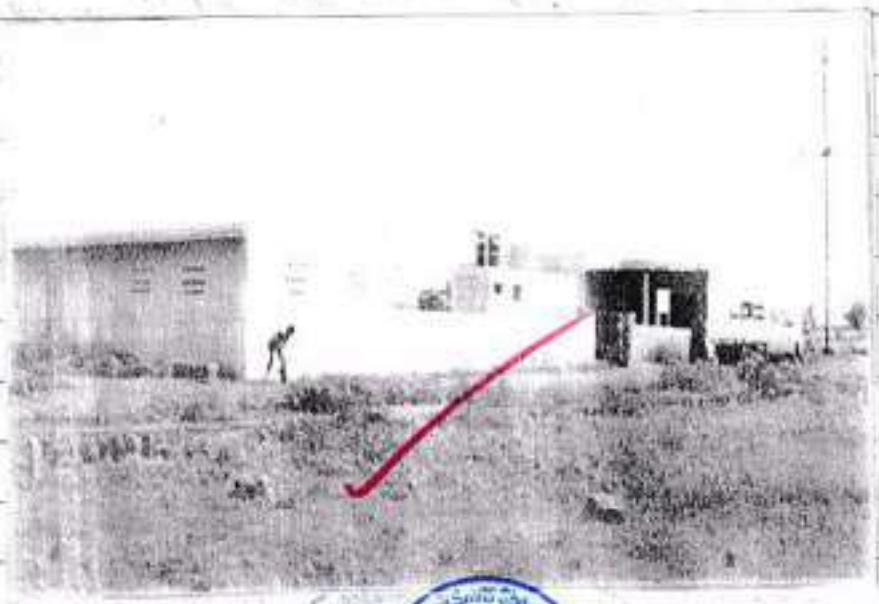

initiatives to provide a holistic approach towards ensuring the future well-being of children help people to earn their livelihood.

The association draws from rich experience of the dedicated individuals associated with they have volunteered to contribute to the integrated development of the region.

## The Journey So far -

On 23 January 2012 Sant Rajgiri baba donated his Ashram (5400 sq ft) at Lepa punarwas, Tehsil kasrawad district - Khargone Madhya pradesh for the educational activities of Narmadalaya.

2015 The building is presently used for hosted catering need to tribal children from Alirajpur, Barwani and Khargone districts. Electricity for the entire building is generated through solar panel and connected to MP.

2018 Construction of pre-primary section of Ramkrishna Sarda Niketan with the help of few individual donors in memory of Late Dr. Jagannath Wani, shri Shridhar Tivanrao gothe, Brahmachaitanya etc.

2020 with the financial support of LIC of India and few individual donors the ground floor of the school building of Ramkrishna Sarda Niketan was constructed in 2017-18.

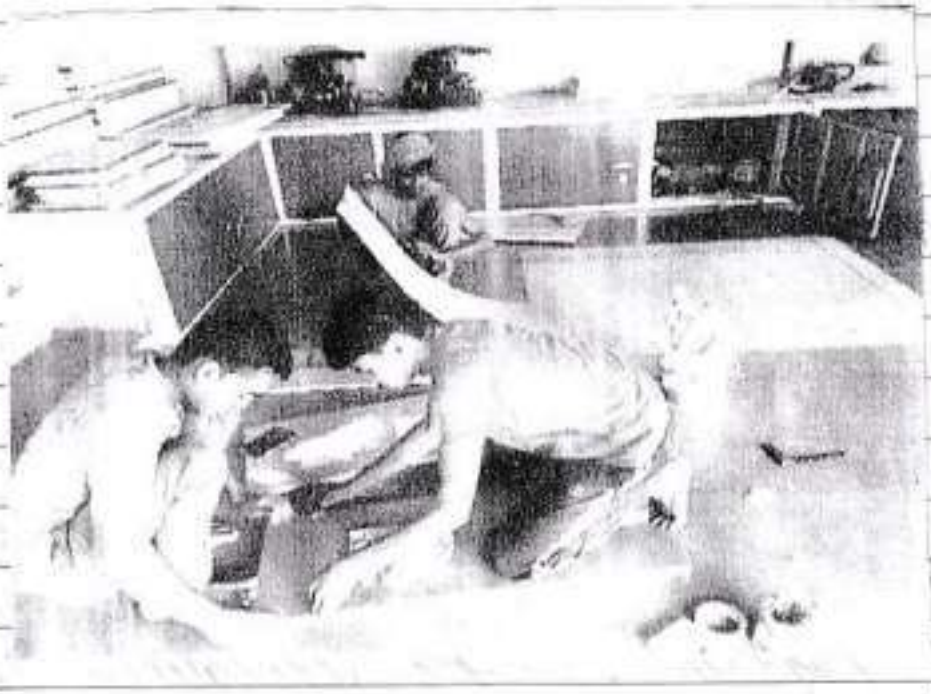

Ramakrishna Sarda Niketan School -

Education In this school has become the first digital school based on state board syllabus in Madhya Pradesh, student are showing talent in Music, sports along with education in this school.

Narmada Swar Lahri - This is a musical orchestra of the students of Ramakrishna Sharda Niketan. They are well trained and give their performance by going to many places.

Prof. S.K. Tiwari
**Principal**
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

# 3. Hand-on-activity

| S.No. | Subject | Assignment |
|---|---|---|
| B.Ed. | CC 1: Childhood and Growing Up | Reflect and write about your progress in emotional, social and moral development. |
| B.Ed. | CC 3: Learning & Teaching | Draw a mind map on the differences between Classical Conditioning and Operant Conditioning |
| B.Ed. | EPC 2: Drama & Art in Education | Draw Block painting match stick mandana, painting, Mehandi & Rangoli art? |
| B.Ed. | CC 6: Gender, School and Society | Work sheet: Identifying statements that denote sex and gender |
| B.Ed. | Course - 10: Creating an Inclusive School | Case study of children with special needs school in school situation. |

**PRINCIPAL**

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

# GULAB BAI YADAV SMRITI SHIKSHAMAHAVIDHYALAY,BORAWAN

## B.Ed. I Year

## 2021-22

**Assignment**

## *Subject: Childhood and growing up*

Submitted By

Sujit kushwah

B.Ed Ist Year

Submitted to

Manoj Koushle

Assi. Professor

Prof. S.K. Tiwari
*Principal*
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

VIJAYSHRI
PAGE NO.:
DATE:

# Question - 1

Q :- Reflect and write about your progress in emotional, social, moral development

**INTRODUCTION** :- Development is a broader term which refers to the Qualitative changes of growth in terms of physical social mental emotional and intellectual. These Changes are brought about through maturation and learning and is a product of heredity and environment science. Development refers to the Changes in structure from or shape and Improvement in functioning it is a progressive series of changes in an a orderly Coherent pattern. Here progressive that the changes are directional leading forward rather than backward.

**TYPES OF CHANGES IN DEVELOPMENT**

these changes are both qualitative as well as quantitative they Cover all the aspects of growth and development of an individual physical social and emotional. we shall deal (deal) with these aspects in the later section of the development.



TEACHER'S SIGNATURE

1. CHANGES IN SIZE.

2. CHANGES IN PROPORTION

3. DISAPPEARANCE OF OLD FEATURES.

4. ACQUISITION OF NEW FEATURES

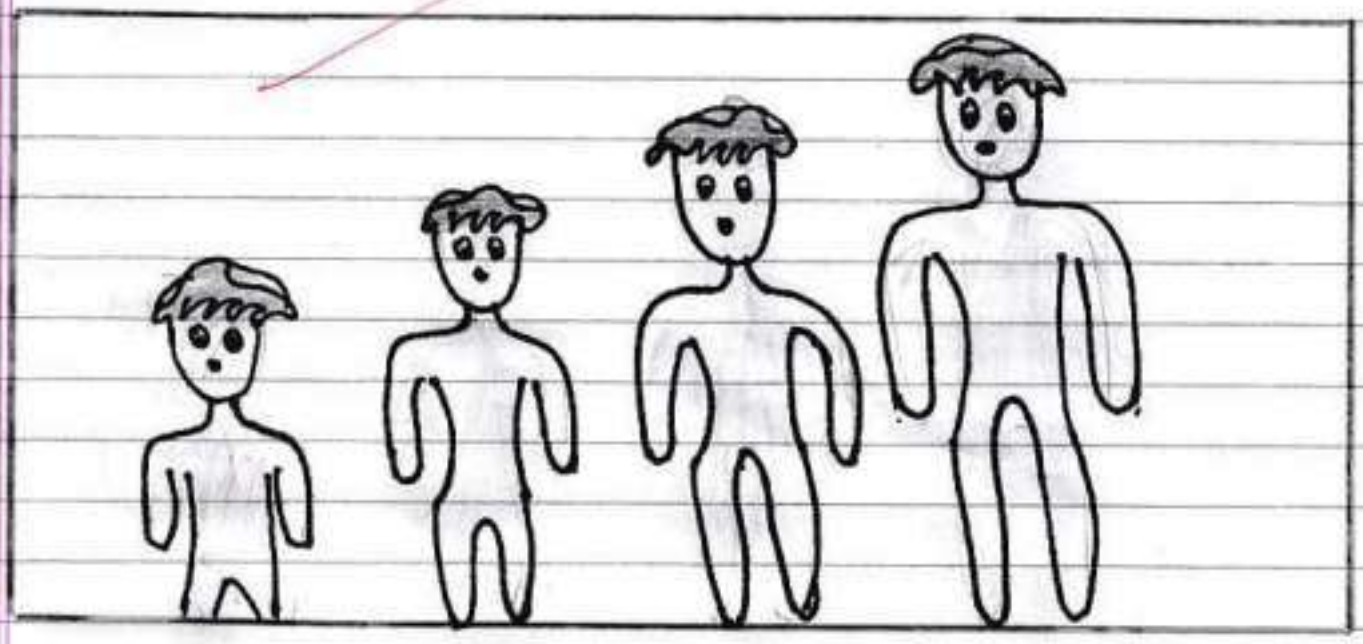

## PRINCIPLES OF DEVELOPMENT

1. Principle of sequence
2. Principle of Continuity
3. Principle of direction
4. Principle of uniform pattern
5. Principle of Lack of uniformality.
6. Principle of integration and Interdependence
7. Principle of Interaction of Environment
8. Principle of general to specificity

9. Principle of differentiablity
10. Principle of predictablity
11. Principle of spiral and non-linear development

Although there are individual differences all normal children are follow a general principle of growth. researches have shown that behavioural development falling a pattern.

## ASPECTS OF GROWTH AND DEVELOPMENT

An organism keps changing with respect to their size appearance and internal tendencies Generally the changes in the individual follows the same pattern yet it differs due to their unique characteristics their makes them different from one another.

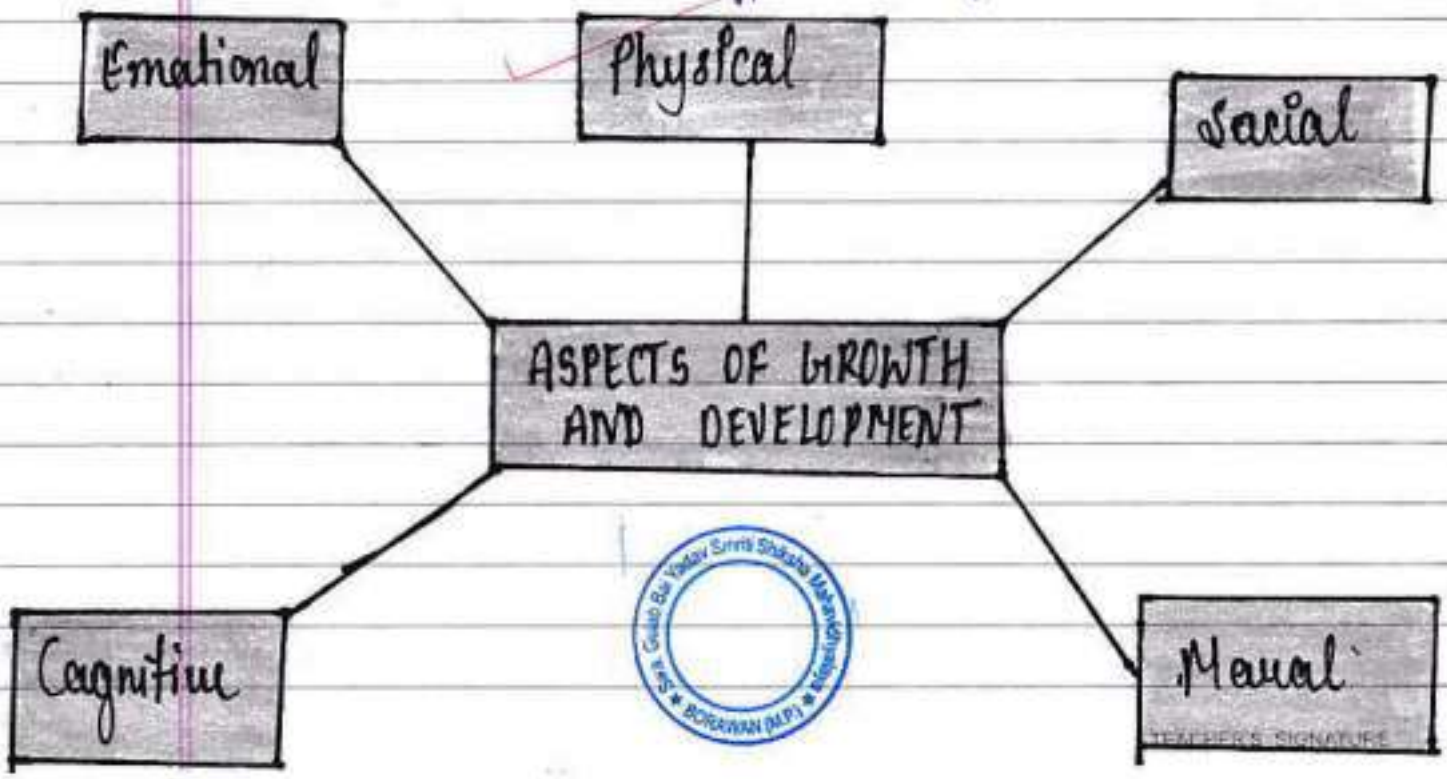

# EMOTIONAL DEVELOPMENT :-

The development of emotional behaviour pattern is interrelated with other aspects of growth. Emotion denotes state of being moved stirred up or aroused in some way. it helps in the personal and social adjustment of a person.

1) Emotions are frequent
2) it is temporary. for ex. of a child who is crying suddenly becomes quiet.
3) it is expressed in relation to concrete objects.
4) it works as a motivator.
5) Emotions provide energy to face the situation and help us to adjust in the society.
6) Emotions leads to personality.

The emotions of the children are influenced during the activities involved at home and in social and in school time. school has more influence than home as now the child is deprived of the security and protection of the home and placed into a desired world where there are others [true] the role of a teacher becomes very important here as the child may develop emotions which may range from love to hated. Hence it is essential

that the teacher must encourage the child to develop healthy emotions and accept the child for what he or she is. However in everyday life such emotional reactions frequently aggravated by interferences.

## SOCIAL DEVELOPMENT :—

Socialization is a significant process which begins as the child is born and continues throughout life a process of presenting alternate channels for individual behaviours together with the positive and negative sactions which will lead to acceptance of some and rejection of others it. the influence of social group formula and intrufere upon the personality of the individual.

Every individual has to follow certain norms to become an accepted member at the society. the process leads to his social growth where he inhibites certain habites which help him to develop his character during the process he forms pattern to conduct which is in conformity. social growth and development we mean that the increasing ability to get along well with one self and others



TEACHER'S SIGNATURE

1) it is a Continous process and beings from the time child Comes in Contact with peoples.
2) it enable him to develops social qualities such as Cooperation, sharing etc.
3) the process of social development enable the child to becomes an efficient member of his society.
4) it teaches the child adjust himself according to the norms of society.

Parents and teachers should therefore teach the children to respond positively to the social norms.

## MORAL DEVELOPMENT :-

these includes socially accepted behaviours and values inculcated in the society. In other words these are specially desired behaviour moral development is regulated by rewards and punishment according to acts as socially undesirable habits such as telling lie are discounted while moral acts such as respect to elders remembering bad doing the brother are reinforced for the welfare of the child as well as the society in which he lives here we shall briefly mention Kohlbergs theory of moral development.

1) it is called the stage without law as the behaviour of the child is neither moral.
2) at this state the adultes Control the moral development of the child by means of rewards.
3) During the stage Conformetly with group starts as the child does not wants to do what offends others.
4) this includes the rules of the internal authority it is Concerned with punishment and obedience orientation and what ~~the~~ satisfies ones own needs.
5) this includes what is right to an individual and to the society both.

References :-

Aggarwal. J. C (2008) : psycholozy of Learning and development. Shipra. Publication.
Chauhan. S. S. (1998) : Advance Educational Psycholozy. Vikas Publication House.
Sharma. R. N. (2006) : Child Psycholozy and development. Shubhi Publication.

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

TEACHER'S SIGNATURE

GULAB BAI YADAV SMRITI SHIKSHA MAHAVIDYALAYA BORAWAN

SESSION - 2021-22

SUBJECT - LEARNING AND TEACHING B.Ed II Year

ASSIGNMENT TOPIC -

Draw Mind Map on the Diffrences Between classical conditining and operent conditioning

Guided By

SURMAL NARVE

Assistant professor

Submitted By

BABLU WASKLE

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

# अधिगम का शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धान्त

इस सिद्धान्त के प्रवर्तक पॉवलाव है अनुबंधन मे भी वस्तु अथवा परिस्थिति को उद्दीपन के रूप मे काम मे लिया जाता है। इस सिद्धान्त को अनुकूलित - अनुक्रिया का सिद्धान्त भी कहा जाता है। प्रतिस्थापन सिद्धान्त तथा अनुबंधन सिद्धान्त आदि विभिन्न नामो से जाना जाता है। वास्तव मे अनुबन्धन का सिद्धान्त शरीर विज्ञान का सिद्धान्त है तथा इस अनुबन्धन क्रिया मे उद्दीपन और प्रतिक्रिया मे सम्बन्ध द्वारा सीखने पर बल दिया जाता है। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन 1904 मे रूसी शरीर शास्त्री आई. पी. पावलॉप ने किया था।
इस सिद्धान्त की व्याख्या करते हुए विद्वानो ने लिखा है कि अनुकूलिता अनुक्रिया का अर्थ अस्वाभाविक उत्तेजना के प्रति स्वाभाविक क्रिया करने से है।

उदाहरण - किसी काले रंग की वस्तु को देखकर बालक का डर जाना अथवा गोल गप्पे की दुकान देखकर लड़की के मुँह मे पानी भर आना। धीरे - धीरे यह स्वाभाविक क्रिया बन जाती है।

एक और उदाहरण लीजिए - मान लीजिए कोई जलेबी की बात से से चिढ़ता है तो चिढ़ने वाले व्यक्ति के जीवन मे कोई ऐसी घटना घटित हो जाती है कि जिसकी याद आते ही उसे दुःख का अनुभव होता है। उस शब्द के स्मरण मात्र से वह दुःख पुनः जाग उठता है और व्यक्ति चिढ़ने वाले है। यह सब अचानक ही नही होता है बल्कि इस तरह की भावनाये धीरे - धीरे मन मे घर करती है। अतः इस प्रक्रिया मे पहले जीवन मे कोई अप्रिय घटना घटित होती है।

पावलॉव का प्रयोग – पॉवलाव ने अपने पालतू कुत्ते पर प्रयोग किया। उसने एक ध्वनि रहित कक्ष तैयार कराया तथा कुत्ते को भूखा रखकर प्रयोग करने वाली मेज के साथ बाँध दिया। कक्ष मे एक खिड़की थी जिसमे से सब कुछ देखा जा सकता था।

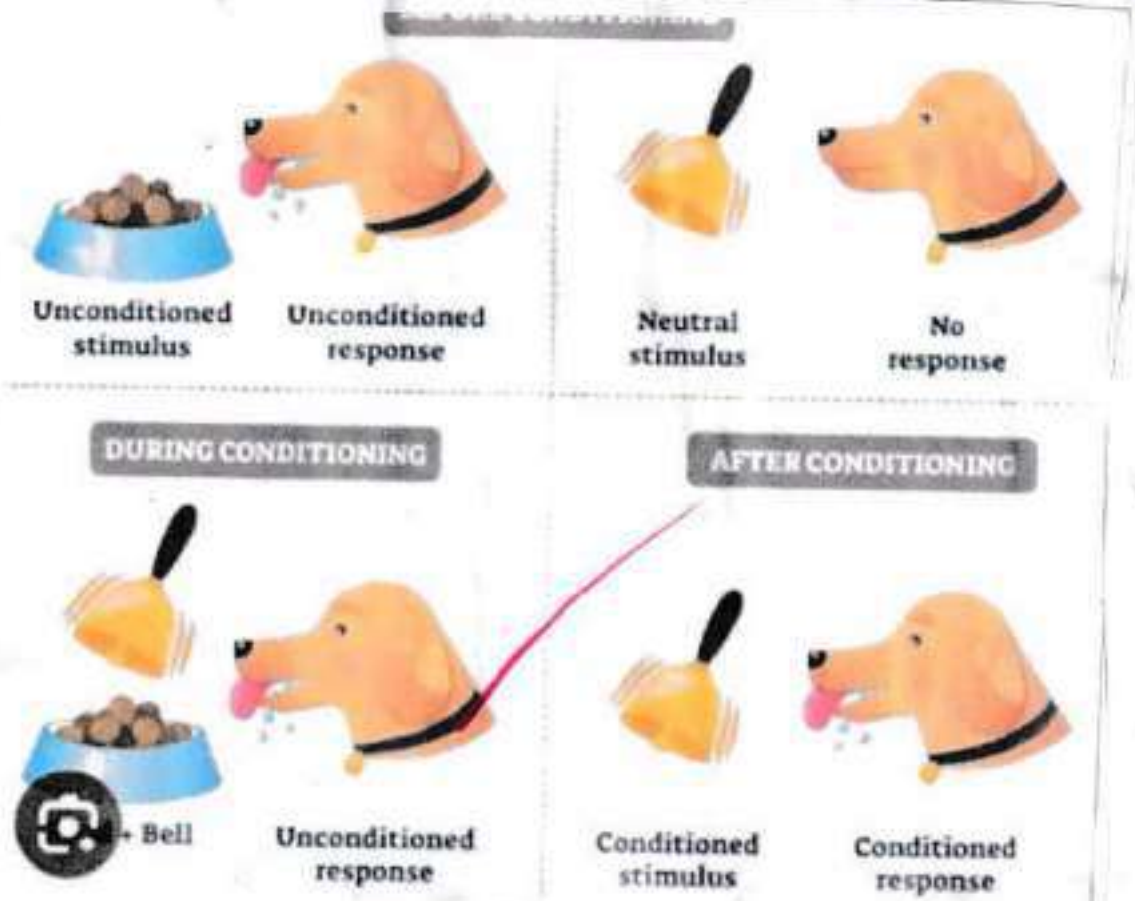


Good

पावलॉव ने कुत्ते की लार नली को काटकर इस प्रकार नियोजित भी किया ताकि कुत्ते के मुँह से टपकने वाली लार स्वतः ही काँच की ट्यूब मे एकत्रित हो जाये। प्रयोग का आरम्भ इस प्रकार किया जाता था। पॉवलाव ने कुत्ते के सामने गोस्त का टुकड़ा रखा। स्वाभाविक है गन्ध और स्वाद के कारण गोस्त को देखते ही कुत्ते के मुँह से लार टपकने लगी और वह काँच की ट्यूब मे एकत्रित होती गयी। एकत्रित हुई लार की मात्रा को मांप लिया गया। प्रयोग के दूसरे चरण मे पॉवलाव ने भोजन रखने के साथ-साथ घण्टी भी बजायी और कुत्ते के व्यवहार

का निरीक्षण करने पर पाया कि इस बार कुत्ते के मुँह से बराबर लार टपकनी शुरू हो गई। इस प्रयोग को उसने कई बार दोहराया अर्थात् जब-जब कुत्ते को खाना दिया गया घण्टी भी बजाई गई। प्रयोग के अन्तिम चरण मे उसने केवल घण्टी बजाई खाना नहीं दिया गया और प्रतिक्रिया को देखा उसने देखा कि कुत्ता अब भी पहले की तरह लार टपका रहा है। इससे उसने यह निष्कर्ष निकाला कि कुत्ता घण्टी की आवाज से प्रतिबद्ध हो गया है। इस प्रयोग मे भोजन प्राकृतिक या स्वाभाविक उद्दीपन है घण्टी कृत्रिम या अस्वाभाविक उद्दीपन तथा लार का टपकना अनुक्रिया है। प्रयोग की प्रमुख मान्यता यह भी है कि यहाँ दो उत्तेजनाये साथ-साथ दी जाती है। घण्टी बजना तथा भोजन का दिया जाना साथ-साथ चलता है। अन्त मे भोजन नही दिया जाता केवल घण्टी ही बजायी जाती है। परिणामत: अनुक्रिया वही हुई जो भोजन दिये जाने के समय होती थी। गिलफर्ड ने इस तथ्य की व्याख्या करते हुए कहा है कि जब दो उद्दीपक साथ-साथ बार-बार प्रस्तुत किये जाते है पहले नया तथा बाद मे मौलिक तो पहला भी कालान्तर मे प्रभावशाली हो जाता है।

इस प्रयोग का परिणाम यह रहा कि कुत्ते ने यह सीखा कि जब-जब घण्टी बजेगी उसे खाना मिलेगा। यह बात सीखने पर उसके मुँह से लार टपकनी शुरू होती है। इस प्रकार के सीखने को ही अनुबन्धन द्वारा सीखना कहते है।

* सिद्धान्त से सम्बन्धित नियम =

i) समय सिद्धान्त ⇒ इस सिद्धान्त के अनुसार सीखने मे

उत्तेजकों के मध्य समय का अन्तराल एक महत्वपूर्ण कारक है। दोनों उद्दीपनों के मध्य समय जितना अधिक होगा उद्दीपनों का प्रभाव उतना ही कम होगा।

ii) तीव्रता का सिद्धान्त ⇒ इस सिद्धान्त के अनुसार यदि हम चाहते है कि कृत्रिम उद्दीपन अपना स्थायी प्रभाव बनाये रखे तो इसके लिये उसका प्राकृतिक उद्दीपन की तुलना मे अधिक सशक्त होना एक अनिवार्य शर्त है अन्यथा प्राकृतिक उद्दीपक के सशक्त होने पर सीखने वाला कृत्रिम उद्दीपक अर्थात् नये उद्दीपक पर कोई ध्यान देना।

iii) एकरूपता का सिद्धान्त ⇒ एकरूपता के इस सिद्धान्त के अन्तर्गत अनुबन्धन की प्रक्रिया उसी स्थिति मे सुदृढ होती है जब कि ही प्रयोग प्रक्रिया को बार-बार बहुत दिनों तक ठीक उसी प्रकार दोहराया जाये जैसा कि प्रयोग को उसके प्रारंभिक चरण मे क्रियान्वित किया गया था।

iv) पुनरावृत्ति का सिद्धान्त ⇒ इस सिद्धान्त की यह मान्यता है कि किसी क्रिया के बार-बार करने पर वह स्वभाव मे आ जाती है और हमारे व्यक्तित्व का एक स्थायी अंग बन जाती है। अतः सीखने के लिए यह आवश्यक है कि दोनों उद्दीपक साथ-साथ बहुत बार प्रस्तुत किये जाये।

v) व्यवधान का सिद्धान्त ⇒ इस नियम के अनुसार अनुबन्धन की स्थापना के लिए यह आवश्यक है कि उस कक्ष का वातावरण जहां प्रयोग किया जा रहा है शांत व नियंत्रित होना चाहिए।

# शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धान्त के अंग

**विलोपन ⇒** अनुबंधन के बाद जब अनुबंधित उद्दीपक के साथ - साथ हम कई बार अगर स्वाभाविक उद्दीपक को नही प्रस्तुत कर पाते है। तो अनुबंधित अनुक्रिया का धीरे - धीरे विलोपन हो जाता है।

**स्वत: एकत्रीकरण** — विलोपन के बाद अगर हम कुछ समय बाद अनुबंधित उद्दीपक को पुन: प्रस्तुत करते है तो कभी - कभी कुत्ता अनुबंधित अनुक्रिया करना पुन: प्रारंभ कर देता है।

**उद्दीपक विभेदन** - अनुबंधन के प्रयासो की संख्या बढ़ाने पर प्राणी मूल अनुबंधित तथा सामान्य उद्दीपको मे धीरे - धीरे विभेद करने लगता है।

**क्रमिक क्रम** - अनुबंधन के लिए अनुबंधित उद्दीपन तथा स्वाभाविक उद्दीपक के बीच समय अंतराल बढ़ाने पर अनुबंधन कमजोर हो जाता है।

**पुर्नबलन ⇒** अनुबंधन को पुर्नबलन करने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि उद्दीपक के साथ - साथ स्वाभाविक उद्दीपक भी बीच - बीच मे दिया जाता रहे।

# शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धान्त का उदा०

स्वाभाविक उद्दीपक (UCS) भोजन → स्वाभाविक अनुक्रिया (UCR) लार

अस्वभाविक उद्दी० + स्वाभाविक उद्दीपक → स्वाभाविक अनुक्रिया (UCR) लार

अनुबंधित उद्दीपक (CS) घंटी → स्वाभाविक / अनुकूलित अनुक्रिया (CR) लार

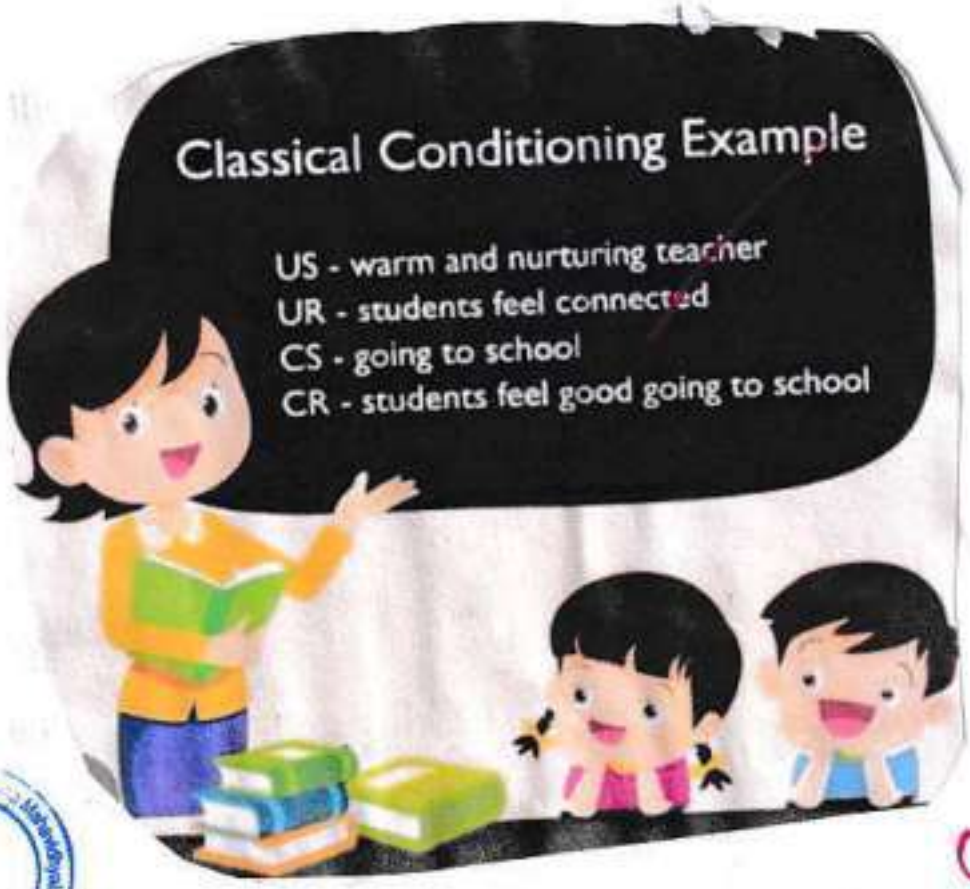


Good

# क्रियाप्रसूत अनुबंधन सिद्धान्त

उत्तेजक अनुक्रिया सिद्धान्तो मे बी. एफ. स्किनर का सिद्धान्त बहुत महत्वपूर्ण है। स्किनर अमेरिकन मनोवैज्ञानिक थे। उनके इस सिद्धान्त का प्रतिपादन 1938 मे हुआ। स्किनर जब हार्वर्ड विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर थे। उनके व्यवहार का व्यवस्थित एवं वस्तुनिष्ठ अध्ययन करने के लिए कुछ यंत्र विकसित किये। इसलिए उनके इस सिद्धान्त को विभिन्न नामो से जाना जाता है जैसे क्रिया प्रसूत अनुबन्धन सिद्धान्त, कार्यात्मक अनुबन्धन सिद्धान्त, नैमित्तिक अनुबन्धन सिद्धान्त, सक्रिय अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धान्त आदि। स्किनर एक व्यवहारवादी थे इसलिए उन्होने चूहे तथा कबूतरो की सहज क्रियाओ पर अनेक प्रयोग किये। स्किनर का यह सिद्धान्त पावलॉव के शास्त्रीय व ऋणात्मक अनुबन्धन सिद्धान्त से कुछ भिन्न है। पॉवलॉव के सिद्धान्त मे कुत्ता मेज से बँधा होता था

**SKINNER BOX**

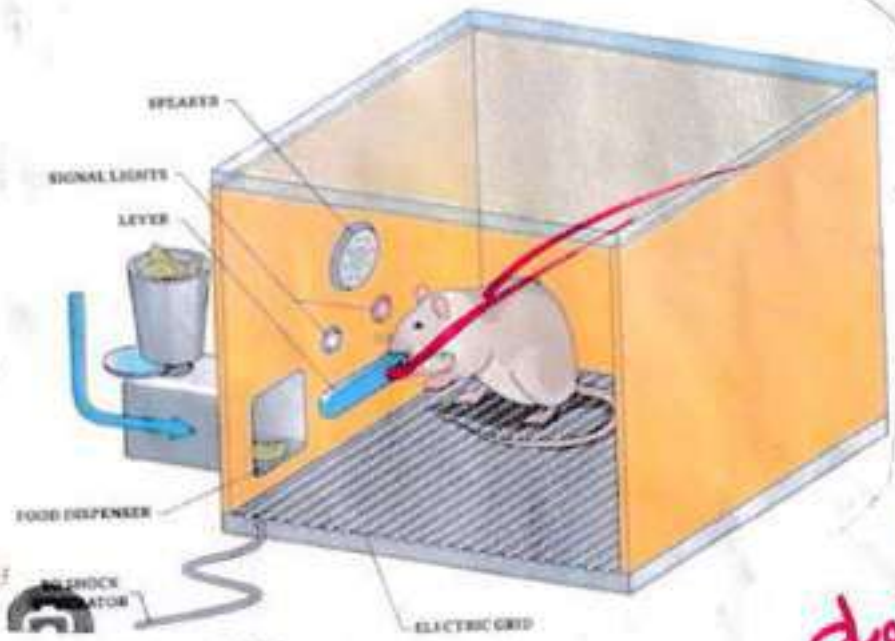


और अक्रिय था। कुत्ता कोई क्रिया नही करता था लेकिन स्किनर के सिद्धान्त मे प्रयोज्य क्रिया करते है व सक्रिय रहते है और

और इसलिए इस सिद्धान्त को क्रियाप्रसूत अनुबन्धन सिद्धान्त कहा गया है।

## क्रिया प्रसूत अनुबंधन का अर्थ

क्रियाप्रसूत अनुबंधन का अर्थ समझने के लिए अपने स्कूली जीवन के अतीत मे झांकिये जब आप स्कूल जाने के नाम से ही थर - थर कांपने लगते थे स्कूल मे बिल्कुल मन नही लगता था मम्मी, पापा, भाई, बहनो को याद करके रोना आता था अध्यापक के पुचकारने या कुछ खाना देने पर चुप हो जाते थे। फिर रोने लगते थे चुप हो जाते थे और फिर यही क्रम तब तक चलता रहता था जब तक स्कूल की छुट्टी ना हो जाये और आप अपने घर न पहुँच जाये। फिर दूसरा दिन आता आप स्कूल जाने से फिर मना देते और रूठ कर बैठ जाते। मम्मी के खूब प्यार करने पर या पैसे या टॉफी देने पर ही स्कूल का रूख करते। जिस दिन यह सब नही मिलता हड़ताल पर बैठ जाते। धीरे - धीरे आप बड़े हुए और पढ़ाई व दोस्तो मे मन लगने लगा। अब आप स्कूल स्वंय ही बिना किसी लालच के जाने लगे। स्किनर के अनुसार स्कूल आप दोनो ही स्थितियो मे गये लेकिन पहली स्थिति मे लालच आपको स्कूल ले गया जबकि दूसरी स्थिति मे पढ़ने मे रूचि। पहली स्थिति शास्त्रीय अनुकूलन तथा दूसरी स्थिति क्रिया -प्रसूत अनुकूलन।

इसलिए स्किनर कहते है कि पुर्नबलन करने वाला उत्तेजक अथवा कृत्रिम उत्तेजक अनुक्रिया के साथ तुरंत या बाद नही देना चाहिए बल्कि अपेक्षित अनुक्रिया करने के बाद दिया जाना चाहिए।

वे पुन: कहते है कि आप पहले प्रयोज्य को अनुक्रिया करने दे और बाद मे उसकी अनुक्रिया से संतुष्ट है तो उसका पुर्नबलन करके आगे बढ़ाये क्योंकि पुरस्कार पुर्नबलन के रूप मे अनुक्रिया को दृढ़ करता है और पुन: उसी क्रिया को करने के लिए प्रेरित करता है। अंत मे सीखने वाला वांछित व्यवहार की जल्दी - जल्दी पुनरावृत्ति करके वैसा ही व्यवहार करने लगता है जैसा दूसरा उससे चाहता है। इस प्रकार अपेक्षित अनुक्रिया तथा पुर्नबलन इस सिद्धान्त के दो मुख्य केन्द्र बिन्दु है और यही कारण है कि इस सिद्धान्त को उद्दीपक अनुक्रिया के स्थान पर अनुक्रिया उद्दीपक के रूप मे जाना जाता है।

सीखना – The unique feature of operant conditioning is That the Reinforcing stimuls occurs not simultaneously with or preceding the response but following the response In operant conditining an orgnism must first make the desired response In oprant conditioning and Then a 'reward' is provided. The reward reinforces the respons - make it more likely to reccur.

इस प्रकार सीखने का सार उत्तेजक स्थानांतरण नही है वरन् प्रतिक्रिया मे सुधार है –

स्किनर ने अपने सिद्धान्त की व्याख्या दो प्रकार के व्यवहारो की व्याख्या से की है –

i) प्रसूत व्यवहार

ii) अनुक्रिया व्यवहार

प्रसून व्यवहार – (An operant is a set of acte which Constitutes an organism's doing some Thing – raising is head pushing a lever etc. In the Proces of oprant Conditioning operant responses are modified or changed.)

वाटसन का विश्वास था कि बिना उत्तेजना के (उद्दीपक) कोई अनुक्रिया नही होती। स्किनर इस सिद्धान्त से सहमत न थे। उनके अनुसार जो अनुक्रियाएं किसी उद्दीपक के कारण होती है उन्हे उन्ही अनुक्रिया व्यवहार कहा जाता है। इस प्रकार के व्यवहार के उत्तर उदाहरण के रूप मे सभी प्रकार के सहज व्यवहार आ जाते है जैसे- पिन चुभने पर हाथ हटा लेना, तीव्र प्रकाश मे पलको का झपकाना तथा दिखाई खाना दिखाई देने पर लार टपकाना आदि। इसके विपरित जो अनुक्रियाएं स्वेच्छा से होती है अर्थात् बिना किसी उद्दीपन के उसे प्रसून व्यवहार कहा जाता है जैसे - बच्चे द्वारा एक खिलौने को छोड़कर दूसरा ले लेना किसी व्यक्ति द्वारा अपने हाथ या पांव को यूँ ही इधर-उधर हिलाना, इधर-उधार चहलकदमी करना तथा कुछ पढ़ना लिखना आदि।

सक्रिय व्यवहार स्वेच्छा से होता है तथा किसी उत्तेजक के नियन्त्रण मे नही होता है।

(The Responses which Need not be correlated with any Known Stimuli are called emited responses and these are designated as operants)

अनुक्रिया व्यवहार – (Responses which are elicited by Known stimuli are classified as respondents or Elicitied Behaviour.)

जैसे रोशनी के आने पर आँखो की पलक झपक जाना तथा आलपिन चुभाने पर शरीर के अंगो का मुड़ जाना प्रतिक्रियात्मक व्यवहार के उदाहरण है।

सक्रिय अनुकूलन (oprant conditoining) मे सक्रियता से पुर्नबलन मिलता है तथा लुप्तता (extinction) से कमजोर होता है।

(In operant conditoining an oprant is strengthened Through its reinforcement. means that the probability of The repetition of certain responses is increased.)

पुर्नबलन क्या है? पुर्नबलन का तात्पर्य है कि किसी अनुक्रिया के बार-बार दोहराने की सम्भावना का बढ़ना।

(Reinforcement is the consequence of an occurance which increases the probability of that response to occur in future.)

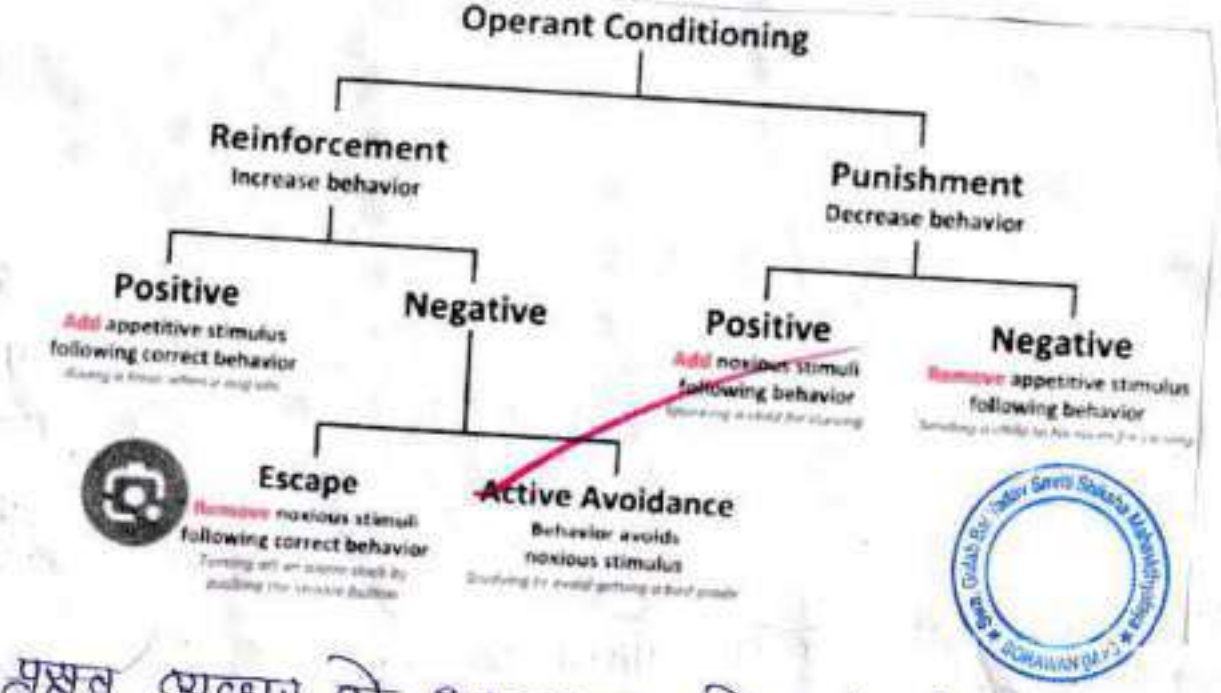


क्रिया प्रसूत व्यवहार को बल प्रदान करके वांछनीय व्यवहार प्रदान करने मे पुर्नबलन द्वारा भरपूर सहायता मिलती है। व्यवहार अथवा अनुक्रिया के घटित होने पर उसका पुर्नबलन करने का तात्पर्य

कुछ इस प्रकार के आयोजन से है जिसके द्वारा उस प्रकार की अनुक्रिया अथवा व्यवहार के पुनः घटित होने की सम्भावना को बढ़ा दिया जाये।

i) धनात्मक पुर्नबलन – यह वे उत्तेजक है जो परिस्थिति से जुड़ने पर सक्रिय अनुक्रिया की सम्भावना को बढ़ा देते है जैसे - भोजन, पानी, लैंगिक सम्पर्क, धन - दौलत मान - सम्मान, प्रशंसा एवं सामाजिक मान्यता आदि की प्राप्ति।

ii) ऋणात्मक पुर्नबलन – यह वह उत्तेजक है जिसे परिस्थिति से हटा लेने पर सक्रिय अनुक्रिया की सम्भावना को बल मिलता है जैसे - बिजली के आघात, डरावनी आवाज, अपमान, डाँट फटकार, तीव्र स्वर, चमकीली तेज रोशनी तेज गर्मी तथा ECS आदि से बचना।

## स्किनर द्वारा किये गये प्रयोग –

1) स्किनर ने सर्वप्रथम अपना कार्य चूहे पर किया और बाद मे कबूतरो पर। इसके लिये उसने एक बॉक्स बनवाया जिसे स्किनर बॉक्स के नाम से जाना जाता है। तथा इस बॉक्स को थॉर्नडाइक की उलझन पेटी का ही एक परिशोधित रूप माना जाता है।

स्किनर द्वारा बनाया गया बॉक्स अंधकार युक्त एवं शब्दविहीन है। इस बॉक्स मे भूखे चूहे को ग्रिलयुक्त अंधकार संकुचे रास्ते से गुजरकर लक्ष्य तक पहुँचना होता था। प्रयोग आरम्भ करने से पहले चूहे को निश्चित दिनो तक भूखा रखा गया

तथा उसे भोजन प्राप्त करने के लिये सक्रिय रहने का उपक्रम भी कर लिया गया था। बॉक्स मे एक लीवर भी था। चूहा उपयुक्त मार्ग पर अग्रसर होता लीवर पर उसका पैर पड़ता है और खट की आवाज होने के साथ ही उसे प्याले मे कुछ खाना प्राप्त हो जाता। चूहा इधर-उधर आश्चर्य से दौड़ता है। प्रथम बार उसे खाना दिखाई नही दिया चूहा भोजन को देखता है और उसे खा लेता है। चूहा इन्ही गतिविधियो को जारी रखता है। वह लीवर को पुन: दबाता है तथा इस बार भी खट की आवाज के साथ भोजन उसकी प्याली मे गिरता है। आगे के प्रयासो मे चूहा लीवर को और जल्दी-जल्दी दबाता है तथा भोजन भी शीघ्रता से प्राप्त कर लेता है। यहां लीवर को दबाने से होने वाली आवाज तथा प्राप्त भोजन पुर्नबलन का कार्य करता था। इन क्रियाओ का अर्थ यह है कि चूहे ने भोजन प्राप्ति के लिए लीवर का दबाना सीख लिया तथा चूहे द्वारा सक्रिय रहकर जैसे-जैसे पुर्नबलन मिलता गया वैसे-वैसे उसकी सही अनुक्रिया करने तथा लक्ष्य तक पहुंचने की प्रक्रिया मे तीव्रता आती चली गई। उसके बाद स्किनर ने प्रक्रिया मे परिवर्तन किया तथा चूहे के लीवर दबाने पर भोजन केवल तभी मिलता था जब साथ मे सुरीली ध्वनि भी होती थी। धीरे धीरे चूहे ने सामान्यीकरण कर लिया और केवल तभी लीवर दबाने लगा जब सुरीली ध्वनि होती थी।

प्रयोग 2 – यह दूसरा प्रयोग स्किनर ने कबूतरो पर किया। कबूतरो पर प्रयोग करने के लिए उन्होने एक अन्य संयन्त्र जिसे कबूतर पेटिका कहा जाता है का उपयोग किया। कबूतरो के साथ किये जाने वाले इस प्रयोग मे स्किनर ने यह लक्ष्य सामने रखा कि कबूतर दाहिनी ओर एक पुरा चक्कर लगाकर एक सुनिश्चित स्थान पर चोंच मारना सीख जाये।

कबूतर पेटिका मे बन्द भूखे कबूतर ने जैसे ही दाहिनी ओर घूमकर सुनिश्चित स्थान पर चोंच मारी उसे अनाज का एक दाना प्राप्त हुआ इस दाने द्वारा कबूतर को अपने सही व्यवहार की पुनरावृत्ति के लिये पुर्नबलन प्राप्त हुआ और उसने पुन: दाहिनी ओर घूमकर चोंच मारने की प्रक्रिया की। परिणामस्वरूप उसे फिर अनाज का एक दाना प्राप्त हुआ। इस प्रकार धीरे-धीरे कबूतर ने दाहिनी ओर सिर घुमाकर एक घूरा चक्कर काटकर चोंच मारने की क्रिया द्वारा अनाज प्राप्त करने का ढंग सीख लिया।

## शास्त्रीय अनुकूलन सिद्धान्त और क्रियाप्रसूत सिद्धान्त मे अन्तर

* शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धान्त एक प्रकार की सीख है जो दो उत्तेजनाओ के बीच जुड़ाव को सामान्य करती है यानी एक दूसरे की घटना को दर्शाता है। इसके विपरीत क्रियाप्रसूत सिद्धान्त मे जीवित जीव एक विशेष तरीके से व्यवहार करना सीखते है इसके परिणामो के कारण जो उनके पिछले व्यवहार का पालन करते है।

# Classical Conditioning

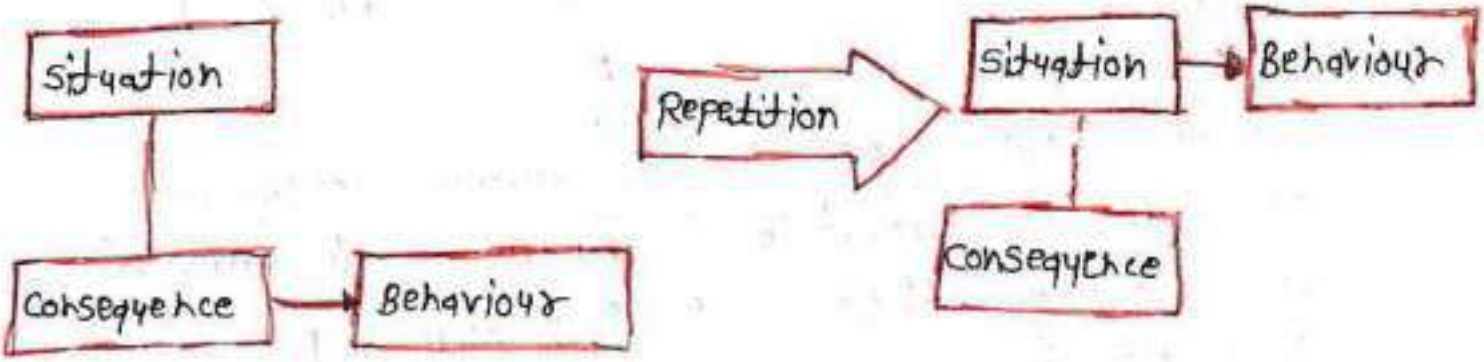


# Operant conditioning

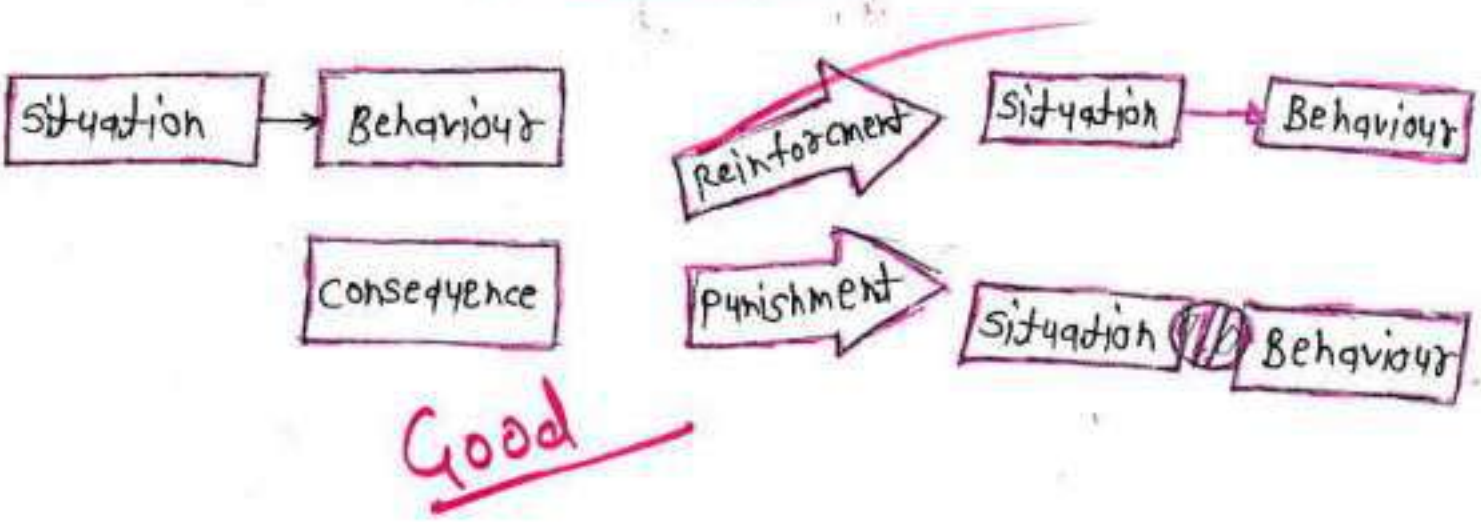


| शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धान्त | क्रियाप्रसूत अनुबंधन सिद्धान्त |
|---|---|
| * शास्त्रीय अनुबंधन मे सीखना अनैच्छिक व्यवहार को संदर्भित करता है जो एक प्रतिक्रिया से पहले होता है। | * क्रियाप्रसूत अनुबंधन मे उन परिवर्तनो को संदर्भित करता है जो प्रतिक्रिया के बाद होते है। |
| * यह एक तटस्थ संकेत रखने से शामिल है। | * इसमे व्यवहार के बाद पुनर्बलीकरण या दंड लागू करना शामिल है। |

| | |
|---|---|
| * शास्त्रीय अनुकूलन अनैच्छिक स्वचालित व्यवहार पर ध्यान है। | * क्रियाप्रसूत मे स्वैच्छिक व्यवहार को मजबूत या कमजोर करने पर केन्द्रित है। |
| * प्रोत्साहन वातावरण अनुकूलित और बिना शर्त उत्तेजना को अच्छी तरह से परिभाषित किया गया है। | * वातावरण अनुकूलित उत्तेजना को परिभाषित नही किया गया है। |

References – Frances K. McSweeney, Eric S. Murphy 2014
W.W. Henton, I.H. Iversen 2012
F. Robert Brush 2014
बी. एफ. स्कीनर 2012, एस. के. मंगल 2019
मंगल S.K. मंगल 2019, अरूण कुमार सिंह 2009

V. good

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

# GULAB BAI YADAV SMRITI SHIKSHAMAHAVIDHYALAY,BORAWAN

**Session:** 2021-22

**B.Ed:** II Year

**Subject: Assignment**

# Drama And Art in Education

n. good

Swa. Gulab Bai Yadav Smriti Shiksha Mahavidhyalaya BORAWAN (M.P.)

D. Kurrawat

Submitted By
Dvyani kurawat

Prof. S.K. Tiwari
*Principal*
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

Submitted to
Dinesh Muzalda

# शिक्षा मे नाटक और कला

**प्रस्तावना :-**

नाटक कला और शिक्षा का मिश्रण तब से है जब प्लेटो ने अपनी अकादमी शुरू की थी उनका मानना था कि एक छात्र को केवल अवधारणा के बारे मे सूचना करना ही पर्याप्त नही है, एक अच्छे शिक्षक को एक छात्र में आलोचनात्मक सोच की क्षमता और मूल्य शिक्षा के महत्व को प्रेरित करना होगा।

नाटक और रंगमंच दोनो आत्म-अभिव्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण माध्यम है और नाटक को एक एक शिक्षण उपकरणो के रूप मे उपयोग करके, छात्र इस तरह से शामिल होते है चाहे वह बौद्धिक, शारीरिक सामाजिक या भावनात्मक रूप से हो शिक्षा में नाटक और कला के उपयोग से समग्र शिक्षा मिलती है, व्यक्ति विकास मे तेजी आती है, और छात्रो को महत्वपूर्ण जीवन कौशल समस्या-समाधान कौशल नेतृत्व सहयोग और सहयोग प्रदान करता है, इस ब्लाग के माध्यम से हम शिक्षा मे नाटक और कला के महत्व सीखने की प्रक्रिया मे उनके लाभ भूमिका और उद्देश्यो को देखेगे।

**नाटक :-**

नाटक को केवल कल्पना के एक रूप के रूप मे संदर्भित किया जाता है जिसे थिएटर, रेडियो या टीवी में प्रदर्शन और इसके किसी भी प्रदर्शन कला जैसे नाटक मास्क बैले, संगीत इत्यादि मे दर्शाया जाता है। नाटक शब्द वास्तव में ग्रीक शब्द ड्रामा से लिया गया है। इस प्रकार अभिनय या अभिनय नाटकीय रेडियो, टीवी या किसी काल्पनिक कहानी के लाइव प्रदर्शन के माध्यम से सामने आता है।

## शिक्षा मे नाटक एवं कला का महत्व :-

**Theater**

**Communication**

Learning the Languages of the arts to express ideas and emotions in words images in sounds and movement

**Creativity**

Acquiring the sequential skills and thinking processes to create a Personal Vision through the arts

**Music**

**Arts**

follow your Path

**Dance**

**Cultlization**

understanding the role of the arts in history and the multiple.

**Choice**

among Products of the arts to make

**Visual Arts**

प्रभावी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए दुनिया भर के कई संस्थानों में शिक्षा मे नाटक और कला को पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप मे शामिल किया गया है। चाहे वह कठपुतली के माध्यम से ही क्यो न हो छात्र पारस्परिक और समूह संचार और सार्वजनिक बोलने के कौशल सीखते हैं उनमे अन्वेषण की आदत को बढ़ावा देने में भी मदद करती है।



Sangulda

## शिक्षा मे नाटक और कला के महत्व के प्रमुख कारण इस प्रकार है -

1. आत्म - अभिव्यक्ति सिखाता है :-

बच्चे शिक्षा मे नाटक और कला के उपयोग के माध्यम से आत्म अभिव्यक्ति के महत्व के बारे मे सीखते और रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से उनकी धारणा और विश्वदृष्टि व्यापक होते है जो उन्हे जीवन मे देर से प्रतिकूल परिस्थितियो का सामना करने के कौशल से लैस करते है।

2. जीवन कौशल प्रशिक्षण :-

यह छात्रो को टीम वर्क करवाना सहयोग और सहयोग जैसे विभिन्न जीवन कौशल प्रदान करता है।

3. रचनात्मक आलोचना सीखे :-

बच्चो मे रचनात्मक आलोचना और फीडबैक लेना भी सीखते है जिससे उन्हे बेहतर इंसान बनाने मे मदद मिलती है।

4. व्यक्ति विकास मे योगदान :.

शिक्षा में नाटक और कला का उपयोग छात्रो में व्यक्ति विकास को भी तेज करता है।

5. नेतृत्व करना सीखे :-

शिक्षा मे नाटक और कला का उपयोग छात्रों को एक नेता की टोपी पहनना और नेतृत्व और टीम वर्क से संबंधित केन्द्रीय कौशल को आत्मसात करना भी सिखाता है।

Smt. Gulab Bai Yadav Smriti Shiksha Mahavidyalaya * BORAWAN (M.P.) *

Good

# शिक्षा मे नाटक एव कला के लाभ

## Benefits of Drama and Art in Education

> facilitate a Better Learning Environment
> Boosts Participation.
> Increases Participation imagination.
> Imparts soft Skills.
> Diverse Dicourse.
> Co-Working and co-learning

ऐसी विचारको की आवश्यकता आसन्न और बढ़ रही है शिक्षा क्षेत्र ने इसमें प्रभावी शिक्षण लागू करने से निश्चित निश्चित रूप से शिक्षा की गुणवत्ता मे वृद्धि होगी शिक्षा में नाटक और कला को शिक्षा के उपकरण के रूप में उपयोगी करने के मुख्य लाभो को निम्नलिखित बिंदुओ में किया जा सकता है।

अपने नेतृत्व कौशल का उपयोग करके वे समाज में सूक्ष्म स्तर पर सघर्षो को सुलझाने मे मदद करते है।

# ब्लॉक पेंटिंग

## ब्लाक प्रिन्टिंग

ब्लाक प्रिंटिंग - ब्लाक प्रिन्ट प्रिन्टेड सामग्री है जो ब्लॉक प्रिन्टिंग से तैयार किया जाता है। ब्लॉक प्रिन्टिंग एक प्राचीन तकनीक है, यूरोप और एशिया के इतिहास में ब्लॉक प्रिन्टिंग के अनेक सन्दर्भ मिलते है। कागज और कपडे पर ब्लॉक प्रिन्टिंग के नमूने 2000 वर्ष के पहले के मिलते है। समय-समय के साथ-साथ ब्लॉक प्रिन्टिंग की सामग्री और तकनीक मे परिवर्तन अवश्य होता रहता है। 19वी शताब्दी तक भारत मे इस तकनीकि का खूब प्रयोग हुआ। उसके बाद प्रिन्टिंग के कुछ आधुनिक तकनीकि का अविष्कार हुआ इन आधुनिक तकनीकि ने ब्लाक प्रिन्टिंग की जगह ले ली। चित्रकारो को चित्रकारी करने की अपेक्षा छापना अधिक सरल लगता था। इसलिए उन्होने ब्लॉक की खोज की क्योकि इसकी बाह्य रेखाएँ अधिकतर काली होती है। जिस स्थान पर रंग के घोल लगाना है, उस स्थान को छोडकर बाकी स्थान पर गर्म पिघला मोम लगा दिया जाता है' मोम का लेप ठंडा होने पर कपडे को रंग नही चढता जब रंग ठंडा होने पर कपडे को रंग के घोल मे डुबो देना चाहिए

छपाई उद्योग मे प्रयुक्त होने वाले उपकरणो को इसे मांत भी कहा जाता है। उपयोग पहनने के कपडे, झोला (बैग) कार्पेट परदा बनाने आदि।

V. good


Block
V. good

# *रंगोली*

रंगोली एक अल्पना भी है मोहन जोदड़ो और हड़प्पा में भी मांडी अल्पना के चिन्ह मिलते है। अल्पना वात्स्यान के कामसूत्र में वर्णित चौसठ कलाओ में से एक है। यह अपितु प्रचीन लोक कला है। रंगोली धार्मिक सांस्कृतिक आस्थाओ की प्रतीक रही है इसकी आध्यात्मिक प्रतिक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग माना गया। भारत की संस्कृति बहु आयामी है जिसमें भारत का महान इतिहास विलक्षण भूगोल और संस्कृति पिछली पाँच सहस्राब्दियो से अधिक समय से भारत इसके एक दूसरे से परस्पर संबंधो मे महान विविधताओ का एक अद्वितीय उदाहरण देती है। रंगोली इन धर्मो के अनुयायियो की विचारधाओ प्रक्षेप और सामाजिक के कारण इन मान्यताओ को व्यापक हिन्दू धर्म के मंदिर मठ, पूजा स्थल, त्योहार इन सभी धर्मो के लिये मान्य है।

रंगोली का इतिहास और उससे सालो से भारत मे त्यौहार पर रंगोली बनाने का रिवाज चला आ रहा है रंगोली एक संस्कृत का शब्द है, जिसका मतलब है रंगो के जरिये भावनाओ को अभिव्यक्त करना। भारत के कुछ क्षेत्रों मे अल्पना के नाम से भी जाना जाता है अल्पना भी एक लीपना अथवा लेपन करना क्योकि रंगोली बनाते समय रंगो के प्रयोग से दीवारो पर या जमीन पर लेपन ही तो किया जाता है। एक और प्रचलित कथा के अनुसार रंगोली सृजन के उन्माद मे आम पेड़ का रस निकालकर इसीयो का सौंदर्य अप्सराओ को मात देता है।

# रंगोली आर्ट

रंगोली के शुभ अवसर पर रंगोली बनाना बेहद शुभ माना जाता है इस दिवाली के लिए सबसे आसान और खूबसूरत रंगोली शुभ माना गया है।

# माण्डना आर्ट

माण्डना आर्ट.

यह एक डिजाइन या पैटर्न है जिसका इतिहास बौद्ध और हिन्दू धर्म के आध्यात्मिकता से जुड़ा माण्डना दरअसल कृष्णाण्ड रंगीन आर्ट कला का एक रूप है जहा रचनाकार आकृतियो के रूप मे माण्डना आर्ट रेत से खींची गई एक गोलाकार पेंटिंग ध्यान मे सहायता करती है।

# माण्डना आर्ट

माण्डना आर्ट का एक रूप है, जहा रचनाकार आमतौर पर एक गोलाकार रूप मे जटिल डिजाइन तैयार करता है, माण्डना आर्ट मे एक केन्द्र बिंदु होता है ~~होता है~~, जिससे से प्रतीकों आकृतियों और रूपों की एक सरणी ऐसा माना जाता है कि मंडल मे प्रवेश करके और उसके केन्द्र की ओर बढते हुए ब्रह्मांड को एक सुख से आनंद में बदलने की अहांडीय प्रक्रिया के माध्यम से निर्देशित किया जाता है, एक पारंपरिक बौद्ध मंडल रंगीन रेत से खींची गई एक गोलाकार पेंटिंग ध्यान मे सहायता करती है।

माण्डना आर्ट जिनमे कला आत्मज्ञान का सरल मार्ग होती है माण्डना कला सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का प्रतिनिधित्व करती है जिस प्रकार ब्रह्माण्ड स्वयं मे सर्वस्व समाहित किये रहता है उसी भांति मांडना रचनाएँ भी केन्द्र मे समा जाती है।

अतः माण्डना आर्ट आंतरिक दुनिया और बाहरी वास्तविकता के बीच संबंध को दर्शाती है।

## माण्डना आर्ट खुशियो का पिटारा होता है →

शोध बताते है कि माण्डना आर्ट बनाने से सचेतन और आत्मनिष्ठ भावना के मध्य सामंजस्य सही बैठता है। यह व्यक्ति के जीवन की खुशियां बढाने का सरल रास्ता है। इसलिए सही अर्थों में माण्डना आर्ट खुशियो का पिटारा है।

मांगलिक चिह्न चितेरी माण्डना को घर बार की रक्षा करने अपने घर मे देवी देवताओ का स्वागत करने तथा त्यौहारो के अवसर

# मेहंदी आर्ट

★ मेहंदी

का प्रचलन आज के इस नए युग मे ही नही बल्कि काफी समय पहले से ही हो रहा है। आज भी सभी लड़किया और औरते इसे बड़े चाव से लगाती है, यहा तक की लड़कियाँ और औरते इसे बड़े चावल मेहँदी हमारे यहा का बहुत पुराना रिवाज और प्राचीन कला है। इसके इतिहास के बारे मे बात करे तो भारत मे मेहंदी का प्रवेश भारत में हुआ इस अवधि के दौरान शाही और समृद्ध लोग इस कला का उपयोग अपनी हाथों को सजाने के लिए करते है इसका मूल मिस्र से हो सकता है, क्योंकि यह मिस्र के विभिन्न कला के रूप मे से एक था।

भारतीय मेहंदी मे सुन्दर रूप से विभिन्न चीजो को शामिल किया जाता है। इस डिजाइन में आपको मोर फूल पत्ते और अनोखे घुमावदार और घुंघराले पैटर्न देखने को मिलते है. दोनो हाथो के आगे पीछे तक एकल पगडंडियों की तरह डिजाइन बनाई जाती है।

इस शैली मे डिजाइन निकलते समय दो आकार के बीच ज्यादा जगह नही छोड़ी जाती है मेहंदी शैली मे दुल्हा मेहँदी मे हाथों को ढोलक दुल्हा - दुल्हन की आकृति घोड़ी मंडप कलश और शादी की रस्मो को दर्शाती हुई विभिन्न कलाकृतियों को सजाया जाता

## Diagnosis

The client has been Diagnosed To be suffering From a version To Boys an Anxiety Treatment.

## Rate of Breathing

Rate of Breathing is the counting of inhale and Exhale of a person in a Minute In This Process The client is Aware of Each And Every part of his Body and Mind and he is able control it on his own will. This Enables The client To Manage his stress And Keep him calm and composed in any Anxiety provoking situation.

## Candle Gazing

It Increases The concentration of the client and able To Focus on the Task At hand This Also Increases Assertiveness of The client.

## Behavioural contract

Both The Parants and The child have come To Agree-Ment and Listed out The Expectations From each other and abide by That. This Reduces The conflict And Creates Better Understanding.

# Assignment Gender School & Society

**ACTIVITY:**

***MY OPINION MATTERS EXPLORING STUDENT OPINIONS ABOUT SEXUAL HARASSMENT FACTS AND MYTHS***

**TIME:** 60 MINUTES
**SUBJECTS:** ALL SUBJECTS AND CLASSES DESCRIPTION:

This is a student-centred questionnaire exploring student opinions and knowledge about sexual harassment. Have students fill out the worksheet. After they have finished, divide into small groups for discussion of their answers. Bring class back together and go over the worksheet. Ask for opinions and concerns that students may have about the worksheet.

**OBJECTIVES:**

**Short Term--**

- Analyse personal attitudes toward issues of sexual harassment.
- Improve reasoning skill to support opinions.
- Educate students about the facts and myths of sexual harassment.

**Long Term--**

- Have students listen to and consider all points of view.
- Develop strategies to stop sexual harassment.

**MATERIALS:** **"Worksheet"**

**PROCEDURE:**

1. Hand out worksheet to students. Remind them to work quietly.
2. When they have finished, divide into small groups to discuss their responses to the questions.
3. Have students consider the following questions during their discussion.
   - During your discussion, did anyone in your group try to convince you to change your answer?
   - How did your answers differ from other students in your group?
   - Which questions did your group answer the same?
   - During your group discussion, did anything said by another student surprise you?
4. Once small groups have met, bring the class back together and read through the questionnaire statement by statement in order to stimulate a greater discussion. Allow students to come to their own conclusions by constantly questioning the reasons for their beliefs.
5. Use this opportunity for a writing assignment. Have students write what they learned about sexual harassment, the participants in their small groups and the class as a whole. Was anything said that made them change their way of thinking toward sexual harassment?

**EVALUATION:**

1. Evaluate students by moving around the classroom and observing their listening and speaking efforts in small groups.

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidyalaya
BORAWAN (M.P.)

2. Evaluate students by reading their written responses to the exercise. It can be assessed in terms of effort, content, and style.

## "WORKSHEET" Sexual Harassment

Directions: Read the following statements and circle the response that best supports your opinion.

**1. Girls sexually harass girls, and boys sexually harass boys.** /1. लड़कियां लड़कियों का यौन उत्पीड़न करती हैं और लड़के लड़कों का यौन उत्पीड़न करते हैं।

Strongly agree agree disagree strongly disagree

**2. Even though they dislike it, friends allow sexual harassment to happen to their friends.** /2 . भले ही वे इसे नापसंद करते होंदोस्त अपने दोस्तों के साथ यौन उत्पीड़ ,न होने देते हैं।

strongly agree agree disagree strongly disagree

**3. Teachers and educational staff ignore sexual harassment and allow it to go on in school.** / शिक्षक और शैक्षणिक कर्मचारी यौन उत्पीड़न की उपेक्षा करते हैं और इसे स्कूल में चलने देते हैं।

strongly agree agree disagree strongly disagree

**4. Girls who dress in sexy clothing are asking for attention and to be harassed.** / जो लड़कियां सेक्सी कपड़े पहनती हैं वे ध्यान आकर्षित करने और परेशान होने के लिए कह रही हैं।

strongly agree agree disagree strongly disagree

**5. Flirting is sexual harassment.** / . छेड़खानी यौन उत्पीड़न है।

strongly agree agree disagree strongly disagree

**6. Sexual harassment does not happen at home**. / यौन उत्पीड़न घर पर नहीं होता।

strongly agree agree disagree strongly disagree

**7. Sexual harassment can be prevented.** / यौन उत्पीड़न को रोका जा सकता है।

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

strongly agree agree disagree strongly disagree

**8. A student who files an official complaint against a harasser should expect to be taunted for being a tattle-tale.** / एक छात्र जो एक उत्पीड़क के खिलाफ एक आधिकारिक शिकायत दर्ज करता है उसे गपशप करने के लिए ताने मारने की उम्मीद करनी चाहिए ,

strongly agree agree disagree strongly disagree

Swa. Gulab Bai Yadav Smriti Shiksha Mahavidyalaya ★ BORAWAN (M.P.) ★

**PRINCIPAL**

Prof. S.K. Tiwari
*Principal*
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

# WORKSHEET Sexual Harassment

Directions: Read the following
statements and circle the response that best supports your opinion.

01. Strongly agree

02. Agree
03. Disagree
04. Strongly disagree

* Indicates required question

1. Email *

2. Name Of Student *

3. Programme *

*Mark only one oval.*

- B.Ed
- M.Ed
- Other:

4. Mobile No. *

Prof. S.K. Tiwari
*Principal*
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

5. **1. Girls sexually harass girls, and boys sexually harass boys.** लड़कियां लड़कियों का यौन उत्पीड़न करती हैं और लड़के लड़कों का यौन उत्पीड़न करते हैं। *

*Mark only one oval.*

- 01. Strongly agree
- 02. Agree
- 03. Disagree
- 04. Strongly disagree

6. **2. Even though they dislike it, friends allow sexual harassment to happen to their friends.** भले ही वे इसे नापसंद करते हों ,दोस्त अपने दोस्तों के साथ यौन उत्पीड़न होने देते हैं *

*Mark only one oval.*

- 01. Strongly agree
- 02. Agree
- 03. Disagree
- 04. Strongly disagree

7. **3. Teachers and educational staff ignore sexual harassment and allow it to go on in school.** शिक्षक और शैक्षणिक कर्मचारी यौन उत्पीड़न की उपेक्षा करते हैं और इसे स्कूल में चलने देते हैं। *

*Mark only one oval.*

- 01. Strongly agree
- 02. Agree
- 03. Disagree
- 04. Strongly disagree

Prof. S.K. Tiwari
**Principal**
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

8. **4. Girls who dress in sexy clothing are asking for attention and to be harassed.** जो लड़कियां सेक्सी कपड़े पहनती हैं वे ध्यान आकर्षित करने और परेशान होने के लिए कह रही हैं। *

*Mark only one oval.*

- 01. Strongly agree
- 02. Agree
- 03. Disagree
- 04. Strongly disagree

9. **5. Flirting is sexual harassment.** छेड़खानी यौन उत्पीड़न है। *

*Mark only one oval.*

- 01. Strongly agree
- 02. Agree
- 03. Disagree
- 04. Strongly disagree

10. **6. Sexual harassment does not happen at home.** यौन उत्पीडन घर पर नहीं होता। *

*Mark only one oval.*

- 01. Strongly agree
- 02. Agree
- 03. Disagree
- 04. Strongly disagree

Prof. S.K. Tiwari
*Principal*
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

11. **7. Sexual harassment can be prevented.** यौन उत्पीड़न को रोका जा सकता है। *

*Mark only one oval.*

- 01. Strongly agree
- 02. Agree
- 03. Disagree
- 04. Strongly disagree

12. **8. A student who files an official complaint against a harasser should expect to be taunted for being a tattle-tale.** एक छात्र जो एक उत्पीड़क के खिलाफ एक आधिकारिक शिकायत दर्ज करता है ,उसे गपशप करने के लिए ताने मारने की उम्मीद करनी चाहिए। *

*Mark only one oval.*

- 01. Strongly agree
- 02. Agree
- 03. Disagree
- 04. Strongly disagree



Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

# WORKSHEET Sexual Harassment

51 responses

Publish analytics

Prof. S.K. Tiwari
*Principal*
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

Name Of Student

51 responses

Ranu chouhan

Bablu vashkle

Sudhanshu kumrawat

SHRIKRISHNA KUMRAWAT

Roshni kewde

Aishali Dawar

Vaishnavi Jain

Mritunjay kumar

Arjent Dawar

Laxmi baghel

Pavan kewat

Chhogalal chohan

SUJIT KUSHWAH

KALYANI RATHORE

Ranu Darbar

ARPIT MANDLOI

Amrita Kushwah

Shrikrishna Gupta

Pallavi

Rashi Bhawsar

Shantilal kharte

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

Rajkumar

Anjali Yadav

Monika

Kirti kushwah

Nikita Kushwah

Santoshi thakur

Sumitra Parihar

Ranu DARBAR

Mohan yadav

Swati kumrawat

Sangeetakumravat

Teena khan

Mina nargave

Ajay yadav

Tanisha rathore

Dhruv kumar

Jyoti damodare(nihale)

Devyani kumrawat

Shailesh yadav

Deepika Gupta

Vaibhavee Bhawsar

Usha shuryavanshi

Deepika

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

Pramila badole

Sayyed anjum ali

Prachi Gurjar

Gayatree pawar

Roshani Jadhav

Basanti

Aayushi choubey

## Programme

Copy

51 responses

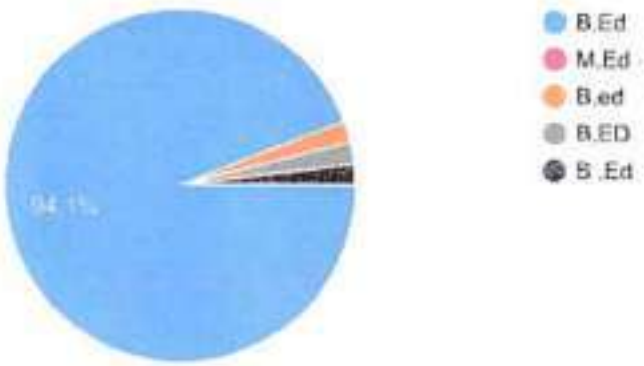


## Mobile No.

Copy

43 responses

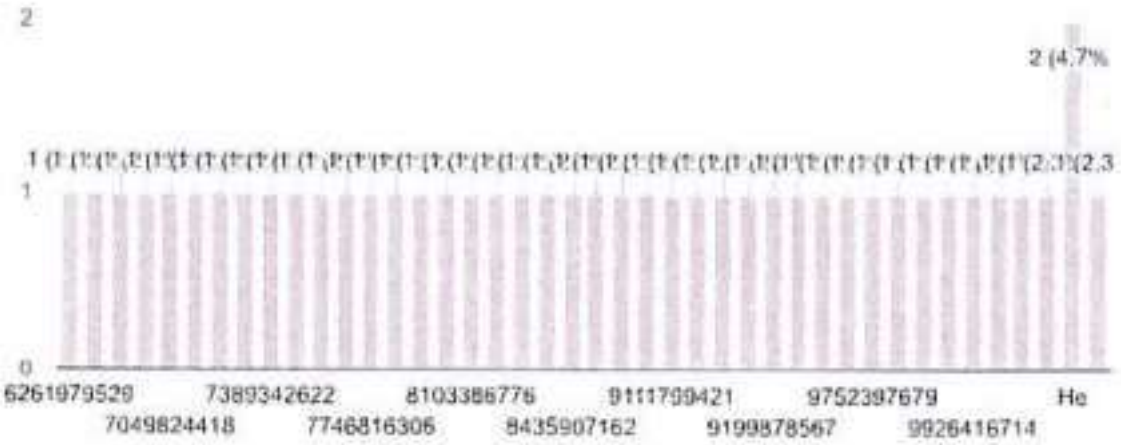


Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

Copy

**1. Girls sexually harass girls, and boys sexually harass boys.** लड़कियां लड़कियों का यौन उत्पीड़न करती हैं और लड़के लड़कों का यौन उत्पीड़न करते हैं।

51 responses

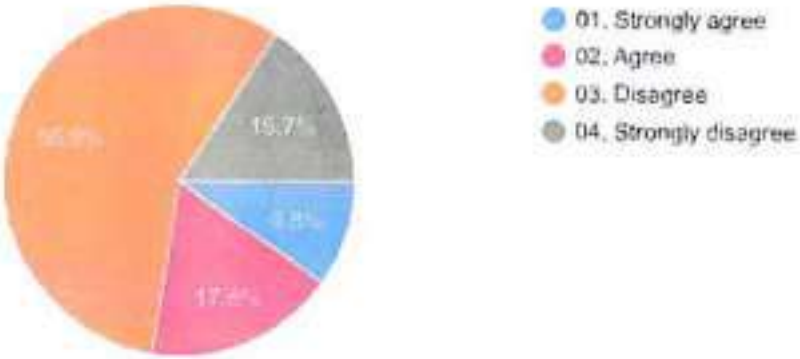


Copy

**2. Even though they dislike it, friends allow sexual harassment to happen to their friends.** भले ही वे इसे नापसंद करते हों ,दोस्त अपने दोस्तों के साथ यौन उत्पीड़न होने देते हैं

51 responses

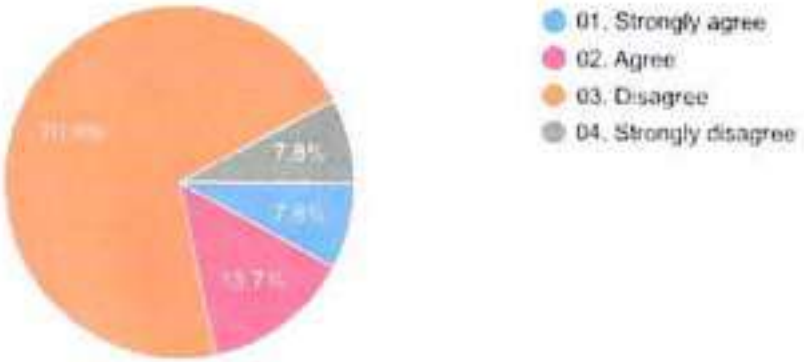


Prof. S.K. Tiwari
*Principal*
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

Copy

**3. Teachers and educational staff ignore sexual harassment and allow it to go on in school.** शिक्षक और शैक्षणिक कर्मचारी यौन उत्पीड़न की उपेक्षा करते हैं और इसे स्कूल में चलने देते हैं।

51 responses

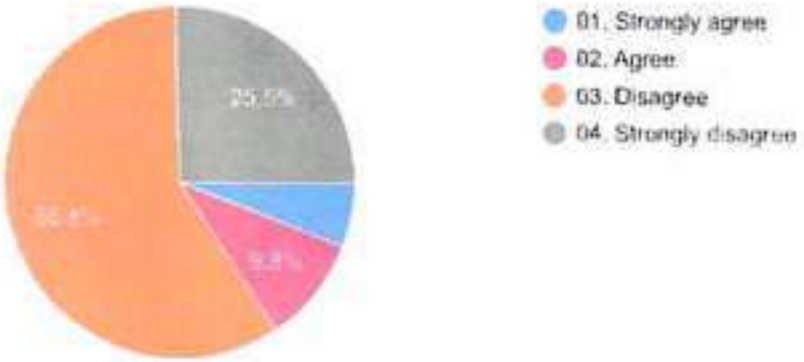


Copy

**4. Girls who dress in sexy clothing are asking for attention and to be harassed.** जो लड़कियां सेक्सी कपड़े पहनती हैं वे ध्यान आकर्षित करने और परेशान होने के लिए कह रही हैं।

51 responses

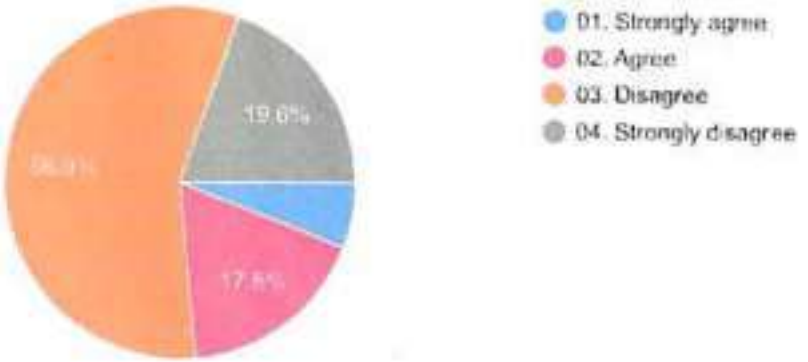


Copy

**5. Flirting is sexual harassment.** छेड़खानी यौन उत्पीड़न है।

51 responses


Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

Copy

**6. Sexual harassment does not happen at home.** यौन उत्पीड़न घर पर नहीं होता।

51 responses

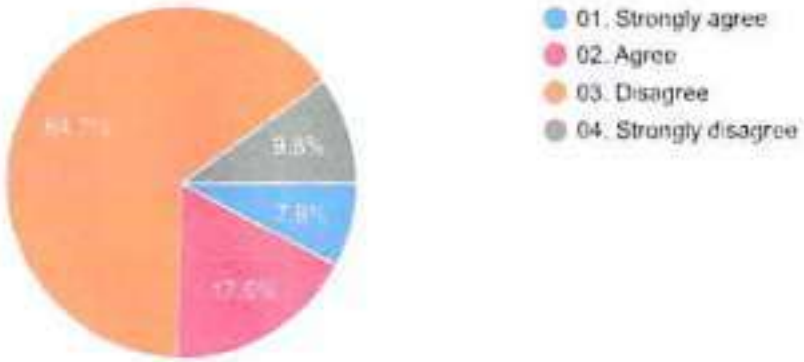


Copy

**7. Sexual harassment can be prevented.** यौन उत्पीड़न को रोका जा सकता है।

51 responses

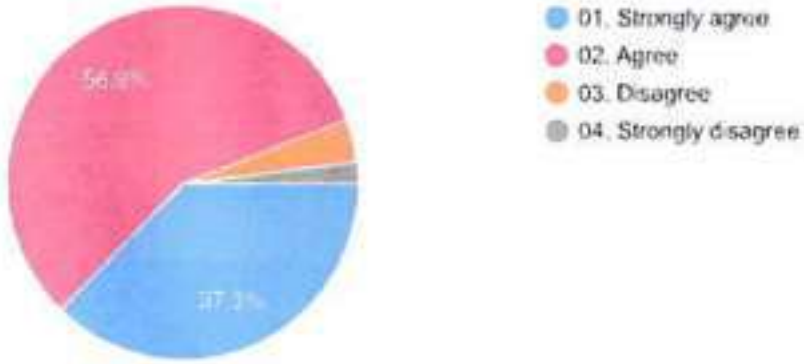


Copy

**8. A student who files an official complaint against a harasser should expect to be taunted for being a tattle-tale.** एक छात्र जो एक उत्पीड़क के खिलाफ एक आधिकारिक शिकायत दर्ज करता है ,उसे गपशप करने के लिए ताने मारने की उम्मीद करनी चाहिए।

51 responses

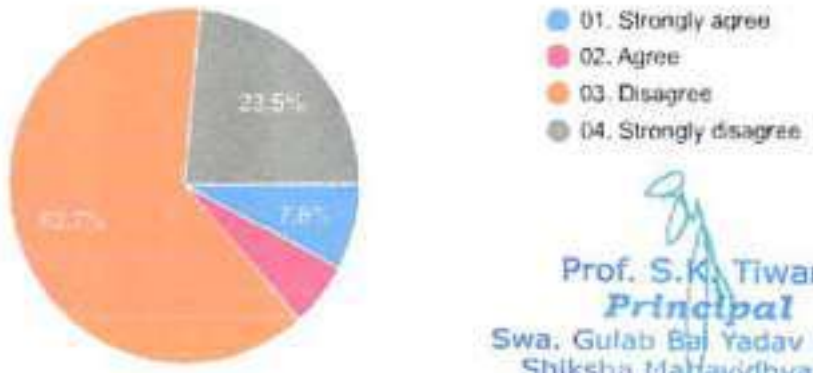


Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

GULAB BAI YADAV SMRITI SHIKSHA MAHAVIDYALAYA BORAWAN

SESSION - 2021-22

SUBJECT - CREATING AND INCLUSIVE SCHOOL B.Ed. IV SEM.

ASSIGNMENT TOPIC -

case study of children with special needs School in school situation

Swa. Gulab Bai Yadav Smriti Shiksha Mahavidyalaya ★ BORAWAN (M.P.) ★

Guided By

DR. DEORSHI SHUKLA

Submitted By

Bhavna Gangle

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

# Case Study

## Client Profile

Name - Priya Patel
Age - 11 year
Gender - Female
Merital Status - Unmarried
Religion - Hindu
occupation - Student
Domicile - Urban
Informant - Father
Socio Economic Status - Upper Class
Reliblity - Relible

## Chief complaints

* School phobia
* Excessive sweating
* obsessive Thoughts
* Anger
* Imotinal Instability

Good

## Complaints by Family

* Breaks Things and Adamant
* Refuses To Go To School
* The Schooling is not challenging To her and It is of no use
* change cloth Theree To Four Times Before Going To Bed
* Gets Annoyed soon for no Reason.

## History of Present illness

The above symptoms have been Reported by the client since Last 1 Month After Being Shifted To new School Due To Professional Tarnsfer of her Father. The new school has a system of seating Arrangment in which a Boy and Girl Alternatively. This creates Anxiety in her.

## History of Past Illness

Nil

## Medical History

Nil

## Personal History

He is The only child in her Family. Her parants show Excessive Love She Got Annoyed when her Mother Threatened Her That she would Adopt Another child Her Mother Reported similar problem when she was 11 years old Before Attaining puberty.

## Educational History

she started schooling at the Age of 5 she Excels in her studies.

## Sexual History

Nil

## Mental Status Examination

General Appearance –

* Dressed Neatly
* Proper Eye contect is Maintained
* Psychomotor Activity is Normal

Speech – Normal

good

# Training To Teachers

The Therapist contacted the school managment and arranged for a workshop and train them on how to handle the teenage students.

Reference Books - John Mcleod 2010, Richard S. Shaft 2011, John J. Murphy 2015, David J. Armor 1969, Richard winter Caral MunnGiddings 2001

V. good

Shukla

Swa. Gulab Bai Yadav Smriti Shiksha Mahavidhyalaya BORAWAN (M.P.)

Prof. S.K. Tiwari
**Principal**
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

# 5. Identifying and using the different sources for study

| Course | Subject | Assignment |
|---|---|---|
| B.Ed. | CC Education Technology & ICT | 1. Write the History and Generations of Computer.<br><br>2. Write the Input, Output and Storage devices of Computer system. |
| M.Ed. | Course 14: Contemporary and Future Perspectives of Education | What are the main feature of national education policy 2020? |
| M.Ed. | **Specialization Advance Level Course II:** Education Administration | 1. Describe Program evaluation and reivew technique (PERT). |

**PRINCIPAL**

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

# GULAB BAI YADAV SMRITI SHIKSHA MAHAVIDHYALAY,

# BORAWAN

## *Assignment*

# Educational Technology & ICT

**B.Ed: 2nd Year**

**Session: 2021-22**

Swa. Gulab Bai Yadav Smriti Shiksha Mahavidhyalaya ★ BORAWAN (M.P.) ★

**Submitted By**

**Roshani Kewde**

Prof. S.K. Tiwari
*Principal*
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

**Submitted to**

**Kundanlal Verma**

## Question-1

Q1- Describe the historical history of computer by referring to different generation of it.

Ans:- *** History and Development of Computers ***

### (1) Development of Computers →

Forerunners of the computer in one form or another have been with us for a long time. The abacus, hand-held counting device that is still in use throughout the orient, dates back to about 500 BC. The French scientist, Blaise Pascal developed a mechanical calculator in the middle of the 17th century that formed the basis for calculators manufactured well into the 20th century.

### (2) Forerunners of the Modern Computer →

→ Credit for the concept of the modern computer goes to the British mathematician Charles Babbage in 1830's designed a steam-powered 'analytical engine'.

→ In 1880's American inventor Herman Hollerith developed a tabulator to manipulate data on punch cards.

→ In 1848 George Boole, British Mathematician, developed a system of binary logic in which all questions could be answered as 'true' or 'false'.

→ Until the late 1330's calculators or computers were based on the decimal system, mechanical devices.


Generation Of Computers 1st To 5th
Second Generation
1959-1965
Third Generation
1965-1971
Fourth Generation
1971-1980
Fifth Generation 1980- Present

## (3.) Electronic Computers :-

The mechanical relays replaced by vacuum tubes. These were single - purpose computers designed to aid in the war effort.

The 1st general - purpose electronic computer was ENIAC (Electronic Numeric Integrator & Calculator) that was put into operation at the University of Pennsylvania in 1946. With the invention of transistors in 1948, transistors replaced vacuum tubes.

By 1953 there were only about 100 computers in the entire world. Few visionaries anticipated that one day machines that were hundreds of times smaller and thousands of times more powerful would occupy most homes and offices.

→ Thomas J. Watson, Sr, who built IBM into a company

## (4.) Personal Computers :-

The 1st integrated circuit for computers was developed in 1958.

→ In 1971 microprocessor contains all basic elements of a computer on a single chip.

→ The micromini computers of 1970 and most in the 1980's followed the same pattern as the early mainframes, that is they required extensive knowledge of command codes & function keys.

→ Apple computer's Macintosh revolutionized the personal computer shielded the user from the operating system called graphical User interface (GUI)

# Generation Of Computers 1st To 5th

First Generation 1946-1959

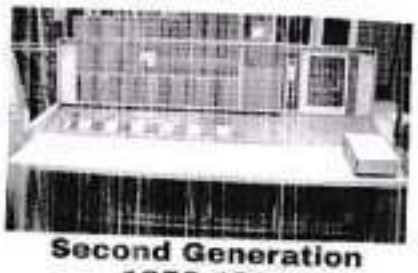

Second Generation
1959-1965

Third Generation
1965-1971

Fourth Generation
1971-1980

Fifth Generation 1980- Present

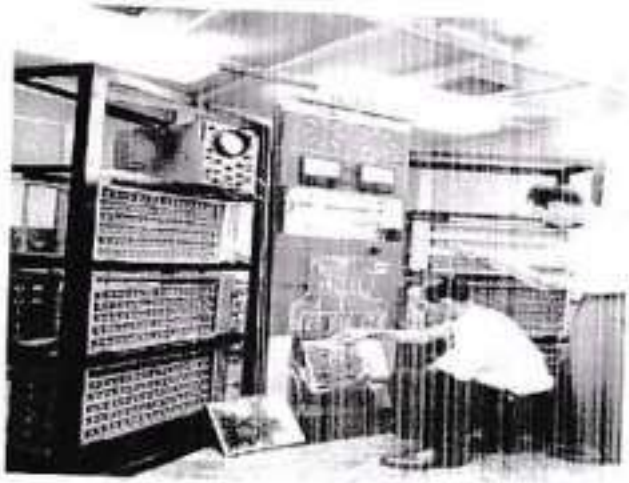

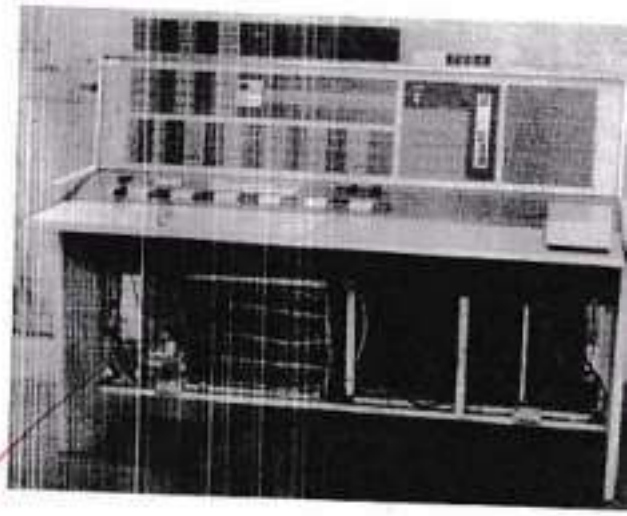

- Microprocessors were introduced

# Computer Generations

A generation refers to the state of improvement and advancement of computer technology product. With each new generation miniaturization, speed, power and memory of computer had advanced.

→ following are the generation wise characteristics of computers:

## (1) First Generation Computers (1940 - 1956)

(i) Computer vacuum tubes were used for electronic circuitry. Vaccum tube was a fragile glass device used for electronic circuitry.
(ii) These computers were of huge in physical size.
(iii) Operating speed was very slow.
(iv) Manufacturing cost was very high.
(v) These computers were less reliable due to failure of vacuum tubes and enormous amounts of heat generated by them.
(vi) They needed cooling devices to control the temperature.
(vii) Computers were confined to scientific research and commercial application only. Computer assembly and machine languages were developed.
(viii) Computers were - ENIAC, EDVAC & EDSAC.

## (2) Second Generation Computers (1956 - 1964)

(i) The 2nd generation computers used transistors in their circuitry in place of vacuum tubes. 1 transistor was equivalent to 40 vacuum tubes.


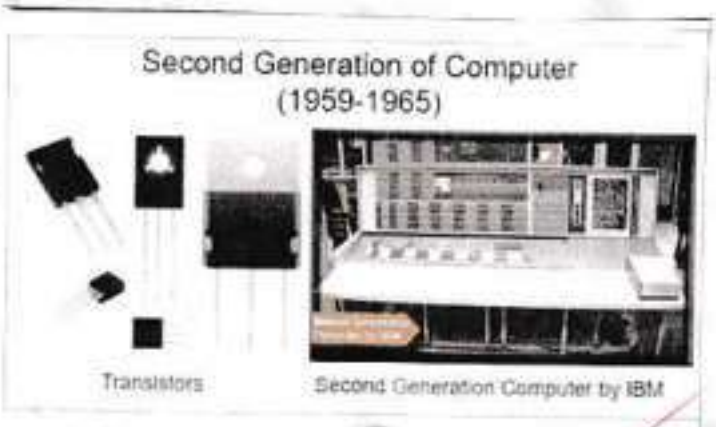

(ii) Transistors were quite small, very fast and generated low heat in comparison to vacuum tubes.
(iii) Processing speed was faster. Larger storage capacity (100 KB).
(iv) The machine failure rate was lower but still these computers needed cooling devices to control the temperature.
(v) High level languages like FORTRAN, COBOL were developed.
(vi) Computers were - IBM 70 series, 1400 series & 1600 series, ATLAS, NCR 304, B5000, GE 635 & UNIVAC.

(3) Third Generation Computers (1964 - 1970)

(i) The 3rd generation computers used ICs in their circuitry by replacing transistors. Jack Kilby of Texas Instrument Company developed an IC on a small chip of silicon in 1958.
(ii) These IC were reliable, compact in size & low in cost.
(iii) The development used an operating system that allowed machines to run many different programs at once with a central program that monitored and co-ordinated the computer's memory.
(iv) I.C. chips increased the speed of these computers. These comp. performed the arithmetic and logic operations in micro and nano seconds.
(v) These computer were smaller in size and cost was low. Had better storage and also secondary storage device.
(vi) A high level language BASIC (Beginners All Purpose Symbol Instruction code).
(vii) 3rd generation computers were IBM 360 series, 370 series, PDP-5, PDP-8, ICL-190, UNIVAC 1108.


Third Generation
of Computers.
(1965-1972)
The second generation of computers uses the transistors in the place of vacuum tubes.


FOURTH GENERATION COMPUTERS
■ Microprocessors were introduced

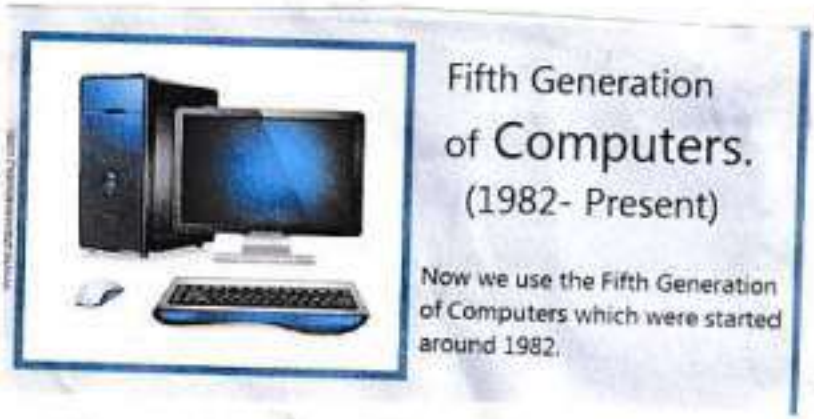
Fifth Generation
of Computers.
(1982- Present)
Now we use the Fifth Generation of Computers which were started around 1982.

## (4.) Fourth Generation Computers (1970 - 1985)

(i) In 1971 Intel Corporation of USA developed the IC chip which has the entire computer circuitary on a single silicon chip. These chips are called Micro Processor.
(ii) The 4th generation computers were called micro computers. These computers used LSIC's (Large Scale Integrated Circuits).
(iii) High level languages like C, ADA, PASCAL were introduced.
(iv) Laptop computers and palmtop were developed.
(v) Networking, internet and e-mailing were introduced.
(vi) 4th gen. computers were Honey well 6080 series, APPLE series, IBM PC's.

## (5.) Fifth Generation Computers (1985 Onwards)

(i) This generation computers have the ability to think and make decisions because of AI.
(ii) Speed, accuracy, storage and retrieval capabilities are increased very much in comparison to previous generations.
(iii) The ability to translate a foreign language is possible with 5th generation computers.
(iv) Japanese have named this generation of computers as KIPS (Knowledge Information on Processing System)
(v) Computers are more user friendly.
(vi) Windows 95, 97, 98, 2000 etc were introduced in this generation.

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

Teacher's Signature :

# Classification of Input devices

- **Keyboard Devices**
  - Keyer
  - Keyboard
  - LPFK
- **Pointing devices**
  - Mouse (Desk)
  - Computer mouse
  - 3D mice
  - Joysticks
  - Pointing sticks
- **Composite devices**
  - Wii Remote
  - Wii Remote with attached strap
- **Game Controller**
  - Gamepad
  - Paddle
  - Shuttle
  - Wii Remote
- **Visual devices**
  - Camera
  - Camcorder
  - Webcam
  - Scanner
- **Audio Input devices**
  - Microphones
  - MIDI keyboards

V. Good

Swa. Gulab Bai Yadav Smriti Shiksha Mahavidyalaya ★ BORAWAN (M.P.) ★

Prof. S.K. Tiwari
*Principal*
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidyalaya
BORAWAN (M.P.)

# GULAB BAI YADAV SMRITI SHIKSHA MAHAVIDHYALAY,

# BORAWAN

**B.Ed: 2nd Year**

**Session: 2021-22**

## *Assignment*

# Educational Technology & ICT

Submitted By

Sudhanshu Kumrawat

Submitted to

Kundanlal Verma

Prof. S.K. Tiwari
*Principal*
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

Q.2. कंप्यूटर के विभिन्न इनपुट आउटपुट एवं संग्रहण उपकरणों का विस्तृत कीजिए?

कंप्यूटर के मुख्य भाग

पर्सनल कंप्यूटर में मुख्यतः तीन भाग या यूनिट होते हैं-

(i) इनपुट इकाई
(ii) प्रोसेसिंग इकाई
(iii) केन्द्रीय प्रोसेसिंग इकाई (CPU) एवं संग्रहण (स्टोर) इकाई।
आउटपुट इकाई

(i) इनपुट (निवेश) इकाई (Input Unit) या उपकरण

कंप्यूटर में कोई भी डाटा अथवा प्रोग्राम जिन उपकरणों की सहायता से पहुँचाया जाता है उन्हें इनपुट उपकरण कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं।

(अ) वे उपकरण जो व्यक्ति व कंप्यूटर का सीधा सम्पर्क कराते हैं। जैसे - की बोर्ड, माउस आदि।

(ब) वे उपकरण, जिनमें कंप्यूटर में डेटा व निर्देश भेजने से पूर्व रिकार्ड संग्रह किए जाते हैं जैसे फ्लॉपी, डिस्क आदि।

इनपुट उपकरणों की तालिका निम्नानुसार है-

इनपुट उपकरण (डिवाइसेज़)

1) की - बोर्ड 2) जाय्स्टिक 3) माउस
4) लाइटपेन 5) ग्राफिक टेबलेट 6) वाइस डाटा एन्ट्री
7) मेग्नेटिक टेप तथा कैसेट 8) मैग्नेटिक ड्रम 9) फ्लॉपी डिस्क
10) आप्टिकल मार्क रीडर (MCR) 11) आप्टिकल कैरेक्टर रीडर (OCR)
12) मैग्नेटिक इंक कैरेक्टर रीडर 13) वेबकैमरा 14) पंच पेपर टेप।

## Input/Output

कम्प्यूटर में प्रयोग की जाने वाली कुछ डिवाइसेज का वर्णन नीचे किया गया है-

1) की - बोर्ड (Key Board) ⇒

यह सर्वाधिक उपयोग में आने वाला इनपुट उपकरण है। यह टाइपराइटर के समान ही होता है। यह कम्प्यूटर से एक केबल द्वारा जुड़ा होता है। इसमें टाईपराइटर की अपेक्षा कुछ अतिरिक्त Keys होती हैं। वर्तमान में 80 या 104 कुंजी वाले की बोर्ड प्रचलन में हैं। कम्प्यूटर के की-बोर्ड में सबसे ऊपर दाहिनी ओर रोशनी देने वाली तीन इंडीकेटर Caps Lock, Num Lock तथा Scroll Lock लगे रहते हैं।

की-बोर्ड में मुख्यत: निम्न कुंजियाँ होती हैं।

(i) वर्ण कुंजियाँ : (Alphabets Keys) A to Z and a to z
(ii) अंक कुंजियाँ : (Numberic keys) 0 to 9
(iii) कार्य कुंजियाँ : (function keys) F1 to F12
(iv) दिशा कुंजियाँ : (Arrow Keys) ← ↑ → ↓
(v) करेक्टर कुंजियाँ : (Character Keys) (,), [,], *, +, -, /.
(vi) विशेष कुंजियाँ (Special Keys) Enter, * Del, ctrl, Alt, ESC.
(vii) न्यूमरिक की-पैड (Numeric key Pad)

(i) वर्ण कुंजियाँ (Alphabets Keys) वर्ण कुंजियों में समस्त वर्ण निम्नी प्रकार से लिखे रहते हैं। A से Z तक और a से z.

यदि वर्ण का उपयोग A से Z के रूप में करना हो तो पहले Caps Lock Key को दबाते हैं जिससे दाहिनी ओर एक लाइट जल जाती है जिससे पता चलता है कि Caps Lock Key पूर्णतः दब गई है। अब वर्ण की किसी भी कुंजी को दबाने पर आने वाला वर्ण A से Z के रूप में होगा। यदि लिखते हुए केवल 1 वर्ण ही बड़ा करना है तो यह shift कुंजी व वर्ण कुंजी साथ-साथ दबाते हैं।

उदा ⇒ n को बड़ा लिखना है तो shift + n दबाते हैं तो स्क्रीन पर N आता है।

ii) अंक कुंजियाँ (Numberic Keyes) की-बोर्ड में सबसे ऊपर मध्य भाग में अंक 0 से 9 तक की कुंजियाँ होती हैं। यह कुंजियाँ निम्न प्रकार होती हैं-

1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

(iii) कार्य कुंजियाँ (Function Keys) यह कुंजियाँ कुल 12 होती हैं तथा F1 से F12 के रूप में उपस्थित होती हैं। यह निम्न प्रकार व्यस्थित होती हैं।

F1 F2 F3 F4 F5 F6 F7 F8 F9

F10 F11 F12

इनका विभिन्न software में भिन्न-भिन्न कार्य होता है।

(iv) दिशा कुंजियाँ (Arrow Keys) यह कुंजियाँ कर्सर को

गतिशील करने के काम में आती हैं। उदाहरण तथा -

↑ कुँजी - यह कर्सर को एक लाइन ऊपर ले जाने के काम में आती हैं।

↓ कुँजी - यह कर्सर को एक लाइन नीचे ले जाने के काम में आती हैं।

→ कुँजी - ये कुँजी कर्सर को एक अक्षर दायीं ओर ले जाने के काम आती हैं।

← कुँजी - ये कुँजी कर्सर को एक अक्षर बायी ओर ले जाने के काम आती हैं।

(v) कैरेक्टर कुँजियाँ (character keys)

यह विशेष प्रकार की कुँजियाँ होती है, जो विभिन्न चिन्हों को प्रदर्शित करने के काम में आती हैं जैसे (,), [,], *, +, %, ?, # आदि।

(vi) विशेष कुँजियाँ (Special Keys)

कुछ विशेष प्रकार की keys व उनके कार्य निम्न प्रकार हैं।

Enter/Return कुँजी - यह कुँजी दबाने पर कम्प्यूटर को निर्देश प्रदान किये जाते हैं। जिससे उन पर कम्प्यूटर काम करता है।

End कुँजी - यह कर्सर को स्क्रीन के अन्त में ले जाती है।

Back Space कुँजी -
यह स्क्रीन पर से एक-एक अक्षर को मिटाते हुए कर्सर को बायीं ओर ले जाती है।

Space Bar कुँजी -
यह की बोर्ड की सबसे लम्बी कुंजी है। इसका उपयोग एक अक्षर के बराबर स्थान छोड़ने के लिए किया जाता है।

Del (Delete) कुँजी -
यह कुँजी कर्सर के ऊपर उपस्थित अक्षर को मिटाने का काम करती है।

Insert कुँजी -
यह कुँजी दो अक्षरों के मध्य अन्य अक्षर डालने के काम आती है।

Tab कुँजी -
यह कर्सर को 5-5 स्थान दायीं या बायीं ओर ले जाने का काम करती है।

Esc (Escape) कुँजी -
ये कम्प्यूटर को प्रोसेसिंग के दौरान रोकने का काम करती है।

Pause कुँजी -
ये कम्प्यूटर की प्रोसेसिंग के समय अस्थाई रूप से रोकने का काम करती हैं।

Shift कुँजी -
यह संख्या में दो होती हैं तथा जिन कुँजियों में दो चिन्ह अंकित होते हैं। उनमें ऊपर वाला चिन्ह अंकित कराने के लिए इस कुंजी का उपयोग किया जाता हैं।

(vii) न्यूमरिक की पैड (Numeric key Pad) - की-बोर्ड के दायीं ओर 0 से 9 तक की कुँजियाँ उपस्थित होती हैं। ये उसी प्रकार व्यवस्थित होती हैं। जिस प्रकार कैलकुलेटर में अंक कुँजियाँ होती हैं। इसका उपयोग तब किया जाता है जब केवल अंकों को बहुत अधिक मात्रा में कम्प्यूटर में डालना हो। उदा- बैंकों में इसका बहुत उपयोग होता हैं।

2. माउस
यह स्क्रीन पर किसी विशेष स्थिति को अंकित करने वाला छोटा सा उपकरण होता हैं। इसे माउस पैड पर हाथ से हिलाया जाता है जिसके साथ-साथ स्क्रीन पर कर्सर भी हिलता हैं। माउस केबल के द्वारा कम्प्यूटर के CPU से जुड़ा होता हैं। इसमें नीचे की ओर एक गेंद लगी होती है और माउस के ऊपर 2 या 3 बटन बने होते हैं।

जब माउस को माउस पैड पर सरकाया जाता है, तो ये गेंद घूमती है जिससे कम्प्यूटर स्क्रीन पर कर्सर घूमता है। माउस से कार्य करवाने के लिए इस पर उपस्थित बटन को दबाया जाता है। कुछ कार्यों में बटन को शीघ्रता से दो बार दबाया जाता है। कम्प्यूटर स्क्रीन पर कर्सर ↑ ऐसा दिखाई देता है।

3. स्कैनर (Scanner)

स्कैनर एक इनपुट उपकरण है। जिसके द्वारा किसी लिखित सूचना (Text) तथा आकृति (Graphics) को सीधे कम्प्यूटर में डाला जा सकता है। इसके लिए जिस लिखित सूचना अथवा चित्र को स्कैन करना होता है उसे स्कैनर की समतल सतह पर रखा जाता है। तथा स्कैनर पर लगे लेन्स और प्रकाश स्रोत के द्वारा चित्र को कोई लेन्स करके बाइनरी आँकड़ों में बदलकर कम्प्यूटर की मेमोरी में पहुँचा दिया जाता है और इस चित्र को मॉनीटर की स्क्रीन पर देखा जा सकता है। स्कैन की गई तस्वीरों को आवश्यकतानुसार संशोधित कर सकते हैं। चित्र श्वेतश्याम अथवा रंगीन हो जाता है।

किसी स्कैनर की गुणवत्ता प्रति इकाई क्षेत्र में उपस्थित बिन्दुओं की संख्या पर निर्भर करती है। इसे रिजोलेशन कहते हैं। आजकल प्रचलित स्कैनर्स की रिजोलेशन 600 व 1200 dpi है। स्कैनर का आकार उस पृष्ठ के आकार पर निर्भर करता है। जिसे चित्र अथवा लिखित सामग्री स्कैनर करती है। अधिकांशतः A3 स्कैनर काम में लिए जाते हैं।

Experiment Name .....

Teacher's Signature .....

(ii) आउटपुट (निर्गम) इकाइयाँ (Output Units)

एक बार कम्प्यूटर की प्रोसेसिंग पूरी होने के पर प्राप्त परिणामों को आउटपुट इकाइयों में भेज दिया जाता है। अधिकांशतः परिणामों को मॉनीटर स्क्रीन पर देखा जा सकता है। तथा आवश्यकता होने पर, उन्हें प्रिन्टर पर भेजकर निकाला जा सकता है। कम्प्यूटर से प्राप्त परिणाम प्रायः दो प्रकार के होते हैं।

(i) वे परिणाम जिनका उपयोग तत्काल कर लिया जाता है।

(ii) वे परिणाम जिनको भविष्य के लिए संग्रहित करके रख लिया जाता है।

प्राप्त परिणामों को दो प्रकार से प्रदर्शित कर सकते हैं।

(i) सॉफ्ट कॉपी Soft Copy (ii) हार्डकॉपी Hard Copy.

(i) Soft Copy - यदि परिणाम से प्राप्त सूचनाओं को किसी प्रोग्राम के माध्यम से स्क्रीन पर देखा जा सकता है अथवा आवाज के रूप में प्राप्त किया जाये तो यह सॉफ्टकॉपी कहलाती है। इसी प्रकार यदि परिणामों को फ्लॉपी पर, हार्डडिस्क पर या माइक्रोफिल्म पर संग्रहित किया जाये तो यह भी सॉफ्टकॉपी कहलाती है।

(ii) Hard Copy - जब परिणामों को प्रिंटर अथवा प्लोटर

द्वारा कागज पर प्रिंट किया जाता है तो यह हार्डकॉपी कहलाती है। हार्डकॉपी परिणामों की स्थाई कॉपी होती है।

1) मॉनीटर

आउटपुट उपकरणों में सबसे अधिक काम में आने वाला उपकरण मॉनीटर है। काम करने वाला व्यक्ति मॉनीटर के द्वारा ही कम्प्यूटर से संवाद करता है। माइक्रो कम्प्यूटर्स में मुख्यत: दो प्रकार के मॉनिटर काम में लिये जाते हैं।

मॉनीटर

- Cathode Ray Tube Monitor (CRT)
- Liquid Crystal Display Mo. (LCD)

1) CRT मॉनीटर

अधिकांशत: कम्प्यूटर्स में इस प्रकार का मॉनिटर काम में लिया जाता है। यह बहुत कुछ घर में काम में आने वाले टेलीविजन के समान होता है। इस प्रकार के मॉनिटर में पिक्चर ट्यूब (CRT) का प्रयोग होता है। (CRT) मॉनिटर में फास्फोरस कोटिड स्क्रीन होती है। जब इलेक्ट्रान इस स्क्रीन पर गिरते हैं तो स्क्रीन पर रोशनी दिखाई देती है।

पिक्सल (Pixels) - कम्प्यूटर की स्क्रीन छोटे-छोटे बिन्दुओं में बंटी रहती है। जितने अधिक बिंदु होते हैं स्क्रीन पर उतनी ही अच्छी फोटो दिखाई देती

Experiment Name .....

Teacher's Signature .....

है। स्क्रीन पर उपस्थित इन बिन्दुओं को पिक्सल कहते हैं। स्क्रीन पर दिखाई देने वाले सभी अक्षर व तस्वीर इन बिन्दुओं के ही विभिन्न मिले-जुले रूप होते हैं।

रिजोल्यूशन (Reslation)

स्क्रीन के प्रति इकाई क्षेत्रफल में उपस्थित बिन्दुओं की संख्या मॉनीटर की रिजोल्यूशन कहलाती है। यह 1080×60 से प्रदर्शित की जाती है। अर्थात् स्क्रीन पर बिन्दुओं की 1080 पंक्तियाँ व 640 स्तंभ उपस्थित हैं। जितने अधिक बिंदु होंगे मॉनीटर का रिजोल्यूशन उतना अधिक होता है और स्क्रीन पर तस्वीर अधिक स्पष्ट दिखाई देती है।

2) लिक्विड क्रिस्टल डिस्प्ले मॉनीटर LCD

यह डिजिटल डिस्प्ले सिस्टम है जिसमें काँच की दो परतों के मध्य पारदर्शी द्रवीय क्रिस्टल पदार्थ होता है। LCD की बाहरी परत टिन ऑक्साइड अथवा इन्डियम आक्साइड द्वारा लेपित होती है जिससे वह चालक बन जाती है।

LCD मॉनीटर CRD मॉनीटर की अपेक्षा बहुत पतले होते हैं। LCD मॉनीटर अधिकांशतः लैपटोप कम्प्यूटर में काम में लिये जाते हैं। LCD प्रकार की स्क्रीन लैपटॉप कम्प्यूटर के अतिरिक्त कैलक्युलेटर, विडियोगेम व घड़ियों में भी काम में ली जाती हैं। LCD मॉनीटर में जब प्रकाश गुजारा जाता है तो प्रकाश के ध्रुवीकरण द्वारा तस्वीर बनती है।

प्रिन्टर्स (Printers)

कम्प्यूटर की प्रोसेसिंग से प्राप्त परिणामों की हार्डकॉपी को प्राप्त करने के लिए प्रिन्टर का उपयोग किया जाता है। कुछ प्रिन्टर्स केवल लिखी हुई सूचनाओं को प्रिंट करते हैं जबकि कुछ प्रिन्टर केवल ग्राफिक्स को प्रिंट करते हैं।

प्रिन्टर

Impact printers | Non-Impact printers

(i) इम्पैक्ट प्रिन्टर्स (Impact printers) ⇒

इस प्रकार के प्रिन्टर में धातु का एक छोटा हथौड़ा कार्बन के रिबन पर चोट करता है। रिबन के नीचे वह पेपर रखा जाता है। जिस पर प्रिन्ट करना होता है। जब हथौड़े द्वारा चोट दी जाती है तो पेपर पर प्रिन्ट आ जाता है। यह निम्न प्रकार के होते हैं।

(अ) डॉट मैट्रिक्स प्रिन्टर
(ब) डेजी व्हील प्रिन्टर्स
(स) लाइन प्रिंटर

(ii) नॉन इम्पैक्ट प्रिन्टर्स ⇒

इस प्रकार के प्रिन्टर पर हथौड़े जैसी किसी वस्तु द्वारा रिबन पर चोट नही दी जाती है। यह कम आवाज करते हैं। इसके मुख्यत: दो उदाहरण निम्न हैं।

(i) इंकजैट प्रिन्टर (ii) लेजर प्रिन्टर

Experiment Name .....


Teacher's Signature .....

कुछ महत्वपूर्ण प्रिन्टरों के नाम इस प्रकार हैं।

1) डॉट मैट्रिक्स प्रिन्टर
2) डेजी व्हील प्रिन्टर
3) लाइन प्रिन्टर

(i) चेन प्रिन्टर (ii) बैन्ड प्रिन्टर (iii) ड्रम प्रिन्टर

4) इंकजेट प्रिन्टर
5) लेजर प्रिन्टर

3) प्लोटर्स (Plotters) ⇒

प्लोटर्स का उपयोग बड़े चित्र बनाने में किया जाता है। जैसे बड़ी इमारतों के नक्शे बनाने में, मास्टर प्लान बनाने में और वास्तु चित्र बनाने में किया जाता है। उनका उपयोग दो विमाओं में ग्राफ बनाने में भी किया जाता है। प्लोटर्स दो प्रकार के होते हैं।

(i) फ्लैट बैड प्लोटर
(ii) ड्रम प्लोटर

(iii) Storage Device ⇒ कम्प्यूटर, लैपटॉप एवं स्मार्टफोन जैसे उपकरणों का डेटा, स्टोरेज डिवाइस में ही स्टोर किया जाता है, ये कई प्रकार के होते हैं। इनमें विभिन्न प्रकार के डेटा जैसे फोटो, वीडियो, सॉफ्टवेयर, फाइल डॉक्यूमेंट को स्टोर किया जाता है। इस लेख

Experiment Name .....


Teacher's Signature .....

के माध्यम से आप जानेंगे कि डाटा स्टोरेज डिवाइस किसे कहते हैं? सबसे तेज कौन सी है। और ये कितने हैं।

"डेटा स्टोरेज डिवाइस उन उपकरणों को कहा जाता है जिनमें कंप्यूटर, लैपटॉप और स्मार्टफोन का डेटा स्टोर किया जाता है।"

(i) हार्ड डिस्क =>

हार्ड डिस्क मैग्नेटिक डिस्क की मदद से कार्य करने वाला कंप्यूटर स्टोरेज डिवाइस है। इसके अलावा यह एक non-volatile सहायक तथा डायरेक्ट एक्सेस मेमोरी है। इसकी स्टोरेज क्षमता अधिक तथा डाटा स्टोर करने और पढ़ने की गति तेज होती है।

(ii) ऑप्टिकल डिस्क =>

ऑप्टिकल डिस्क पॉली कार्बोनेट प्लास्टिक से बनी गोलाकार डिस्कस हैं। जिसकी एक सतह पर प्रकाश को परावर्तित करने के लिए एल्युमिनियम की पतली परत लगाकर इसे चमकदार बनाया जाता है। एक ऑप्टिकल डिस्क पर डेटा लिखने या पढ़ने के लिए एक लेजर बीम का उपयोग किया जाता है, इस लिए इसे लेजर डिस्क और ऑप्टिकल डिस्क भी कहा जाता है।

(iii) मेमोरी कार्ड =>

यह एक पतले कार्ड के आकार का इलेक्ट्रानिक

Experiment Name .....

Teacher's Signature .....

मेमोरी डिवाइस है, जिसका उपयोग कंप्यूटर तथा लैपटॉप के अलावा अन्य आधुनिक उपकरणों जैसे- डिजिटल कैमरा, मोबाइल फोन, टेबलेट, स्मार्टफोन आदि में किया जाता है।

(IV) एसएसडी SSD ⇒

SSD का पूरा नाम सॉलिड स्टेट ड्राइव है, यह अब तक की सबसे तेज गति से कार्य करने वाली डाटा स्टोरेज डिवाइस है। एसएसडी के अंदर कई सारे सेमीकंडक्टर होते है, यह डेटा सेव करने और प्राप्त करने के लिए सेमीकंडक्टर चिप्स का उपयोग करती है, एक SSD की डाटा शेयर करने की अधिकतम क्षमता 10 GB/s तक हो सकती है।

(V) डीवीडी ⇒

डीवीडी ऑप्टिकल डिस्क का एक उदाहरण है। यह सीडी - रोम की तरह काम करता है लेकिन इसमें सीडी की तुलना में अधिक डेटा स्टोरेज क्षमता होती है। डीवीडी में डाटा के दो लेयर होते हैं, जिनमें डाटा स्टोर किया जाता है, इसमें डेटा को 20 साल तक सुरक्षित रखा जा सकता है। लेकिन धूल, गंदगी खरोंच इसे नुकसान पहुंचा सकते हैं।

(VI) पेन ड्राइव ⇒

यह पेन के आकार का होता है, इसलिए इसे पेन ड्राइव कहा जाता है। यह एक इलेक्ट्रॉनिक मेमोरी डिवाइस है। जिसे यूएसबी पोर्ट में लगाकर इस्तेमाल किया

Experiment Name .....



Teacher's Signature .....

जाता है एवं यूएसबी पोर्ट के माध्यम से ही डाटा शेयर किया जाता है, इसमें पुराने डेटा को मिटाकर नए डेटा को बार-बार स्टोर किया जा सकता है, इसलिए इसे और भी कहा जाता है।

VII ब्लू रे डिस्क ⇒

यह एक प्रकार की ऑप्टिकल डिस्क है जो अपनी उच्च भंडारण क्षमता के कारण मल्टीमीडिया स्टोरेज में लोकप्रिय है। इस डिस्क को पढ़ने के लिए ब्लू वॉयलेट लेजर किरणों का उपयोग किया जाता है, इसकी डाटा स्टोरेज क्षमता 25 GB से लेकर 50 GB हो सकती है।

Very good

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
B[redacted] (M.P.)

Teacher's Signature .....

# GULAB BAI YADAV SMRITI SHIKSHA MAHAVIDHYALAY,BORAWAN

M.Ed: 2nd Year

2021-22

## SUBJECT: *CONTEMPORARY AND FUTURE PERSPECTIVES OF EDUCATION*

**Assignment Topic**

NEP 2020 AND SUSTAINABLY DEVELOPMENT GOALS

SUBMITTED

Soniya Sable

SUBMITTED TO

Dr.Sunil Mehra

Prof. S.K. Tiwari
*Principal*
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

# Topic :- NEP - 2020 & SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS

## ✯ Introduction :-

हमारे देश में अनेक विकास की प्रक्रियाएँ संचालित है, जिनका उद्देश्य केवल देश को समृद्ध एवं शक्तिशाली एक राष्ट्र के रूप में विकसीत करना है। किन्तु आज 21वीं सदी के भारत की विकास की स्थिति को देखें तो आज भी देश में अनेक समस्याएँ एवं असमानताएँ दिखाई देती हैं। इन्ही समस्याओं एवं असमानताओं को नई विकासशील प्रौद्योगिकी नीति के द्वारा दूर किया जा सकता है।

इसके लिए हमारे देश में सरकार द्वारा सतत् विकास के लक्ष्यों को निर्धारित कर इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु हमारी भारत सरकार एक योजनाबद्ध तरीके से कार्यरत है। तथा लक्ष्यों को पूरा करने में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हुए सतत् विकास के लक्ष्यों को पूरा करने मे कुछ हद तक सफल हुई है।

## ✯ Meaning :-

सतत् विकास से आशय है कि - **"सतत् विकास वह विकास है जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतो को पूरा करने की क्षमता से समझौता**

किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है।

अर्थात "सतत् विकास से हमारा अभिप्राय ऐसे विकास से है, जो हमारी भावी पीढ़ियों की अपनी जरूरतें पूरी करने की योग्यता को प्रभावित किये बिना वर्तमान समय की आवश्यकता पूरी करे।"

"सतत् विकास का अभिप्राय आर्थिक विकास को संरक्षित करना है। इसका उद्देश्य वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधन सुरक्षित रखना है।"

इसके लिए सतत् विकास लक्ष्यों में पर्यावरण संरक्षण जो सतत् विकास का अभिन्न अंग है।

## Concept of Sustainable Development:

सतत् विकास दो शब्दों सतत् और विकास से मिलकर बना है जिनका अर्थ होता है निरन्तर एवं अविरल अनवरत विकास।

सतत् विकास की अवधारणा सर्वप्रथम 1987 में प्रख्यात पर्यावरणविद् नॉर्वे की पूर्व प्रधानमंत्री डॉ० ग्रो हर्लेम ब्रटलैण्ड ने प्रतिपादित किया था। उनके अनुसार "सतत् विकास वह विकास है जिसमें वर्तमान पीढ़ी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति आने वाली पीढ़ी की आवश्यकताओं को बिना क्षति पहुंचाये करती है। सतत् विकास प्रकृति के साथ मानव के साहचर्य उसके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान

Date: / / Page no:

की भावना पर आधारित है।"

सतत् विकास की अवधारणा में मुख्य तीन तत्वों की परस्पर अन्तक्रिया को सम्मिलित किया गया है :-

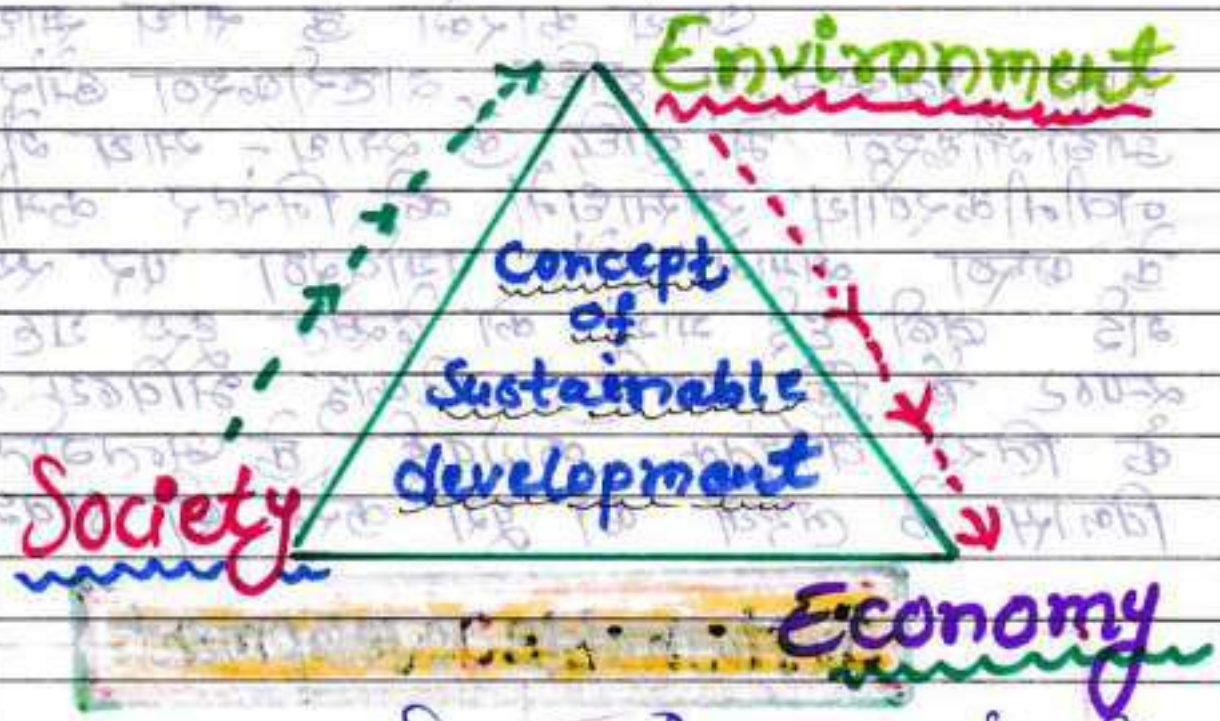


जब हम पर्यावरण एवं समाज के बीच परस्पर अन्तक्रियाँ व अन्तर संबंध की बात करते है तो ये सम्बंध स्वस्थ होने चाहिए।

Good

## ☆ Need for Sustainable development

① आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध भारत के लिए :-

② सामाजिक एवं पर्यावरणीय पारिस्थिति विकास को उन्नत बनाने के लिए आवश्यक :-

③ प्रौद्योगिकी एवं शिक्षा से ही सतत् विकास संभव

सार्वभौमिक प्राथमिक सतत् विकास न केवल पर्यावरणीय मुद्दो से संबंधित है, बल्कि आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दो से भी संबंधित हैं।

अन्य कारको के साथ साथ मानव प्रवासन में वृद्धि, शहरीकरण और औद्योगीकरण में वृद्धि के साथ-साथ गैर नवीनीकरणीय संसाधनों की निरंतर कमी के कारण समाजो और पर्यावरण पर रखी गई बढ़ी हुई मांगों को देखते हुए यह स्पष्ट है कि अधिक टिकाऊ भविष्य बनाने के लिए वैश्विक कार्यवाई के अन्तर्गत सतत् विकास के लक्ष्यों को पूरा करने की आवश्यकता है-

**Sustainable Development**

**SOCIETY**
- Welfare
- Equal opportunity
- Social cohesion
- International Solidarity
- Maintenance of human Capital

**ECONOMY**
- Economic growth
- Efficiency and Competitiveness
- Flexibility and stability
- production/ Consumption
- Employment
- International trade

**ENVIRONMENT**
- (i) Consumption of resources
- (ii) Materials & wastes
- (iii) Risks
- (iv) Rate of change
- (v) Natural and Cultural Landscape

## ✡ Need for Sustainable development ✡

# Sustainable Development Goals :-

सतत विकास के लक्ष्यों के सन्दर्भ में वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की 70 वीं बैठक में 2030 सतत विकास एजेंडा के तहत सदस्य देशों द्वारा 17 विकास लक्ष्य अर्थात एस०डी०जी० (Sustainable development Goals) तथा 169 प्रयोजन अंगीकृत किये गए है।

हमारे भारत देश एवं विश्व स्तर पर सतत विकास के 17 लक्ष्यों को निर्धारित किया गया है। जो 17 सतत विकास लक्ष्य और 169 उद्देश्य सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा के अंग है जिसे सितम्बर 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की शिखर बैठक में 193 सदस्य देशों ने अनुमोदित किया था। यह एजेंडा पहली जनवरी 2016 से प्रभावी हुआ है।

इसके मुख्य तीन आधार है-

1. आर्थिक विकास
2. सामाजिक समावेश
3. पर्यावरण वहनीयता है।

Good

"सतत विकास लक्ष्य" एजेंडा 2030 के आधुनिक सोच अच्छी तरह से स्वस्थ है। पर्यावरण के संबंध मे जो आधुनिक है, वे सूक्ष्म है और सूक्ष्म है, वे सानते है। मानव जाति के 1/6 रूप के विकास के लिए यह पवित्र होगा।"

→ नरेन्द्र मोदी

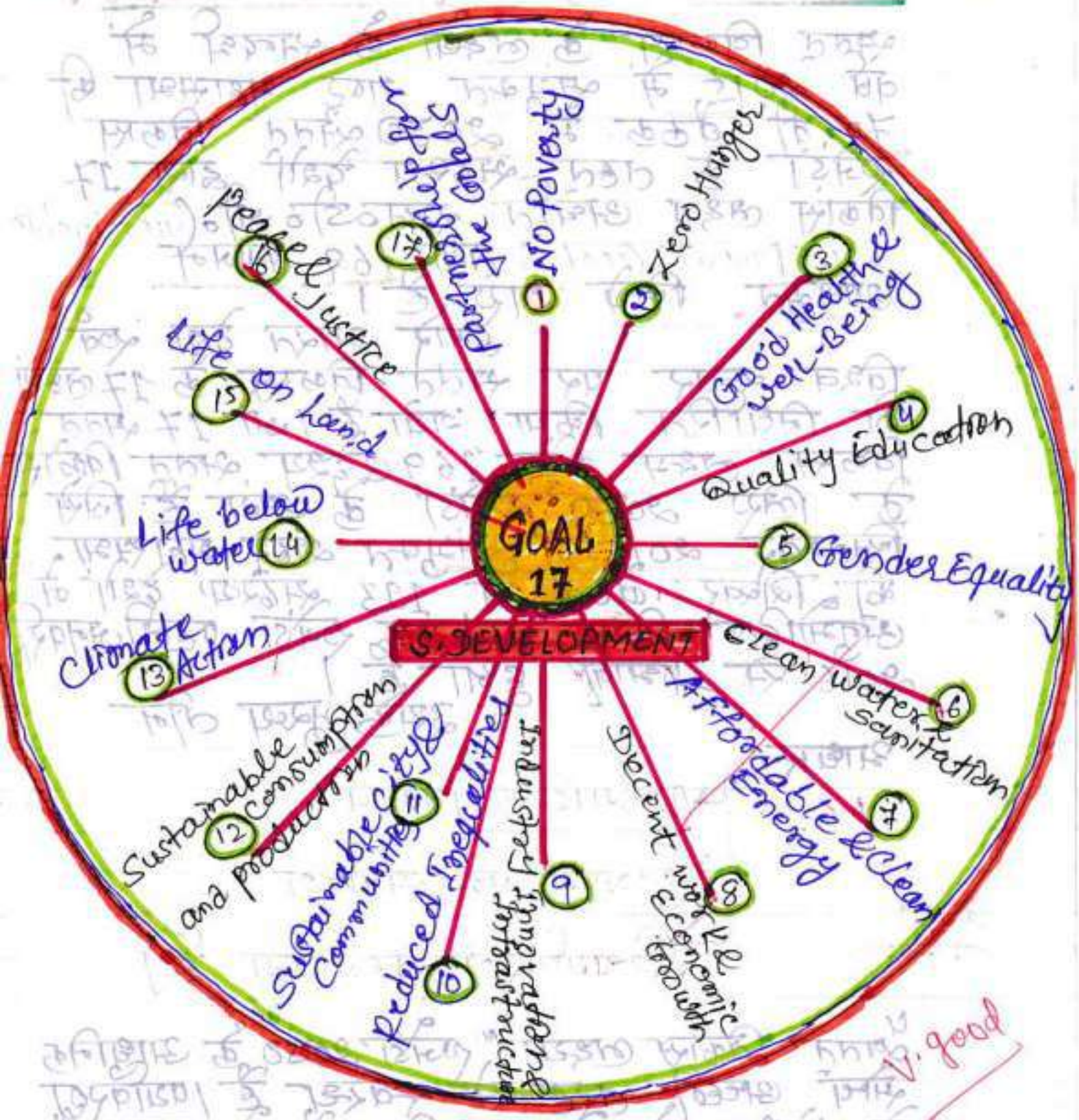


V. good

Sustainable Development Goals

# Sustainable Development Goals :-

1. **NO POVERTY :→** दुनिया के हर देश में सभी लोगों की अपार सम्भावनाएँ खत्म हो रही है। पूरे लोगों को भरपूर आर्थिक तंगी के लिए $ 1.25 से कम समय मे ठीक करें।

2. **ZERO HUNGER :→** पौष्टिकता की देखभाल, एवं स्वास्थ्यवर्धक पौष्टिकता युक्त भोजन सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।

3. **GOOD HEALTH & WELL-BEING :-** सभी स्वस्थ जीवन में और सभी के जीवन में सुधार करें।

4. **QUALITY EDUCATION :-** सभी को समान रूप से पूर्ण शिक्षा मिले इसके लिए व्यवस्थाएँ लागू करना।

5. **GENDER EQUALITY :→** स्त्री समानता प्राप्त करने और महिलाओं को शिक्षित एवं सुदृढ़ बनाने के लिए प्रयास करना।

6. **CLEAN WATER & SANITATION :→** सभी के लिए स्वच्छ जल एवं स्वच्छ भारत और स्वच्छता की व्यवस्था करने के लिए अनिवार्यत: है।

## (7) AFFORDABLE & CLEAN ENERGY :-

सभी के लिए बेहतर सुरक्षा, आधुनिक ऊर्जा की प्राप्ति के लिए।

## (8) DECENT WORK & ECONOMIC GROWTH :-

अच्छा काम और अर्थव्यवस्था का विकास निरंतरता, स्थिति और आर्थिक स्थिति के साथ निर्माता और सभी के लिए कार्य को व्यवहारीकरना है।

## (9) INDUSTRY INNOVATION & INFRASTRUCTURE :-

उद्यम, आधुनिक और ढाँचे का विकास प्रौद्योगिकी के विकास का सुदृढ़ बनाने के लिए तकनीकी प्रक्रिया को लागू करना।

## (10) REDUCED INEQUALITIES :-

अंतरिक्ष के संबंध में विसंगतियों को दूर कर विकास को आगे बढ़ाना लक्ष्य है।

## (11) SUSTAINABLE CITY & COMMUNITIES :-

मौसम और सामुदायिक विकास के लिए सुरक्षित करना है।

## (12) SUSTAINABLE CONSUMPTION AND PRODUCTION :-

Date: / / Page no:

सतत विकास के लक्ष्यों को और अधिक जिम्मेदारी के साथ उत्पाद को और अनुकूल बनाना है।

## 13 CLIMATE ACTION :-

विज्ञान परिवर्तन एवं जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्यवाई सुनिश्चित करना।

## 14 LIFE BELOW WATER :-

"पानी है तो जीवन है" सतत विकास लक्ष्यों में ईकोसिस्टम, समुद्री और समुद्री उत्पाद का सुरक्षा और मजबूत बनाने के लिए आवश्यक है।

## 15 LIFE ON LAND :-

भूमि पर जीवन खराब स्थिति वाले मौसम के अनुकूल सुरक्षित होने और खराब होने की स्थिति को ठीक करने की कोशिश करना।

## 16 PEACE & JUSTICE :-

शांति और सुधिकार के लिए पर्यावरण के विकास एवं पर्यावरणीय समाजों को व्यवस्थित करने का सभी को समान अधिकार मिले।

## 17 PARTNERSHIP FOR THE GOALS :-

लक्ष्य समूहों में समूहीकरण विकास को मजबूत बनाने में सक्षम है।

## RECOMMENDATION AND SUGGESTION :-

सतत विकास के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए हमारे भारत सरकार एवं इसके प्रत्येक नागरीक की जिम्मेदारी है कि हमारे देश मे व्याप्त गरीबी, भुखमरी, शिक्षा, स्वास्थ्य और खुशहाली, शिक्षा, लैंगिक समानता, जल एवं स्वच्छता, ऊर्जा आर्थिक वृद्धि और उत्कृष्ट कार्य बुनियादी सुविधाएं, उद्योग एवं नवाचार, असमानताओं मे कमी, सवहनीय शहर, उपभोग एवं उत्पादन, जलवायु कार्यवाई, पारिस्थितिक प्रणालियां, शांति एवं न्याय और भागीदारी से ही हम सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने मे सफल हो सकते है।

इसके लिए हमे योजनाबद्ध तरीके से प्रणालियों का निर्माण करने मे हमारे देश को विकसित एवं समृद्ध बनाने मे और हमे तकनीकी प्रौद्योगिकी के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग एवं महत्व को समझने की आवश्यकता है।

## CONCLUSION :-

आज हम दुनिया का कायाकल्प करने की दहलीज पर खड़े है। अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय ने संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से सतत विकास के 17 लक्ष्यों की ऐतिहासिक योजना शुरू की है जिसका उद्देश्य वर्ष 2030 तक अधिक सम्पन्न, अधिक समतावादी और अधिक सुरक्षित विश्व रचना करना है। जो इन लक्ष्यों से ही पूरा किया जा सकता है।

Good

Prof. S. K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

GULAB BAI YADAV SMRITI SHIKHA MAHAVIDHYALYA BORAWAN

2021-22

M.Ed-I YEAR

Educational- Administration

Topic

# Describe Programme Evalution And Review Technique (PERT)

SUBMITED TO

MR. PARDEEP KUMAR

SUBMITTED BY

JAISON JOSEPH

Prof. S.K. Tiwari
**Principal**
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

1 Nature and MEANING - Many Features of system Analysis Are found in PERT. In Many Respects it is similar to the task Analysis of Training psychology Approach. It is a Method of Planing the programme It can also be considerd as a method of analyzing and Developing the programme It was developed in 1958 by a Research team hired by the the United States Navy's ballistic missile Effors. It is often also kmown ans pert/CPM In this CPM Stands for critical Path Method which was Developed by DuPont an Sperry Rand For use in Construction and Engineering projects in 1957 at about the same Time as PERT. Since the Two Technology were very similar the Two Terms were used in conjunction PERT/CPM can also Be Defined as a Mangement Planning and Analysis Tool That uses Graphic Displays To show The Necessary Relationships Between Their Functions, including comlex R&D programs uses If the Basic Terms involved in its use are described Then the Meaning and From of pert becomes clear These posts are as Follows

2. Defining the objectives - This is An Important step in the

Implementation of PERT Technology First of All is has to Be Defined in very clear and objective terms what is to be Achived what exactly Does in Mean and how to know that it has been Achived other Detailed Information Actions and Terms Regarding Pert are seen in the context of these objectives Thus the Identifications of objectives in the Final Task in the PERT Network And whatever comes Before it is Done in the Final context of these objectives As soon as these objectives Are Determined its Information is communicated to all the concerned Employees.

3. Preparing a work-Breakdown Structure -

This is The Second step in the Book In this the Project or the entire work is analyzed in detail in terms of Sub-Processes and Sub-Pcesses It is a Type of Job Analysis in which each Job is Sub-divided until the Desired Level of Detail is Recched. The Disruption Structure takes the Form of a pyramid whose pinnacle is the completed task or projct At the first level there Are its main Organs and at the Second Level

# What is PERT?

Program Evaluation and Review Technique, PERT, is a statistical tool used in project management, which was designed to analyze and represent the tasks involved in completing a given project.

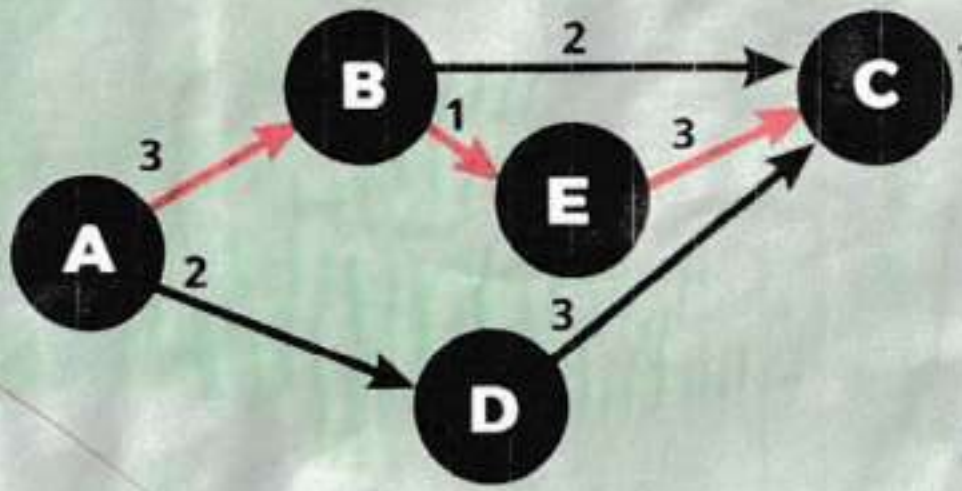


Acad

There are function sunder ecat organ In this way the analysis goes on Form top to Bottom till it reches such a level that no Further segmentation is not Possible.

4. Network Design — This is the Most Important Post in PERT Technology

This is a centaral notion to Pert Pert's network shows how Different organs and functions are inter Related and Dependent and which comes First in which order All the Priorities of the functions and components along with there mutual Relationships And Depandencies Are Displayed in the Network Structure The Basic Elements of the Network Are Pathq Actions And core-hants. Events Represent the Beginning or and of an Action Thise Phenomenq are Displayed in the form of circles, Triangles, Rectangls and Rhombeses, These are Linked To Each othe By Arrows that Represent Actions Personnel class is not used in Pathas not are the Activities of Resources and Time Real which Are Displayed By straight line and it is also unreal which is Displayed by Dotted arrow Actual activities Are those in which personnel solutions and Time They only show the Dependence of one

# PERT CHART

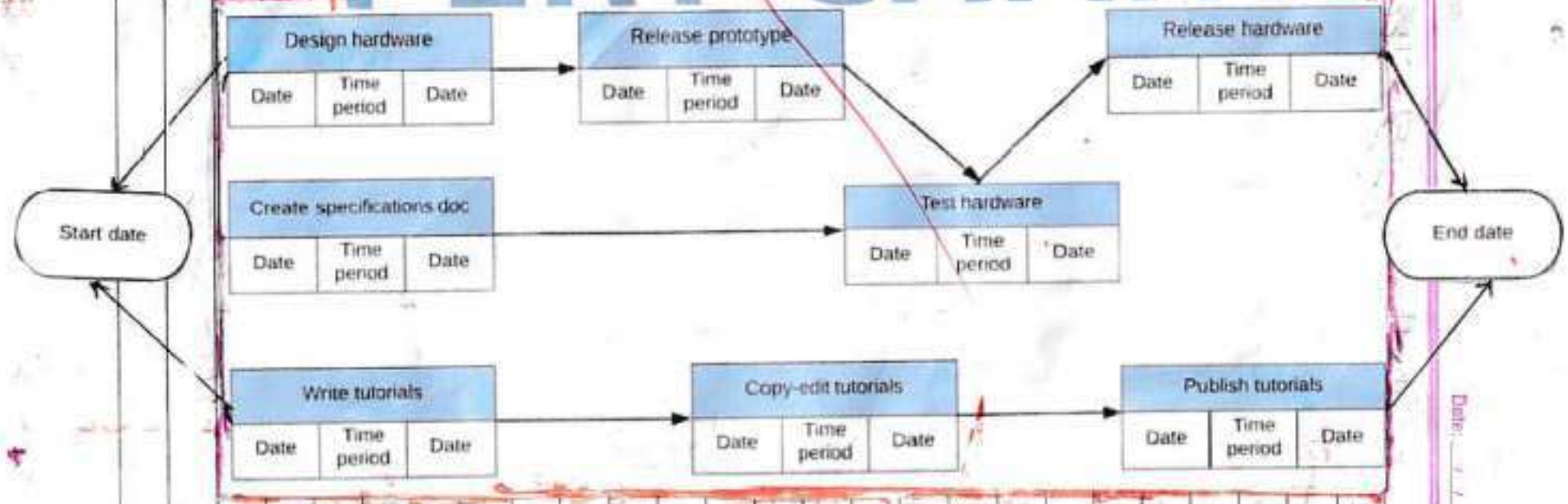


Good

Event on Another Event The Meaning of Baba (constraint) is that No Action can be Alon until all the events and Actions that Become before it are completed In this way Many incidents Connected by verbs are known in the design.

5. Making Time Estimate — This is Part of process when the Network and its Extensions are ready then the nest step comes for the time estimate Generally Three Time Estimates are Made - optimistict Most Likely And Disappointing (mit) If everiting is Done Right in the first time then it is called an optimistic time estimate In which assuming normal conditions and keeping in view the possibility of Some unseen delay if Someting is Done then it is an Estimate of possible time A pessimistic time Estimate is a time estimate when an action takes place in the face of Adverse Circumstances. All These Time Estimates Can be put Together in Formula To Calculate the desired Time -

$$Te = \frac{To + 4Tm + Tp}{6}$$

# PERT Vs CPM

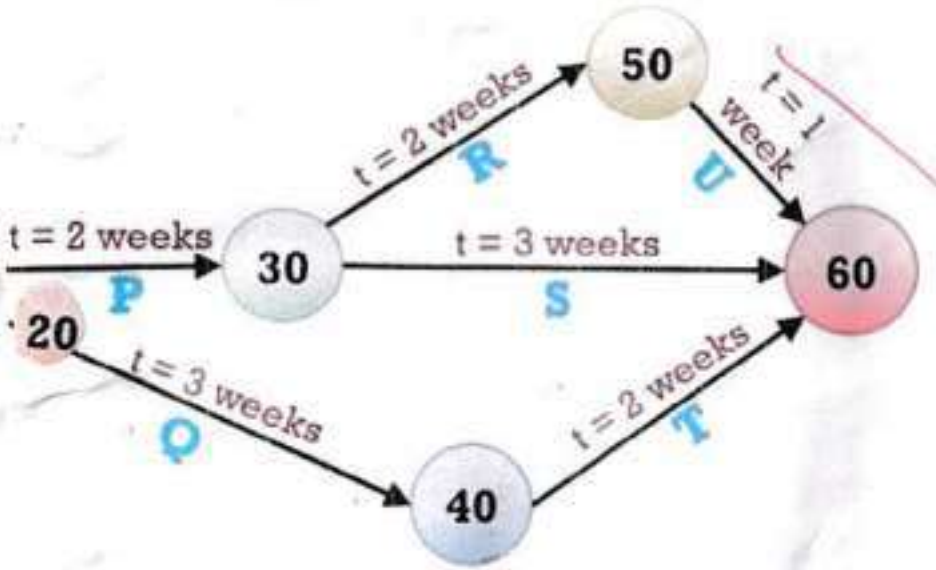


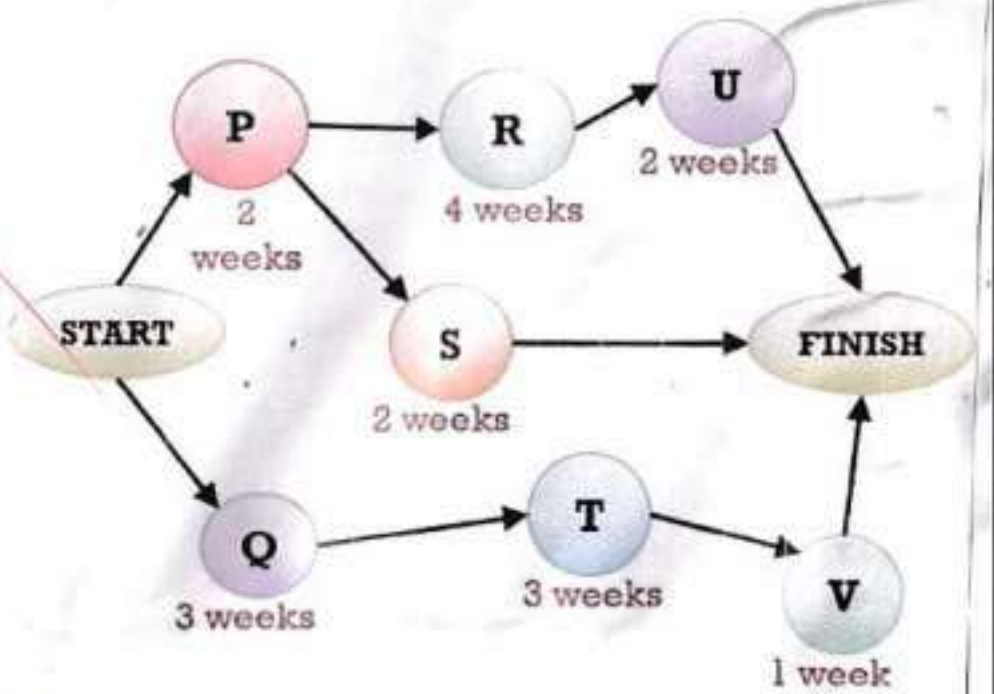


## Differences

$$Te = \frac{te + 4tm + tp}{6}$$

6. Advantages of Pert – This Technology is Important and has Many Advantages in Situations where the questions of Developing and Implements new programs and Action plans arises Some of These Benifits are Listed Below –

* It lays Emphasis on Planing and Considering Alternatives Hece all the benifits of Planing Are Inherent in it There is Always a High Probablity of success of a Planned Program In that case if one Plan fails There are other options.

* Another Advantage of PERT is That it Provides a basis for allocation of Responsibilities And Evaluation of Performance.

* PERT helps in clearly Understanding the interrelationships Among the verious Activities Involved in the execution of an Action plan or Task. It Enables the Manager To pay Attention To the stressed Subsystems And Find out

where the Resources Are Not Being Used Properly It Also helps Them To correct Errors wherever Necessary Disadvantages. And Drawbaks of pert

7. Disadvantages and Short Coming of Pert -

Although Pert has Many Advantages yet it hase some of the following drawbacks.

* It Does not Proide Any Information About Expenditure which is Sometimes very Much Needed Inthe Absence of Expenditure related Information it Becomes Difficult For the Managers to Understand the Alternatives And choose one Among Them.

* Another Drawback of PERT is That its Times estimates Are often not Reliable

* The Third Drawbak of This Tecqunic is That analyst Excercies Excessive Control And Unnecessarily increases its Complexity Managers often Feel That the system has been forced Upon Them There is one Such Fact Dye To which They Are not Able To

## 2.7.4

## A variety of sample assignments given and assessed for theory courses through

# 1. Library work

| Course | Subject | Assignment |
|---|---|---|
| B.Ed. | CC1: Childhood and growing up | Discuss the Characteristics and problems of childhood and adolescence |
| B.Ed. | CC2: Education in India: status, problem & issue | What is the educational importance of co-curricular activities in school programmes? How can effective co-curricular activities be dragonised in schools? |
| B.Ed. | CC 6: Language Across the Curriculum part-1 | Write the meaning and definition of Essay, Describe the types of essays and write essay on a one type |
| B.Ed. | EPC 1: Reading & Reflecting on Texts | What do you mean by Reading? |
| M.Ed. | Course 2: Educational Research - I | Define sampling. What are the characteristics of a good sample? Describe the different techniques of sampling. |
| M.Ed. | Specialization Course: Advance Level Course - I Educational Administration | Approaches to education administration & planning |
| B.Ed. | PC (4) : Pedagogy of a School Subject Social Sciences | 1. Prepare the Plan for practising a micro-lesson with multiple-teaching skills<br><br>2. Draw the structure of a lesson plan |

**PRINCIPAL**

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

# GULAB BAI YADAV SMRITI SHIKSHA MAHAVIDYALAYA BORAWAN

## SESSION-2021-22

SUBJECT - CC1: Childhood and Growing Up

**Assignments Topic:-**

Discuss the characteristics & problems of Childhood and Adolescence.

Guided By

DR. PARINITA RATNPARKHI

Submitted By

Name :- GAYATRI PAWAR

Class :- B.Ed 1st Year

Prof. S.K. Tiwari
*Principal*
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

**Que.1:- Discuss the characteristics & problems of childhood and Adolescence.**

**Ans: ⇒ INTRODUCTION :⇒**

Childhood is the period from birth till before puberty, when most mental and physical growth of Human beings occurs, whereas adolescence is the period starting from puberty and continues up to adulthood, During this time the development and maturation of primary and Secondary Sexual characters take place.

Adolescence is the period of transition between childhood and adulthood. children entering adolescence are going through many changes in their bodies and brains. these include physical, intellectual psychological and social challenges, as well as development of their own moral compass.

*** Child Development Stages ***

# MEANING OF CHILDHOOD & ADOLESCENCE

Child development refers to the biological, psychological and emotional changes that occur in human beings between birth and the end of adolescence, as the individual progresses from dependency to increasing autonomy. it is a continuous process with a predictable sequence yet having a unique course for every child. It does not progress at the same rate and each stage is affected by the preceding types of development.

Adolesecence the period of time in a person's life when they are developing in to an adult:-

good

1. She had a troubled adolescence.

2. yet another novel developing form childhoods to maturity growing up

Characteristic of of adolescence immature.

The child that was up to childhood tends

to be stronger, the Selfish Tendency is changed in to a feeling for other's intolerance changes to greater forbearance, clumsiness is changed in to smartness, unsocialness gives place to greater Co-operativeness.

## Duration of Adolescence:-

Normally adolescence sets in round about the age of eleven, twelve or thirteen. In girls this starts this earlier than in boys. the following periods have been mentioned for adolescence. in boy and girls.

### IN BOYS :-


* Early Adolescence - from 11 to 12½ or 13 year of Age.
* Middle Adolescence from 13 to 18 year of Age
* Late Adolescence from 18 to 21 year of Age or So.

good

## IN GIRLS :⇒


* Early Adolescence from 10 to 11 year of Age.

* Middle Adolescence from 12 to 15 year of Age.

* Late Adolescence from 16 to 20 or 21 year of Age or So.

Adolescence a strange period of life Adolescence is a strange period of life. this is a stage at which the individual is neither regarded as a child nor as an Adult.

the Adolescent faces many such situations in his life when he finds himself in a fix and is not able to know the path that he should follow. He tries to behave like an Adult and He errs. When he behaves like a child he is scolded. the adolescent feels shy in various situations this shyness is seen more in girls than in Boys.

# THE CONCEPT OF ADOLESCENCE :⇒


Preadolescence - is a stage of human development following early childhood and preceding adolescence. It generally ends with the beginning of puberty, but may also be defined as ending with the start of the teenage years.

Good

This is the period which begins with puberty and ends with the general recession of growth. it emerges from childhood and merges into adulthood. this is also known as the "teenage period". This is the period of transition from childhood to maturity.

## DEFINITION :⇒ ① G. Stanley Hall.

"Adolescence is a dynamically evolving theoretical construct informed through physiologic, psychosocial, Temporal and cultural lenses."

(9) * Adolescence is the period between the normal onset of puberty and the begining of adolthood.

* Puberty is the physical maturing that makes an individual capable of sexual reproduction.

* In the United States, it is generally from ages 12 to 19.

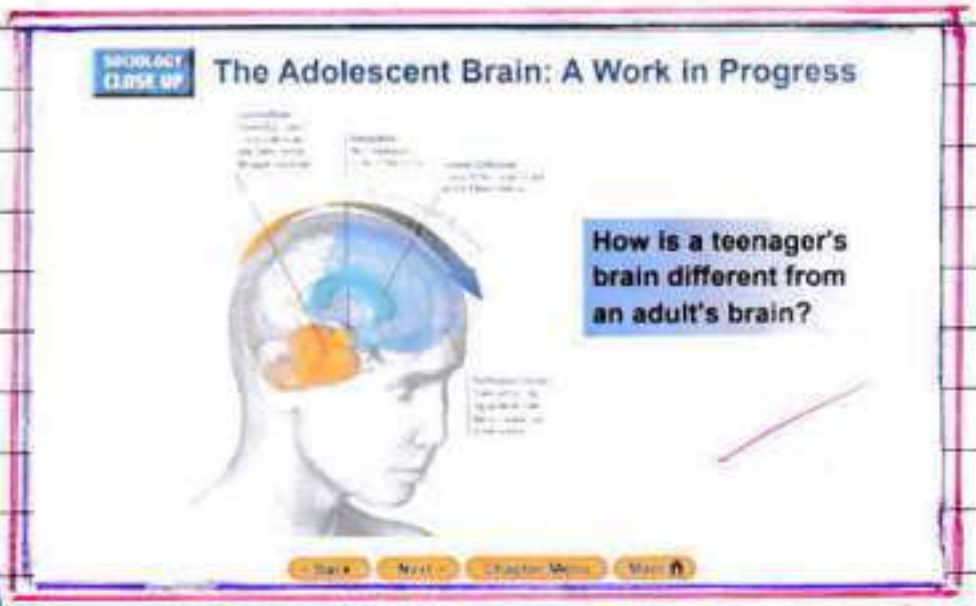


Very good

(2) Adolescence is derived from the 'latin word" adolescere" meaning to grow into maturing. the world Health organisation defines adolescence as any person between the age of 10* and 19*. It is between childhood and adulthood and is closely related to the teen age years.

# ADOLESCENCE GROWTH & DEVELOPMENT :⇒

As a part of Growth and maturity the body undergoes many changes both in men and women. Especially during adolescence, development is at a faster rate.

for the purpose of reproduction, there are some different characteristics which can be observed in boys and girls.

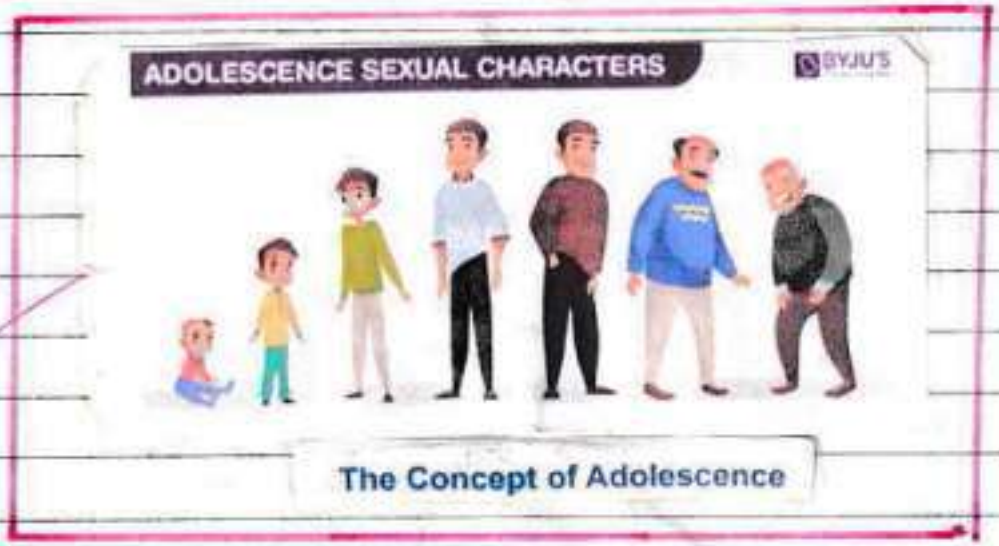


**Adolescence Growth & Development** ⇒

- → Transitional period
- → Period of change
- → Age of Search for Identity
- → Time of Unrealism

good

# CHARACTERISTICS OF CHILDHOOD & ADOLESCENCE :⇒

Childhood is the state of being a child which usually refers to the period between Infancy and adolescence. the Child labour prohibition and Regulation Act, 1986 State, " a child is a person who has not completed 14 years of age."

① During childhood, there is slow physical growth as compared to the infancy period. However, in girls, it is relatively faster.

② During the childhood stage, the child's audio and visual senses develop completely by the age of 8 and 9.

③ This is also the period when children tend to develop various interests but they do not necessarily have to be permanent interests.

④ Childhood is also the period when children witness some rapid changes in their social behavior.

⑤ According to piaget, childhood is a period when children also develop the sense of what is right and what is wrong through adults.

(6) Childhood is the stage when there is a rapid development of memory and imagination as well.

(7) In this stage, children try to imitate their elders and develop interest in collecting things.

## CHARACTERISTICS OF ADOLESCENCE :⇒

Adolescence is a transition period between childhood and adulthood. It is one of the most critical periods of development, Adolescence is a period of rapid growth and development concerning physical, mental, social, emotional, sexual etc.

**Five characteristics that generally apply to all Adolescents. ⇒**

1. Biological Growth & Development
2. Undefined Status
3. Increased Decision Making
4. Increased pressures
5. Search for self

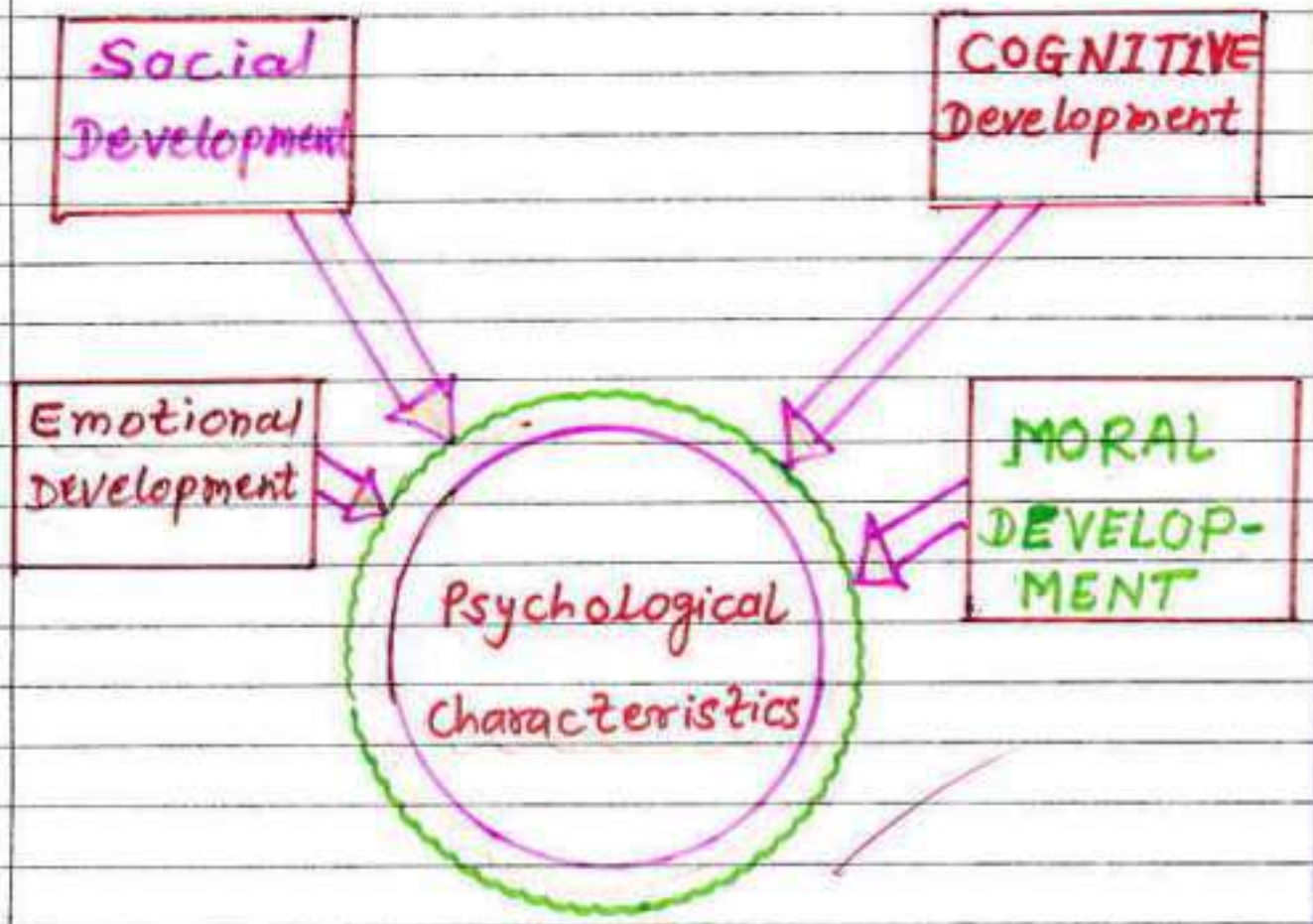


good

1. Biological Growth & Development :=>

- the beginning of adolescence is typically marked by the onset of puberty.

- Teen will experience growth, Voice change

- Almost all teenager's develop Some form of acne.

- These changes Sometimes Cause anxiety Of embarrassment which is particularly

true when the physical development of the individual is much faster or slower than other of the same age.

2. Undefined Status :=>

- The Expectation of adolescent is often vague. Some adults will treat adolescence as children while others will treat them as adults.

- It Can be difficult for adolescencs to determine their Status.

## Special characteristics of Adolescents:-

After acquainting ourselves a little with the Growth and development pattern of the adolescent, it is worth while to point out some of the special characteristics of adolescence.

1. Perplexity with Regard to Somatic Variation :—

2. Intensification of Self Awareness :—

3. Intensification of Sex consciousness:—

4. Independence V/S Dependences :—

5. Peer - Group Relationship :-

6. Vocational Choice and Need of Self Support :-

7. Trust the most on yourself :-

8. Role of friends Group :-

9. Adolescence is a time of Search for Identity :-

10. Adolescence is the threshold of Adulthood :-

## PROBLEMS OF CHILDHOOD AND ADOLESCENCE:-

Adolescence is a phase when children go through Several Changes as they Journey from childhood to maturity. It is also a Vulnerable time for children Since they may experience Several problems of adolescence, Such as unhealthy behaviors, which may lead to Significant problem later in life.

### 1. physical changes :-

: Development of full breasts in girls Can be awkward in the beginning. Girls may Start to feel Conscious about their figure.

- change of voice and appearance of facial hair in boys is perhaps the most prominent change that takes place during adolescence.

## 2. Emotinal Changes and problems :-

Hormones affect your teenager not only physically but also emotionally.

Adolescence is the age between adulthood and childhood.

## Challenges of Adolescence :-

- Adolescents in American Society experience a number of Social challenges related to Sexual behavior, drugs, and Suicide.


What are some of the difficult decisions that adolescents face in their lives?

- Teenagers who engage in early sexual activity face Serious health challenges. including pregnancy and Sexually transmitted diseases.

good

## Conclusion and Recommendations :⇒

The needs of children form the basis for a universal set of standards by which all children should be treated in order for them to achieve their full potential for health and development.

The Convention on the Rights of the Child Condities these needs and acknowledges them as human rights which all children are entitled to have fulfilled. Children' rights cannot be realized Unless adults with responsibilities for children's take the necessary action to make them a reality.

Many adolescence may experience stress, hypertension during this phase, especially when they perceive a situation as dangerous, difficut, or painful and they do not have the resources to cope. often the causes of "Conflicts at Adolescence in teenagers and adolescents" are more mental than physical.

good fatepel

## Refrence Books :—



1. Aggarwal J.C. (2008) psychology of Learning and Development Delhi Shipra publication.
2. Sharma. R.N (2008) Child psychology and development (1st ed) Gurgoan: Shubhi Publication

GULAB BAI YADAV SMRITI
SHIKSHAMAHAVIDHYALAY,BORAWAN

**B.Ed: 1st Year**

***Subject: Assignment***

# Education in India: status problem& Issue

**Session: 2021-22**

Very good


**Submitted By**
**Kavita Parihar**
B.Ed Student

**Submitted to**
**Mr.Manoj Kaushle**
Assistant Professor


Prof. S.K. Tiwari
***Principal***
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

**Que 1:-** What is the educational importance of Co-Curricular activities in School programmes? How Can effective Co-Curricular activities be organized in Schools?

**Ans:-** **Introduction :=>**

Co-curricular activities are ~~and~~ Integral part of Curriculum. which provides educational activities to the Students and thereby help in broadening their the activities that enhance and enrich the regular curriculum during the normal School hours. All Co-curricular activities are organised with Specific purpose which vary according to the nature and form of Such activities.

Co-Curricular activities may seem to be unimportant in School life. But involving students in Such activities fosters their Social and intellectual growth. today almost all Schools are prioritizing balance between academics and Co-Curricular activities.

"The participation in co-curricular activities was more likely to produce wholesome and attractive personalities than routine class work"

J. R. Shannon

good

## * Meaning of Co-Curricular activities :=>

Co-Curricular activities earlier known as Extracurricular activities are the Components of non-academic curriculum that help to develop various facets of the personality development of the child and students. for all-round development of the child a need for emotional, physical, Spiritual and moral development, physical spiritual & psychologycal development, that is Complemented and Supplemented by Co-Curricular Activities.

In modern times educationists have agreed on this matter that if these activities are demonstrated properly they would prove to be great educational Importance.


good

## Aims of Co-Curricular Activities :→

It is a strong demand of democratic Society that its youths should avail laboratory of Social experiences in wich they may utilise democratic theories taught in classroom. thus the stress may be put on group activities opportunities of Contact between teacher and child and those activities in which child may get domocratic experience by Participating, objectives of these activities are as under :-

1. To make moral feeling high of total educational programmes of School and its personnel.

2. To Provide Self-government to Student, and valuable experiences in the use of democratic processes so that they may have skilled democratic citizenship.

3. To develop Self-government to Student the feeling of cooperation and Co-existence in the children Coming from various atmospheres, and to make them one emotionally So that the path of National Integration may be made wide.

good

4. To improve relations of School and Society together and to encourage Society for taking interest in programmes of Schools.

5. To help children for their allraund development.

6. To prepare children for proper utilisation of their leisure.


Very good

## Importance of Co-Curricular Activities:-

These activities of schools are life strength of theirs. they are very much important for children in their lives because they play important role in the development of their personality. their becomes physical, mental, ethical and social

development of children through these activities, the Secondary Education Commission expresses its views regarding importance of their activities that they provide opportunities to children for developing their personal qualities, capabilities and self-confidence. Along with these, they import training to children in discipline and associate

## 2. Helpful in Supply of personal Needs :-

Each individual has a fundamental need to be acknowledged by others. Along with it he wants Security also. feeling of Security expects it that he should be given assurance by the Society.

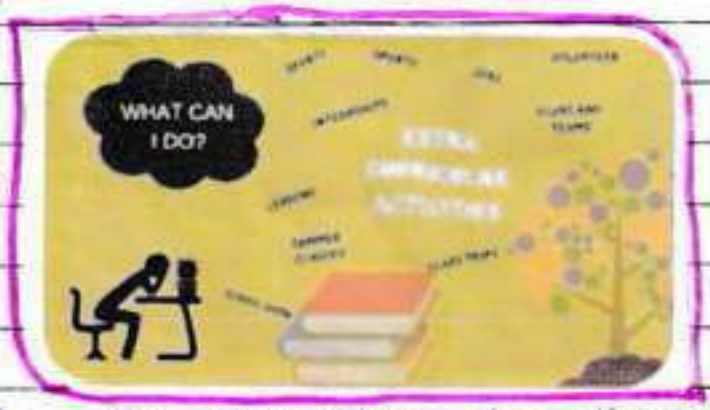


Programme of student activities provides very much help in supply of these fundamental needs. In addition to these requirements, that programme also supplies self-expression understanding of knowing self and others to make wide self-liking controlling power of self-activities and needs adapting in new situations.

Very good

## 2. Helpful in Supply of Social Needs :—

Social needs are intimately related with that of these personal needs. the use of the word "Social" has been done with the feeling of developing Satisfactory relation with others. Each individual experiences the strong feelling of developing Capacity to work others and to establish relations with others.

## 3. Civil Training :—

Programme of student activities provides very much opportunity to children for facing real situations. Services of Community and independent decision.

## 4. Supply of Needs of Adolescence :—

this age is very delicate one. In this age ample additional strength is found in child. through these activities his additional strength and instincts are diverted towards Useful streams.

## 5. Development of Ethical Qualities :—

good

By participating in these activities there becomes development of qualities of truth, fulness, honesty, Self-Confidence

Justification, Patience, firmness, submissiveness, obedience etc.

## 6. Development of Special Linkings :—

Various types of activities are very much helpful in creating special linkings in children. In schools, organised multi-purpose Societies and activities. develop potential, vocational skills, and literary linkings. etc.


Extra Curricular Activities

Good

## Types of Co-curricular Activities :-

If the study of literature regarding student activities is done it becomes clear that in secondary schools, various types of student activities are prevalent. Various educationists have tried to classify these student activities. Adgar G. Johnson and Ronald C. Faunce have divided these activities in 11 groups which are the following:-

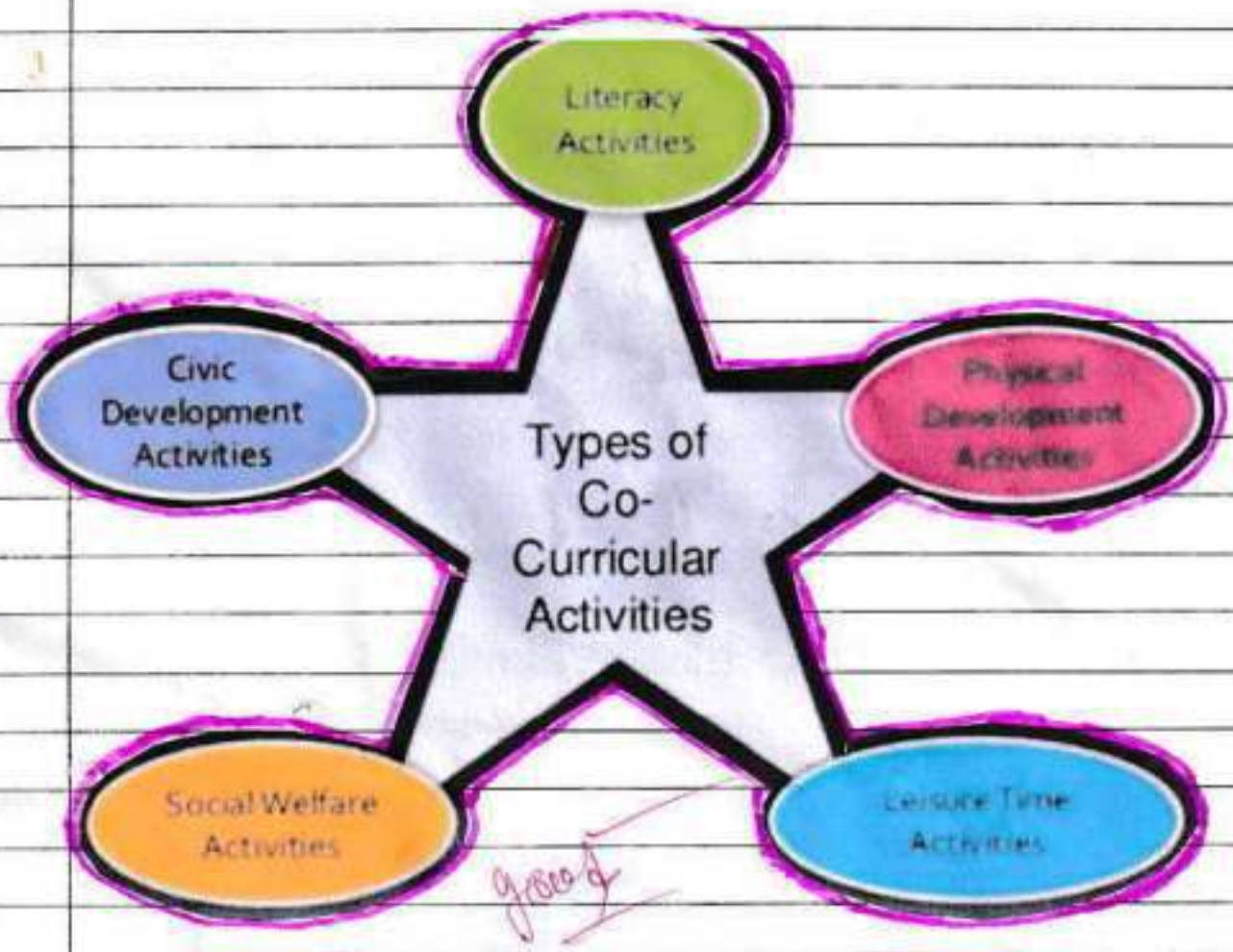


good

TYPES of CO-CURRICULAR ACTIVITIES

Activities related with participating in Management and Control of School organisation

## 2. Community Activities :-

Under this came education week, health week, literacy week, and Junior Civil clubs.

## 3. Religious and Social Welfare Clubs :-

organisation relating to religious education, Scouting, Social Service club, Junior red Cross and primary medical group.

## 4. Social Activities :-

picnic, dance, reception Committee, organization of various parties etc.

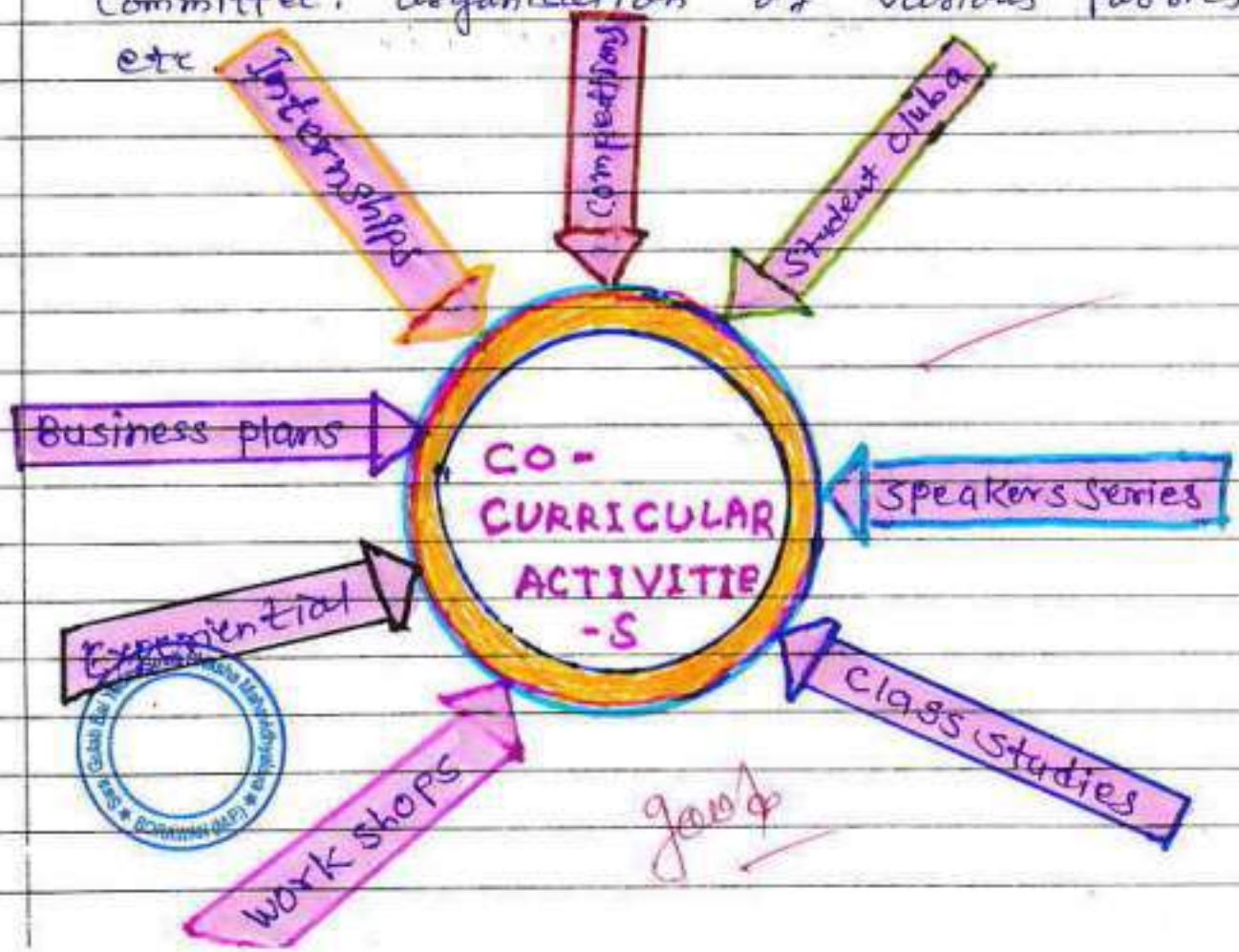


good

DATE
PAGE

## 5. Activities relating to Physical Training :-

Group Sports, indoor and outdoor games, individual games, exercise P.T. etc.

## 6. School Publication :-

School newsletter, School magazine annual report of School etc.

## 7. Activities relating to plays and lecture :-

Dramma, one act play, debating Competition etc.

## 8. Activities related with Music :-

music clubs, band Clubs and orchestra etc.

## 9. Relating to Subjects :-

mathematics, Science, Social Science, Commerce etc. group Subject.

## 10. Various clubs :-

In addition to subject clubs under it come radio, photo collection club etc.

## 11. Assembly :-

The headmasters lecture and the lectures of teachers, students or leaders of Society film show etc.

DATE
PAGE

## Conclusion :-

Co-Curricular activities are the true practical experience received to students. the theoretical knowledge gets strengthened when a relevant Co-curricular activity is organized. In the context of Environmental education Co-curricular activities have an important role.

Through the practical experience students. acquire knowledge and they use the knowledge in their life also.

## CO-CURRICULAR ACTIVITIES

Co-curricular activities take place outside of an academic curriculum but are related to academics in some way. Participation is voluntary and has no bearing on a student's grades.

### CO-CURRICULAR VS Extracurricular

① Co-curricular Activities

linked to the educational Institution but not tied to coursework and often compulsory.

② Extracurricular Activities ⇒ occur off campus and are not connected to the University or classroom instruction

### EXAMPLES

1. Debate team
2. Fraternities & Sororities
3. School Newspaper writing
4. Sudent Council
5. Cheerleading

Principal
Sva. Gulab Bai Yadav Smriti Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

— X — X —

GULAB BAI YADAV SMRITI SHIKSHA MAHAVIDHYALAYA BORAWAN

B.Ed-I$^{st}$ year

2021-22

Assignment:- Reading & Reflecting on Text

SUBMITED BY

RAVINDRA CHOUHAN

SUBMITED TO

MR. DINESH MUZALDA

Prof. S.K. Tiwari
*Principal*
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

Q:1 Write the meaning and definition of Essay, Describe the types of Essay and write essay on an one type.

Ans:- Definition:- An essay is a focused piece of writing designed to inform or persuade. There are many different types of essay, but they are often defined in four categories.

1) Argumentative Essay.
2) Expository Essay.
3) Narrative Essay.
4) Descriptive Essay.

# Meaning :- An essay is generally a piece of writing that gives the author's own argument, but the definition is vague, overlapping with those of a letter, a paper, an article, a pamplet, and a short story. Essays have been sub-classified as formal and informal. Formal essays are characterized by "serious purpose", dignity, logical organization, length. whereas the informal essay is characterized by the " the personal element, humour, graceful, style, rambling structural etc.

# ESSAY Writing

## Opening:

It is often said that.../ Many people claim that...
In this day and age.../ Nowadays.../ These days...
...is a hotly-debated topic that often divides opinion.
It goes without saying that.../ Needless to say...
The following essay takes a look at both sides of the argument.

## Introducing points:

Firstly.../ To start with.../ First of all.../ First and foremost...
Secondly.../ Thirdly.../ Lastly.../ Finally.../ Last but not least...
Furthermore.../ In addition.../ What is more.../ On top of that...
Another point worth noting is.../ Another factor to consider is...

## Presenting ideas & giving examples:

When it comes to noun/gerund...
In terms of noun/gerund...
Not only...but also...
With respect to noun/gerund...

According to experts...
Research has found that...
There are those who argue that
For instance.../ For example.../ such as...

## Expressing result & reason:

As a result, .../ As a result of noun/gerund, noun/gerund has led to/ resulted in...
Consequently.../ Therefore...
On account of noun/gerund/ due to noun/gerund
One reason behind this is...

## Contrasting:

Although/Even though subject+verb...
Despite/ in spite of noun/gerund...
Despite the fact that subject + verb...
On the one hand...On the other hand...
However.../ Nevertheless.../ Even so...

## Concluding:

To sum up.../ In conclusion...
All things considered...
Taking everything into consideration...
Weighing up both sides of the argument...
On the whole.../ By and large.../ In general...

## Opinion:

As far as I am concerned...
From my point of view...
In my opinion...
My own view on the matter is...

1) Argumentative Essays :-

⇒ An argumentative essay presents an extended evidence based argument. It requires a strong thesis statement a clearly defined stance on your topic. Your aim is to convince the reader of your thesis using evidence and analysis.

⇒ Argumentative essays test your ability to research and present your own position on a topic. This is the most common type of essay at college level - most papers you write will involve some kind of argumentation.

- The essay is divided into an introduction, body and conclusion.
- The conclusion provides your topic and thesis statement.
- The body presents your evidence and arguments.
- The conclusion summarizes your argument and emphasizes its importance.

2) Expository Essay :-

⇒ An expository essay provides a clear, focused explaination of a topic. It doesn't require an original argument, just a balanced and well organized view of the topic.

⇒ Expository essays test your familiarity with a topic and your ability to organize and convey information. They are commonly organized at college level.

3) Narrative Essay :-

⇒ A narrative essay is one that tells a story. This is usually a story about a personal experience you had, but it may also be an imaginative exploration of something you have not experienced.

⇒ Narrative essays test your ability to build up a narrative in an engaging, well-structured way. They are much more personal statement for an application requires the same skills as a narrative essay. A narrative essay isn't strictly divided into introduction, body and conclusion.

Example:-

## Importance of Education.

Better education is very necessary for all to go ahead in the life and get success. It develops confidence and helps building personality of a person. School education plays a great role in everyone's life.

The whole education has divided into three divisions such as the primary education, secondary education and higher secondary education. All the divisions of education have their own importance and benefits.

Primary education prepares the base which helps throughout the life, secondary education prepares the path for further study and higher secondary education prepares the ultimate path of the future and whole life.

Our good or bad education decides that which type of person we would in the future. It is the tool which benefits all throughout the life.

# Role of the education system

ANJALI TANEJA

**Stronger legal frameworks by the government are necessary to bridge the digital gap and ensure that children are taught to be safe online**

Almost 71 percent of the world's youth are online according to the recent UNICEF Report State of the World's Children: Children in the Digital Age. Learning materials and digital tools for youth, as the recent experience have been developed.

Across these materials can provide a space for change for the world's deprived and marginalised, provided they are able to bridge the digital divide and access the information that from really between families who be granted. Infrastructure, one third of the world's children, especially the poor and marginalised, lack the means to access the internet.

While internet penetration is increasing due to stronger mobile penetration (and progressively bigger and cheaper mobile data packs), this be quickly affects a "second level" internet experience for a significant share of the population. Similarly, children from rural communities and other hinterlands, in their mother tongues, even if they get online. This access gap amounts and amplifies existing income gaps in society and reinforces social inequalities and creates new categories of exclusion.

Simultaneously, digital technology risks increasingly exposing children to risks like bullying and many new ways that can affect them in unknown and risky cyberspace.

Parents have an obvious role to play in regard. However, considerable responsibility rests with the education system. Data from a study in India's urban and rural households shows two challenges which graphs digital divide and keeping children safe while there.

Only 20 percent elementary schools in rural India have access to computers in their classrooms. This makes it difficult for schools to act as a base for digital learning. At the same time, ICT training basic computer skills, or as an educational tool and not enough attention goes in what it takes to become a digital citizen.

Government is needed to address issues like cyber security and strengthening online tolerance and empathy in post-disruption education materials. The curriculum for stronger interventions in building teachers' and IT literacy and enable them to understand the risks and safeguards to be adopted.

While the government has made some serious efforts to support strengthening ICT facilities in schools and the use of computer aided learning under Sarva Shiksha Abhiyan and Rashtriya Madhyamik Shiksha Abhiyan, additional resources are needed to do justice to the scale of the problem.

With the annual planning processes currently underway in the States, we hope that budgets would be allocated to ensure that India's education system does its bit to bridge the digital divide and ensure that children are taught to be safe online.

Published in the print edition (28.08.2018)

Q:1: What do you mean by reading? Write the definition and meaning of reading.

Ans: Reading is the process of looking at a series of written symbols and getting meaning from them.

⇒ When we read, we use our eyes to recieve written symbols (letters, punctuation marks and spaces) and we use our brain to convert them into words, sentences and paragraphs that communicate something to us.

⇒ Reading can be silent (in our head) or aloud (so that other people can hear)

⇒ Reading is a receptive skill through it we recieve information. But the complex process of reading also requires the skill of speaking, so that we can pronounce the words that we read.

# Meaning of Reading.

⇒ Reading is defined as a cognitive process that involves decoding symbols to arrive at meaning. Reading is an active

# READING

Reading is a receptive skill. It involves understanding and responding to a text instead of producing it.

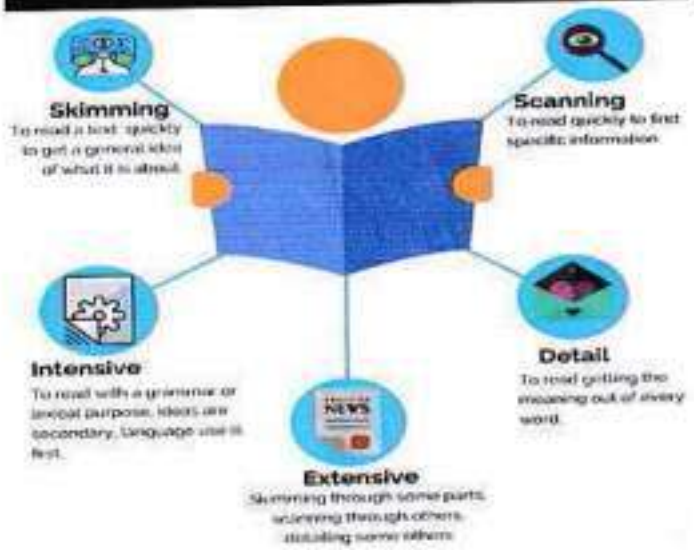

process of constructing meanings of words.

⇒ Reading is a multifacted process involving word recognition, comprehension, fluency, and motivation.

# Definition of Reading

1. Reading is the process of extracting meaning from a written or printed text.

2. According to Bottino stated that reading can be defined as a process of looking at and understanding what is written.

3. Reading is defined as the ability to read and Interpret a meaning from varied text.

4. According to schoenback, reading is a simple process reader decode (figure how to pronounce) each word in the text and then automatically comprehend the meaning of the word.

5. According to Perfetty, a reading skill is an Individuals standing on some reading assesment.

6. Reading is an activity that can add the "reader's" knowledge.

7. Reading is the process of looking at a series of written symbols and getting meaning from them.

8. Reading is an interaction between the text and the reader.

9. Reading is an active process of constructing meaning of words

10. Reading is a process that involves recognizing words, leading to the development of comprehension.

Assistant Professor
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidyalaya, Borawan (M.P.)

# GULAB BAI YADAV SMRITI SHIKSHA MAHAVIDHYALAY, BORAWAN

Session: 2021-22

M.Ed: II Year

Subject: Assignment

## Educational Research I

Submitted By

Arti sharma

M.Ed. Scholar

Submitted to

Dr.surendra Kumar tiwari

Prof. S.K. Tiwari
*Principal*
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

DATE
PAGE

Define Sampling. What are the characteristics of a good Sample? Describe the different techniques of Sampling.

Ans. Sampling is a process, wich allows us to study a small group of people from the large group to drive infrences that are likely to be application to all the people of the large group

Some time it is not feasible to study a whole group. for Example, social work Researchers might be intrested in studing the problems of the mentally challenged children, mentally ill, prison inmates, street children or some other large group of people.

It would be difficult rather impossible to study all members of these group.

That is the reason the researchers selects a sample (small group) of mentally challenged children a collects data for this study.

## Definitions of Sampling

1.) "Sampling is the process of selecting a subset of individuals or items from a large population for the purpose of studing or making interences about the population as a whole."

2.) "Sampling is a techniques used in statistics where a subset of individuals or items is

P.T.O.

DATE
PAGE

Chosen from a large group in order to gather data and make statistical inferences about the characteristics of the large group."

3) "Sampling refers to the process of selecting and collecting a limited number of individuals or items from a large population with the aim of studying the selected sample to gain insights or draw conclusions that are applicable to the entire population."

## Caracteristics Of Good Sample :-

1. **Goal-Oriented:**
A sample design should be goal oriented. It is means and should be oriented to the research objectives and fitted to the survey conditions.

2. **Reliability:**
Good sampling techniques yield consistent and replicable results. If the same sampling procedure is repeated, it should -

P.T.O.

DATE
PAGE

## Characteristics of a Good Sample

- True Representative
- Free from Bias
- Comprehensive
- Accurate
- Approachable
- Feasible
- Good Size
- Goal Orientation
- Economical
- Practical

V. good

DATE
PAGE

Produce similar outcomes, ensuring the reliability of the findings.

3. Representativeness:

The Sample should accurately represent the population under study. It should include individuals or items that reflect the characteristics and variations present in the population, allowing for valid inferences and generalizations.

4. Ethical Considerations:

Ethical sample practices involve obtaining informed consent from participant, ensuring privacy and confidentiality, and protecting the rights and well-being of the individuals involved in the study.

5. Practicaly and efficiency:

Good Sampling should strike a between accuracy and practicalty. It should be feasible in terms of time, cost, and reasources, considering the reasearch objectives and constraints.

6. Actul information Provider:

A sample should be designed so as to provide actual information

DATE
PAGE

required for the Study and also Provide an adequate basis for the measurment of its own reliability.

7. Adequate Sample Size:-

The Sample size Should be Sufficiently large to provide reliable and precise results.
A large sample generally reduces the margin of error and ~~mere~~ increases the statistical power of study.

8. Economical:-

A Sample Should be economical. the objective of the survey should be achived with minimum cost and effort.

9. Random Selectiven:

A sample Should be Selected at random. This means that any item in the group has a full and equal chance of being Selected and included in the Sample. This makes the Selected Sample truly representative in character.

DATE
PAGE

# TYPES OF SAMPLING METHOD TECHNIQUES

There can be many method to drive a sample from a given data. The problem, its scope and nature will determine the method used by the researcher but there must be a careful consideration given to the choice.
As mentioned in the previous unit that the sampling techniques can be broadly categorized into two:-

- Probability Sampling
- Non-Probability Sampling

Good

## Probability Sampling:-

As mentioned, it is a sampling technique in wich each element of the selected or has an equal probability of selection and this is because of randomization and It has the following types.

DATE
PAGE

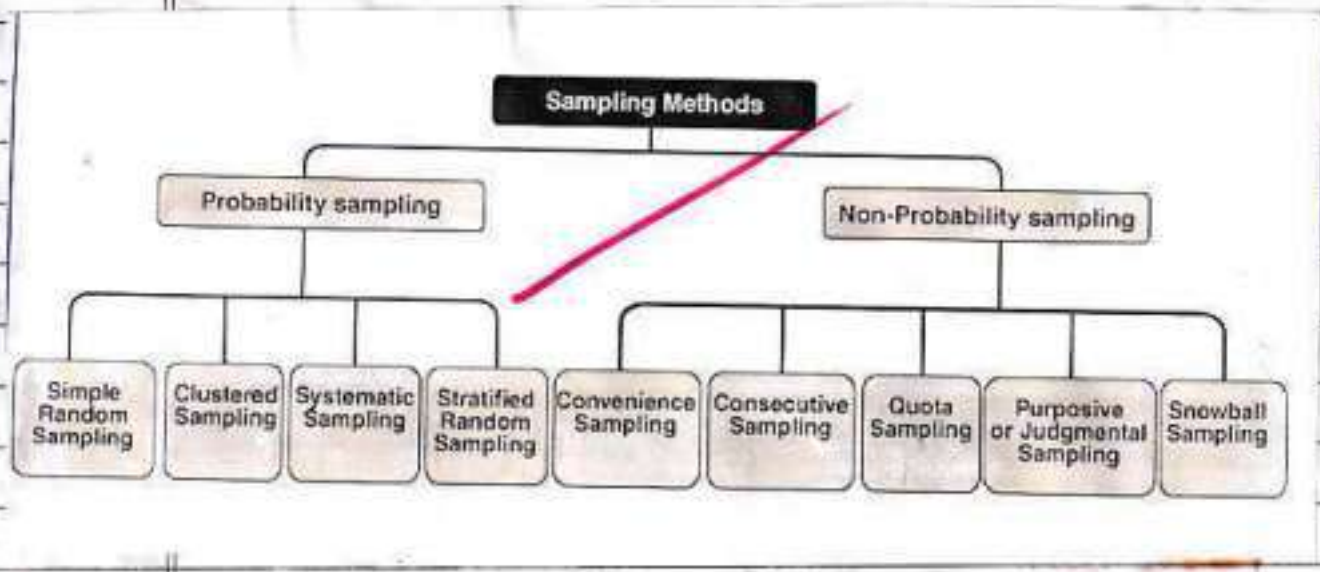


V. good

DATE
PAGE

## Simple Random Sampling:

In Simple Random Sampling technique, every items in the population has an equal and likely chance of being selected in the sample. Since the item selection entirely depends on the chance, this method is know as "Method of chance Selection" As the sample size is large, and the items is chosen randomly, it is know as "Representative Sampling"

**Example:-**

Suppose we want to select a sample random of 200 students from a school, Here, we can assign a number to every student in the school database from 1 to 500 and use a random number generator to select a sample of 200 number.

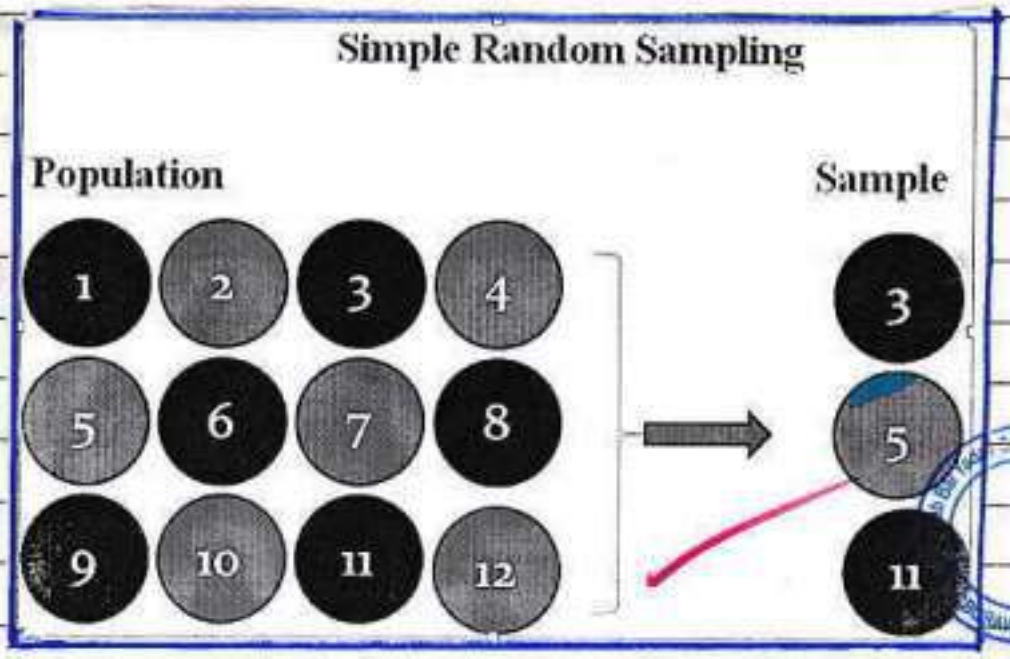

DATE
PAGE

## Stratified Sampling

In a Stratified sampling method, the total population is divided into smaller groups to complete the sampling process. The small group is formed based on a few characteristics in the population. After seprating the population in to a smaller group, the statisticians randomly select the sample.

⇒ For Example -

There are Three bags (A, B, & C) each with different balls. Bag A has 50 balls, bag B has 100 balls From each bag proportionally. Suppose 5 balls from bag A, 10 balls From bag B and 20 Balls From bag C.

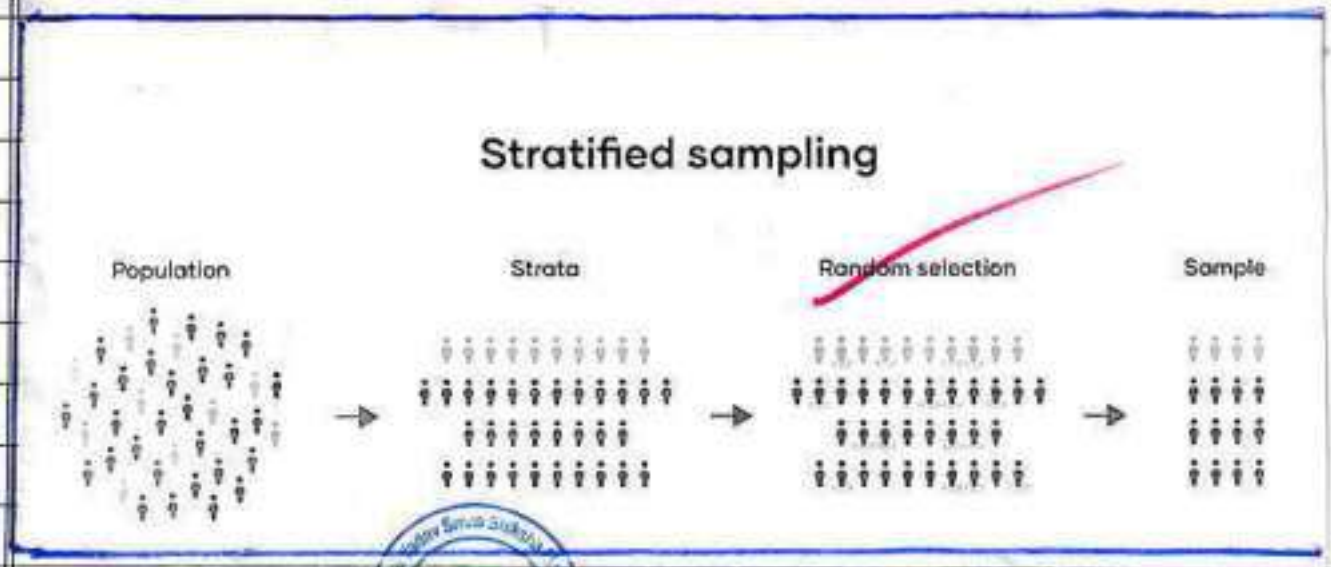


Fig-

DATE
PAGE

# Cluster Sampling

When the total population is Bifurcated into cluster or sections and then Selections are Chosen randomly, it is called Cluster Sampling. All the units in a given cluster are Surveyed. These Clusters can be determind on the basis of age, gender, Geographical presence, etc. Cluster Sampling is preformed using following methods.

## Single stage Cluster Sampling -

We choose the whole section for Sampling.

## Two Stage Cluster Sampling -

Firstly the Section is randomly chosen and then the element are selected randomly for Sampling.

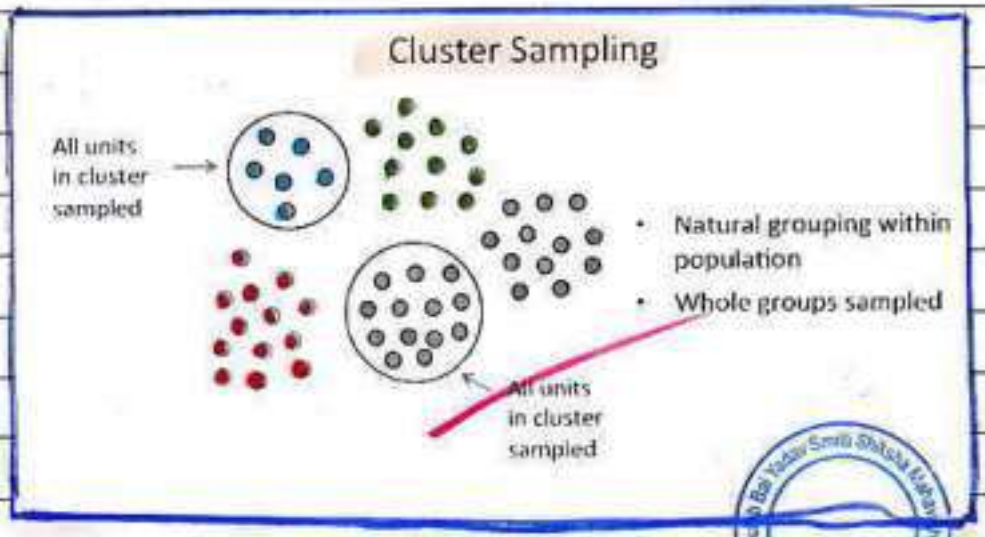


Good

from the frist subgroup. If we select $n1=2$

$n2 = n1 + k = 2 + 10 = 12$

$n3 = n2 + k = 12 + 10 = 12$

## Multi-stage Sampling

It combines two or more methods that have been explained above. In this type of sampling the total population is split up into various clusters and these are further split and put together in multiple subgroup or strata based on common characteristics then we can randomly choosen a single cluster or multiple cluster from each stratum and this process will go on till the cluster connot be fragmented any further. To illustrate, we can split the population of country on the basis of there states, district, urban vs rural and the Homogeneous area can be joined to from a strata.

## Entire Data

District — Stage-1
villages — Stage-2
Acres of Land — Stage-3

DATE
PAGE

# Systematic Sampling-

In this Type of Sampling with the Exception of the first element. There is a regular interval in the population at which these element are chosen. All these elements are Sequenced first where in each of them gets ~~of them~~ an equal Probability of being Chosen.

## For Example:

For Sample size denoted as "n" we fragment our population (with ~~S~~ size N) into subsets of k element. Then we choose the other elements of the Sample, We know number of elements in each group is k i.e. N/n

So let us keep the first elemets as n1

Second element would be n1+k i.e n2;

Third element n2+k i.e n2;

for example of N= 100, n=10

No elements in each of the subgroup is N/n i.e. 100/~~100~~10 = 10 = k

Now, randomly choose the first elemets

DATE
PAGE

# Non Probability Sampling

The non probability Sampling method is a Technique in which the researcher selects the sample based on subjective ~~judg~~ Judgment rather than the random selection. in this method not all the members of the population have a chance to participate in the Study.

## Types of Non probability Sampling

- Purposive Sampling.
- Judgement Sampling
- Convience Sampling
- Quota Sampling
- Snowball Sampling

## Purposive Sampling

In purposive Sampling, the samples are selected only based on the researchers' knowledge As their knowledge is instumental in

in creating the Sample, there are the know changes of obtaining highly accurate answers with a minimum marginal error. It is also know as Judgement sampling or authoritative Sampling.

## (6) Judgment Sampling:-

Judgment sampling is Non Probability Sampling technique where researcher selects subject to be sampled Based on their knowledge or professional judgment. It is used when a sample is taken based on certain judgements about the over all population.

The underlying assumption is that the researcher will select subject that are characteristic of the population. The critical issue here is objectivity: how much can judgment be relied upon to arrive at a typical sample?

To understand it further, let us consider the following title of the research.

A Study of Causes of Unrest among Teachers of Aligarh muslim University.

DATE
PAGE

## Convenience Sample Technique

In convenience Sampling method, the sample are Selected from the Population directly because they are convenienty available for the researcher. The sample are easy to Select, and the researcher did not Choose the Sample that outlinesS the entire Population.

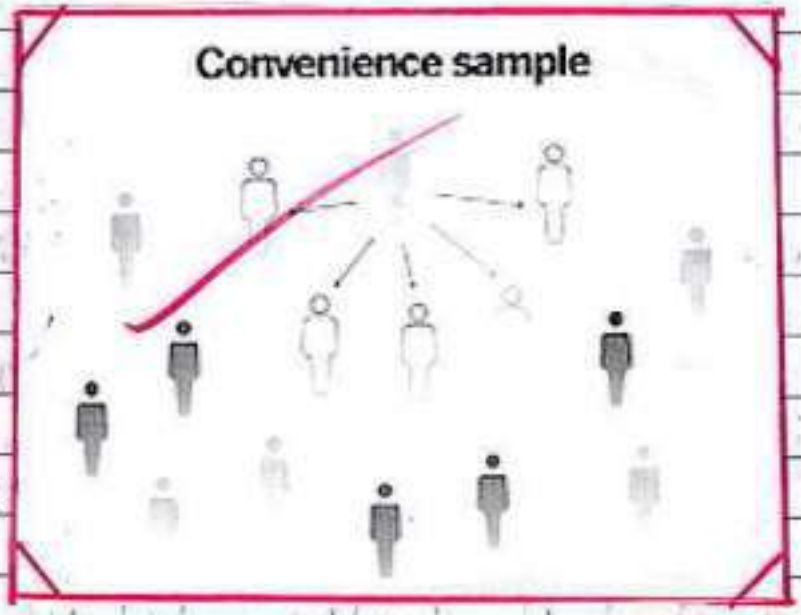


## Quota Sampling

in Quota Sampling method, the researcher forms a sample that involves the individuals to ~~research~~ Represent the population based on specific traits or qualities. The researcher Chooses the Sample Subsets that bring the usefull collection of data that generalizes the ~~entire~~ entire Population.

# QUOTA SAMPLING

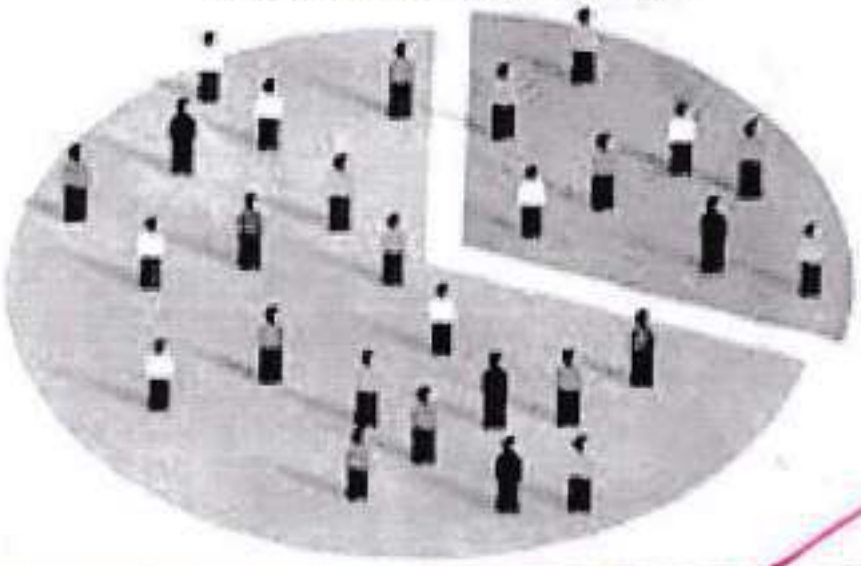

## Snowball Sampling

Good Snowball Sampling is also know a chain-referral sampling technique. In this method the samples have traits that are difficult to find, so each indentified member of belong to the same ~~tog~~ targeted population.

To understand it further let us consider the following title of the research.

A study of Home related problems of Illegal Drug users of Lucknow.

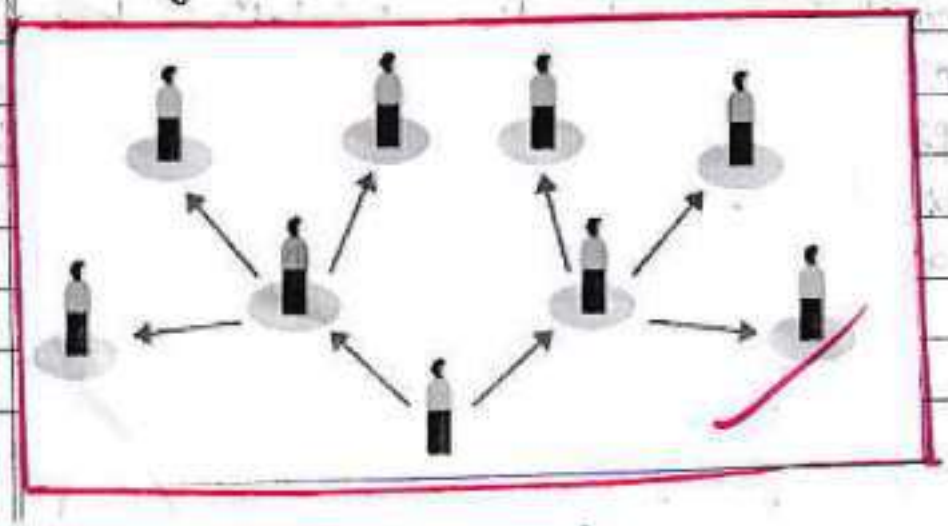

DATE
PAGE

Reference


1. Sansanwal. D.N., (2020): Research methodology and applied Statistic. Shipra, Publications, Delhi

2. egyankosh.ac.in ignou module

3. Rabin K. Som (1996) practical Sampling technique: Heinemann educational Book, London


V. Good

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

Swa. Gulab Bai Yadav Smriti Shiksha Mahavidhyalaya BORAWAN (M.P.)

# GULAB BAI YADAV SMRITI SHIKSHA MAHAVIDHYALAY, BORAWAN

**Session**: 2021-22

**M.Ed: II Year**

**Subject: Assignment**

# Educational Administration

Good

Sethi

Submitted By

AMISHI SETHI

Submitted to

Dr.surendra Kumar tiwari

Prof. S.K. Tiwari
*Principal*
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

Swa. Gulab Bai Yadav Smriti Shiksha Mahavidhyalaya BORAWAN (M.P.)

DATE
PAGE

Q. Approaches to education Planning & Administration

Ans →

# APPROACHES TO EDUCATIONAL ADMINISTRATION & PLANNING

Resources in the best environment but rarely surplus. Similarly, when it come to a nation like In resources are limited when compared to the demographic needs. Educational Planning come handy in such selling as it is concerned with the essue of making the best use possible with limited educational resources. The distribution of Resources depend on the different Priorities of education at different Sages Combined with the economic needs of the country As per Adesina (1982), three rival approaches are present in terms of educational planning which are follows:

1. The Social demand approach
2. The manpower requirement approach

DATE
PAGE

## 3. Rate of Returns Approach/ Cost Benefit Analysis approach.

### 1). The Social demand approach

The Social Demand approach requires the education authorities provide schools and find facilities for all students who demand admission and who are qualified to enter.
Aghenta (1987) opined that this approach looks on education as service demanded by people just like another social service.
Politicians in development countries often find the approach expedient to use because of its appealing nature. This approach was used in the Robbins committe Report on Higher Education in Britain. In India too, this approach is a popular one while opening new schools and colleges in particular.

**In this method are involved the following steps**

* To estimate the proportion of student completing school education and are likely to enter into higher education.

* To estimate how many those successful school leaving student would actually apply for admission to colleges.

DATE
PAGE

* To determine how many of the applicaticant should be given Adrission to higher education.

* To determine the length and duration of the study.

v. Good

Fig. 01 Social demand approach

## Advantages of the Social demand Approach

1). The approach provides the Planners with approximate number of Places where educational facilities has to be Provided.

2). It is a Suitable Political tools to meet the

need to satisfy the demands of the general public.

3) Where resources are acutely limited, and where we are seeking to provide those kinds and quantities of education will offer the greatest good to the greatest number, such planning techniques are best.

## LIMITATIONS OF THE APPROACH

- The approach has no control over factors such as the price of education.
- The approach has no control over absorptive capacity of the economy for the trained personnel.
- The approach does not in any way lay claim to whether the resources expended are economically allotted and to that extent, the approach is poor.
- The approach does not provide guidance we need as to how best to meet the identified needs.

Shrinath
Date
Page No.

# 2 The manpower Planning approach or Human Resource Development approach

The manpower approach deals with Human Resource development; Thus the focus is to forecast the manpower need of the economy of the Particular country or at global level depending on the context. this approach states that manpower is changeable and can be customized according to the Social, technical and economical development of the Society. manpower is the most forceful, significant and active function of the educational system of nation.

In other words, this approach is the economic system with the vocational qualified personnel required at all levels. Thereby this approach focuss on the vocationalization of education and other ideas such as Skill-Based Education and multiple educational courses, leading to the fulfillment of manpower Requirement of the nation. Based on manpower needs of the country this approach calculates the kinds and levels of education necessary to meet these requirements.

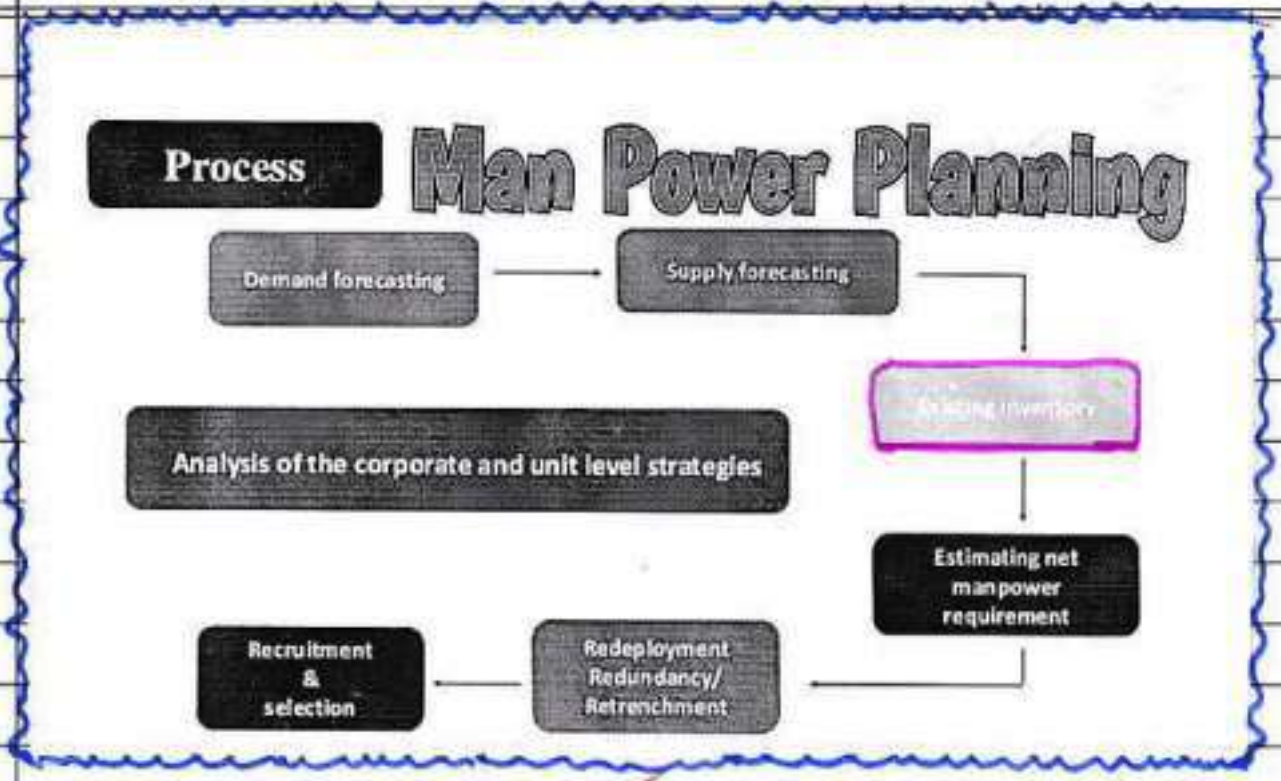


Good Fig. 2 - man power approach

## Advantages of Manpower Approach

<1> Man-Power Could usefully Call attention to extreme gaps imbalances in the education out-put pattern that need remedy. this does not need elaborate Statistical studies.

<2> It Gives educators useful Guidance on how roughly educational Qualifications of the labour force outht to be developed in the future. that is a the relative proportion of people who would have Primary education, Secondary Education

Shrinath
Date
Page No.

and various amount of post-secondary training.

<3> The unemployment and underemployment which may result from some over-emphasis on man-power approach may become a challenge to move towards the right kind of education which may be development-oriented, and thereby creating its own job.

## Weaknesses Of the Approach

1. It give educational planner a limited guidance in the sense that it does not tell what can be actually achieved in every level of education e.g. primary education, secondary education, etc.

2. The approach says nothing about primary education, which is not considered to be work connected. By implication, manpower approach suggests the curbing of the expansion of primary education until the nation is rich enough to expand it.

3. It is impossible to make reliable fore-cast of manpower requirements far enough ahead of time because of many economic, Techn. and other uncertainties which are involved.

# 3 Rate of Returns / Cost Benefit Analysis Approach

Different Terminology is used to define that rate of Returns approach, which is as follows:-

1. Cost Benefit Analysis
2. Cost effectiveness Approach
3. Rate of Return Approach
4. Cost Benefit Approach

According to this approach, investment in education should take place in such a way that the return from the investment are equal to the returns from other kinds of investment of capital, e.g. investment in industry. this principle is known as "equi-marginal returns" in economic theory and could be extended to educational sector.

this approach treats education as an investment in human capital and uses rate of

return as a criterion in allocation of financial resources. The approach implies that if the rate of return is low expenditure on education should be curtailed.

However, in reality, it is difficult to apply this approach to education due to problems associated with measuring rate of returns in education.

## Advantages of Rate of Return Approach

1. It is possible to measure or quantify that increase in productivity of an educated person used this approach, by looking at the age earnings structure of the educated person.

2. It shows the connection between the cost of gaining more education and the increase in imbursement which results from additional education.

3. The analysis can show or propose the direction in which education system of a society should expand so as maximize the earning competence of its citizens.

Shrinath
Date
Page No.

# Limitations of Rate of Return approach

1. At time "Salaries reflect Productivity" may be a wrong assumption.

2. It is not easy to quantify the advantages that are obtained from investing in any type of education.

3. Differentials in the workers income cannot be accredited to additional education acquired in development countries. It can be attributed to other aspects like family background, habits, primordial factor and customers.

4. Some Studies of the view that Primary education Provides the highest returns. to the Society on the basis of calculation of Social returns rate for all education levels. However, this approach does not agree to the Same.

Good

Swa. Gulab Bai Yadav Smriti Shiksha Mahavidhyalaya BORAWAN (M.P.)

Pr. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

# GULAB BAI YADAV SMRITI SHIKSHA MAHAVIDHYALAYA, BORAWAN

**B.Ed. I Year**

2021-22

## *Subject: Pedagogy of Social Science*

**Assignment Topic**

1. Prepare the Plan for practising a micro-lesson with multiple-teaching skills
2. Draw the structure of a lesson plan

Submitted By

Roshni Kewade

B.Ed I Year

Submitted to

Shrawam Kumar Sing

Asst. Professor

Prof. S.K. Tiwari
*Principal*
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

Page No.
Date

# Index

Why should a teacher plan his lesson before going in the class room? Name the characteristics of a good lesson' plan.

Ans-

## Significance of Daily Lesson Planning

Planning is essential not only in teaching but in all spheres of human activity. Probably there is no type of work where the results of poor planning are so devasting as in teaching. R.L. Stevenson said, "To every teacher I would say, "Always plan out your lesson beforehand but do not be slave to it." Bagley has put it thus, "However able and experienced the teacher, he could do never without his preliminary preparation." To be effective, every intelligent worker plans out his work. A surgeon diagnoses the case, prepares his surgical instruments before he puts the patients on the operation table. A lawyer makes attempts to anticipate and prepare for every move in the court, so must a teacher plan and prepare his work.

## * Definition of Lesson Plan:

L.N. Bossing has given a comprehensive definition of a lesson plan, " Lesson plan is the title given to a statement of achievements to be realized and the specific means by which these are to be attained as a result of the activities engaged during the period."

## Structure of a Lesson Plan :-

Bining and Bining observe, " Daily lesson planning involves defining the objectives, selecting and arranging the subject and determining the method or procedure"

## What a Good Lesson Plan should Include :-

A lesson plan indicates the aims to be realised by teaching a lesson, the methods to be employed and the activities to be undertaken in the class so that it is engaged for the realisation of the aim. A lesson plan is actually a plan of action. It includes:

* The working philosophy of the teacher
* His information and understanding of his pupils

Page No.
Date

* His comprehension of the objectives of educati
* His knowledge of the material to be taught
* His ability to use effective methods of education.

A lesson plan is the programme of the teacher which indicates class contents the subject matter and also the method of d it well. The lesson plan reflects the teache skill, intelligence, ability and his persona

"Essentials of Good lesson Plan"

Generally speaking the following are the char eristics of a good lesson plan

1. * It should be written :-
A lesson plan preferably be written and should not remain at oral o mental stage. Writing helps in clarifying thoughts and in concentration.

2. * It should have clear aims :-
The lesson plan shoul clearly state the objectives, general, and specifiche be achieved.

3. * It should be linked with the previous knowleds
The plan should not be

the lesson remain an isolated one. It should have its basis on the background of the class. It should grow out of what the pupils have already learnt.

4. * It should show techniques of teaching :-> It should state clearly the various steps that the teacher is going to take, and also various questions that he will ask.

5. * It should show illustrative aids :-> The illustrative aids to be used should be shown in the lesson plan.

6. * It should contain suitable subject matter :-> The materials of instruction or subject matter should be carefully selected and organised.

7. * It should provide for audio-visual aids :-> To motivate the lesson, there must be a provision for audio-visual aids.

8. * It should be divided into units :-> The plan should be divided into units, but

care should taken to see that the lesson remains an integrated whole and every unit develops from the previous and submerges into the next one.

9. ★. It should provide for activity -> The children must be given enough scope to be active. It should not make them mere passive listeners.

10. It should provide for individual differences The plan must be prepared in such a way as it does full justice to all the students of varied capacities

11. ★ It should be flexible -> The plan is a means and not an end. It is wrong to follow it slavishly. It is an instrument and should be used as such. The teacher should be prepared should be prepared to change his teaching methods from those as referred to in the plan, if need be.

12. It should include summary -> The lesson plan should include the summary of the whole lesson which is to be built up on the blackboard with the of the students.

13. It should include assignment :-
A good lesson plan cannot be thought of without any assignment for the children. The assignments may be in the form of recapitulatory questions or home task.

## Advantages

1. Opportunity of Preperation :-
Lesson plan gives opportunity to the teacher to prepare the lesson he is going to teach. He gets full knowledge and information of the facts needed in the lesson.

2. Delimitation of Field :-
The lesson plan delimits the whole work of every period. The teacher knows that he has to complete the lesson in a single period and therefore, he prepares the plan accordingly.

3. Solution of Expected Difficulties :-
The teacher forsees ~~varies~~ various difficulties which he has to come across during the lesson, He therefore, finds out solutions of such difficulties before hand.

4. Provision of Illustrative aids :-
When he makes the plan he can prepare and collect various illustrative aids which cannot be arranged properly during the lesson.

5. Organisation of Lesson :- It gives opportunity to the teacher to organise his scheme of work for every period properly. He can think of of all steps of the lesson exhaustively and arrange the teaching material in a proper way. He can think of questions which he has to ask during introduction and also during the process of lesson. He may give due emphasis to recapitulation and other aspects. He does not work in a haphazard way if has planned the lesson.

6. Confidence to the Teacher :-
Planning gives confidence to the teacher. sometimes very experienced teachers are seen cutting sorry figures in the class during the process of a lesson because they were not prepared for the lesson properly. New entrants cannot do well in this respect without advance planning and preperation.

7. Improvement in the study habits of the teacher.

8. Continuity to the work of Teaching →

Planning gives continuity to the work of teaching. The teacher makes the previously taught lesson the base of his planned. And he completes between the lesson in such away that the planned lesson may be the basis of still further teaching work.

9. The problem of Home Task is solved ! →

The problem of home-task is very troublesome. It is solved to a great extent by planning the lesson. The teacher prepares suitable assignment for this purpose. He provides due time for checking the home task of the children.

# Lesson - Plan

Name :→ Vineet Sharma Date
School :→ Priyadarshini Public School Boravan Time
Class :→ 6th
Subject :→ Social science
Topic → "The primitive Man" (History)

Teaching aids :→ Pictures, of early man and general material aids.

General Aims :→

* To give some knowledge of the past history to the students inorder to understand the present and to develop their sense of reasoning and judgement.
* To acquaint the students with the changes in their social environment with the march of time

Specific Aims :→ • To give the history of the all round development of the earlyman before acquiring the present social status.

Previous knowledg :→ The student are expected to to know that about the formation of the earth and the evolution of man.

Introduction :→ Some questions will be asked to the students—

* How was earth formed?
* What was there on the earth at that time?
* How did the early man live?

Statement of Aim :→ Well students, today we shall study " How did the primitive man live and feed himself before he reached the modern era.

Presentation :→

| Matter | Method | S. Behaviour | B. B Work |
|---|---|---|---|
| The early man was very ugly & clumsy. He used to wander lonely and had little sense of society. He was naked. | The student teacher will follow the story method. The following questions will be asked * What was the facial appearance of the early man | Ans- The early man was very eagly | |

| Matter | Method | S. Behaviour | B.B.W |
|---|---|---|---|
| because he had no sense from where to obtain the cloths for himself he had neither home nor ways of livelihood | * Why did he not use the cloths? | Ans - He had no sense. | |
| | * Why did he hide himself in trees & caves? | Ans → He was very much afraid of animal. | |
| He used to live in the caves and hide himself in the leaves of the tree because he was very much afraid of Animals | * What sort of weapons did he use for his defence. | Ans. He used only wooden sticks for his defence as weapons. | |
| He used only wooden sticks for his defence as a weapon. | | | |
| Food & Cloths | The picture showing the different stages of the development of the man. | | |
| To satisfy his hunger, he used to eat the leaves of trees, herbs, raw vegetable and uncooked meat | * Why did he eat the leaves. | * To satisfy his hunger. | |
| To avoid heat & cold, he used to wrap the bark of trees and skin of the animals, round his body. | * How did he defend himself against cold & heat. | Ans → He used to wrap the bark of trees and skin of animals. | |

| Matter | Method | S. Behaviour | B.B. Work |
|---|---|---|---|
| By and by, he felt the need of fire in order to avoid himself from the heat and cold and for cooking the food. Necessity — — — — experience — — — — produced by — — — — fire — — — wooden process — — — — obtained — for roasting animals. | * Why did he feel the neccesity of fire? * How did the early man obtain fire? | * In order to avoid himself from heat & cold and cooking food. * It produce by striking the stones together. | |
| Houses Gradually, he felt the neccesity of houses and learnt to construct huts. These huts were made of mud with thatched roofs | * Why did he feel the neccesity of houses. | * To save from heat & cold. | |

| Matter | Method | S. Behaviour | B.B. Work |
|---|---|---|---|
| It's due to the improvement in the construction — — — — — buildings. | * Why did he not construct pucca house? | * Lack of availability of the things | |
| Professions The man in — primarily — — — hunting weapons — — — spear etc. | * What was needed by him to satisfy his hunger | * He had to get meat to satisfy hunger | |
| Gradually, he tamed — — — — During that period — — — sheep and goats — — — which he got from the She | * Why did he feel the need of taming animals. | * Becaus too much work he used to tame animals | |

Page No.
Date

Recapitulation :→ The following question will be put to the students in order to revise the whole lesson:

(i) How did the early man get his food?
(ii) Why did he feel the need of the houses?
(iii) Why do you know about the professions of the early man?

Home Assignment :→

The student will be asked to write the story of the primitive man in their note books at home.

Student Teacher's sign

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

# 4. Preparation of term paper

| S.No. | Subject | Assignment |
|---|---|---|
| B.Ed. | **B. Ed. First Year- All Courses** | 1. Prepare a term paper describing how the inputs from the seven courses in the first year have laid the groundwork for teacher preparation. |
| M.Ed. | **M. Ed. First Year (2nd semesters)- All Courses** | 1. Prepare a term paper describing how the inputs from the eight courses in the first year have laid the groundwork for becoming a teacher education professional. |

**PRINCIPAL**

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

Gulab Bai Yadav Smriti Shiksha Mahavidyalaya, Borawan (MP)

# Assignment

*For the Fulfillment For the award of the Degree*

*Of*

*Bachelor of Education (1st Sem )*

## Year 2021 -22

GUIDED BY

Vaishali Tiwari

Submitted By

Shubham Shakya

Roll No.

Enrollment No.

Prof. S.K. Tiwari
**Principal**
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

Date: / / Page no:

# Subject :- 1.

# Childhood & Growing Up.

## BLUE-PRINT

Q: 1:- What is blue print? Create a blue print on any of the subject upto high school level and build a question paper based on Bloom's Texonomy?

Ans:- Blue print :-

Blueprint is just a design, plan, or draft of something important. Blueprint is also called a measuring unit which includes planning, preparation, selection, executing and evaluation. A test is a measuring device of physical and mental characteristics.

The blueprint is a fundamental element of a program. Blue print in teaching is an essential part of the education system.

Preparation of Blueprint :-

Blueprint serves as a frame of reference for preparing the test items. This blueprint shows the distribution of test items content and distibute the objective of the test. It acts as a guideline for the test construction table of specialization or blueprint is a

three - dimensional chart which are

- Determining weightage to different instructional objectives.
- Determining weightage to the different content area.
- Determing the item type to be included.

## Construction of Blueprint :-

The most important step in planning a test is to identify the instructional objectives.

| S. No. | Subject | Mark | Weightage |
|---|---|---|---|
| 1) | Knowledge | 8 | 32 % |
| 2) | Understanding | 8 | 32 % |
| 3) | Skills | 5 | 20 % |
| 4) | Application | 4 | 16 % |

good

It indicates the area in which the students are expected to show the performance.

Marks - 80 Blueprint of Mathematics Class - X Time - 3 hrs

| S. No. | CONTENT | KNOWLEDGE | | | | UNDERSTANDING | | | | APPLICATION | | | | SKILL | | TOTAL |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | Types of Questions | ET | SAT | VSAT | OT | ET | SAT | VSAT | OT | ET | SAT | VSAT | OT | ET | SAT | |
| 1) | Real Number | - | - | 2(1) | - | - | - | 2(1) | - | - | - | 2(1) | - | - | - | 6 |
| 2) | Polynomials | - | | 2(1) | | | | | | | 3(1) | | | | | 5 |
| 3) | Linear eq. in two variables | - | | 2(1) | | | | | | | | | | | 3(1) | 5 |
| 4) | Quadratic Equation | - | | 2(1) | | | 3(1) | | | | | | | | | 5 |
| 5) | Arithmetic Progressions | - | 3(1) | | | | | 2(1) | | | | | | | | 5 |
| 6) | Triangles | - | | | 2(2) | | 3(1) | | | | | | | | | 6 |
| 7) | Co-ordinate geometry | - | 6(2) | | | | | | | | | | | | | 6 |
| 8) | Trigonometry | - | | | 1(1) | | | | 1(1) | | 3(1) | 2(1) | | | | 7 |
| 9) | App. of Trigonometry | | | | | | | | | 5(1) | | | | | | 5 |
| 10) | Circles | | | | | 5(1) | | | | | | | | 5(1) | | 5 |
| 11) | Construction | | | | | | | | | | | | | | | 5 |
| 12) | Surface Area & Volumes | | | | | 5(1) | | | | | | | | | | 5 |
| 13) | Area related to circles | | | 2(1) | | | 3(1) | | | | | | | | | 5 |
| 14) | Statistics | 5(1) | | | | | | | | | | | | | | 5 |
| 15) | Probability | | 3(1) | (2(1) | | | | | | | | | 1(1) | | | 6 |
| 16) | Total | 5(1) | 12(4) | 12(6) | 3(3) | 10(2) | 9(3) | 4(2) | 1(1) | 5(1) | 6(2) | 4(2) | 1(1) | 5(1) | 3(1) | 80 |

Question paper based on Bloom's Taxonomy :-

Bloom's Taxonomy questions are a great way to build and design curriculum and lesson plans. They encourage the development of higher order thinking and encourage students to engage in metacognition by thinking and reflecting on their own learning.

## Question Paper

### Subject :- Science

Time :- 2hrs. Maximum Marks :- 40.

### Section A

1. Define power of a lens? What is its unit? [2]

2. Define excretion. Name the filtration unit present in the kidney. [2]

3. Describe the activity that shows that a current - carrying conductor experiences a force perpendicular to its length and the external magnetic field. [2]

4. Explain in brief why hormonal responses are slower than reflex actions. [2]

5. Identify the type of reaction in the following [2]

a) $ZnCO_3 + 2HCl \longrightarrow ZnCl_2 + H_2CO_3$

b) $2NaBr + Cl_2 \longrightarrow 2NaCl + Br_2$

6. List in tabular form three chemical properties on the basis of which we can differentiate between a metal and a non-metal? [2]

7. Describe an experiment to demonstrate that $CO_2$ is essential for photosynthesis? [2]

8. State two main causes of a person developing near-sightedness. [2]

## Section B

9. Why do we observe difference in colours of the sun during sunrise, sunset and noon? [3]

10. Explain the three pathways of breakdown in living organisms. [3]

11. Enlist the properties of magnetic field lines. [3]

12. Distinguish between a convex lens and concave lens [3]

13. Suggest any two methods for reducing the problem of waste disposal. [3]

14. Draw labelled diagram of human respiratory system and name the parts. [3]

15. Describe an activity to show that acid solutions in water conduct electricity. [3]

16. How do the guard cells regulate opening and closing of stomatal pores? [3]

Prof. S.K. Tiwari
Principal
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)

Swa. Gulab Bai Yadav Smriti Shiksha Mahavidhyalaya ★ BORAWAN (M.P.) ★

1 सेट

# JS-800-N

**September 2021**

B. Ed. II Semester Examination

**LEARNING AND TEACHING (CC 1)**

[Max. Marks 75
[Min. Marks 30

नोट : खण्ड अ में से किन्हीं 11 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न का उत्तर 100-150 शब्दों से अधिक न हो। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है। खण्ड ब में से किन्हीं 2 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न का उत्तर 400-500 शब्दों से अधिक न हो। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।
**Attempt any 11 questions from Section A. Answer may not exceed 100-150 words. Each question carries 5 marks. Attempt any 2 questions from Section B. Answer may not exceed 400-500 words. Each question carries 10 marks.**

## खण्ड अ Section A

1. अधिगम एवं परिपक्वता में अन्तर लिखिए।
Write differences between learning and maturation.

2. मानव शिक्षा के मानवतावादी दृष्टिकोण की प्रमुख विशेषताएं लिखिये।
Write the main characteristics of Humanistic Perspective of Learning.

3. ज्ञान के निर्माण में परासंज्ञान कैसे मदद करता है ?
How does meta cognition help is construction of knowledge ?

4. एक आदर्श शिक्षक में कौन-कौन से गुण होने चाहिए ?
Which qualities would have on Ideal teacher ?

5. वाइगोत्स्की के सिद्धान्त के शैक्षिक निहितार्थ लिखिए।
Write educational implications of Vygotsky's Theory of Learning.

6. अन्तर्निहित ज्ञान का क्या अर्थ है ? उदाहरण द्वारा समझाइए।
What is the meaning of implicit knowledge ? Explain with examples.

7. परासंज्ञान का अर्थ समझाइए।
Explain the meaning of Meta Cognition.

8. ब्रूनर के शैक्षिक सिद्धान्त एवं व्यवहार के योगदान की व्याख्या कीजिए।
Discuss the contribution of Bruner to educational theory and practice.

9. अधिगम को प्रभावित करने वाले दो कारकों की व्याख्या कीजिए।
Explain two factors that affect Learning.

10. कक्षा में डिस्लेक्सिक विद्यार्थियों की समस्याएं क्या है ?
What are the problems faced by dyslexics students in the classroom ?

11. सृजनात्मकता एवं इसकी तीन विमाओं को परिभाषित कीजिए।
Define creativity and its three dimensions.

12. स्किनर का क्रिया-प्रसूत अनुकूल सिद्धान्त क्या है ? इसका शैक्षिक महत्व बताइए।
What is Skinner's operant conditioning theory ? Explain its educational importance.

13. गार्डनर के बहु-बुद्धि सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।
Explain Gardner's Multiple Theory of Intelligence.

14. अधिगम शैलियों के आधार पर अधिगमकर्ताओं का वर्गीकरण दीजिए।
Classify the learner based on the learning styles.



P. T. O.

खण्ड ब Section B

1. ज्ञान के 'निर्माण' रूप में अधिगम और ज्ञान के सम्प्रेषण व 'प्राप्ति' के रूप में अधिगम में क्या अन्तर है ? उदाहरण द्वारा समझाइए ।
What is the difference between learning as 'constructs of knowledge' and learning as a 'transmission and reaction' of knowledge ? Explain with examples.

2. सीखने की प्रक्रिया में सहायता करने वाले प्रमुख कारकों का वर्णन कीजिए ।
Discuss the main factors which help in the process of learning.

3. प्रतिभाशाली बालकों की विशेषताएं लिखिए । ऐसे बालकों के शैक्षिक कार्यक्रम के लिए सुझाव दीजिए ।
Write characteristics of Gifted Children. Give suggestions of educational programmes for them.

4. शैक्षिक पिछड़ेपन के कारण लिखिए तथा उसके निवारण के लिए उपाय सुझाइये ।
Write causes of educational backwardness and suggest measures to overcome that.



---

# JS-802-N

## September 2021
## B. Ed. II Semester Examination

**PC-1 – Pedagogy of School Subject – Part I : SANSKRIT (B)**

[Max. Marks 75
[Min. Marks 30

नोट : खण्ड अ में से किन्हीं 11 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न का उत्तर 100-150 शब्दों से अधिक न हो। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है। खण्ड ब में से किन्हीं 2 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न का उत्तर 400-500 शब्दों से अधिक न हो। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

**खण्ड अ**

1. संस्कृत हमारी राष्ट्रीय एकता की आधार शिला किस प्रकार है ?
2. संस्कृत हमारी संस्कृति की संरक्षिका है, संस्कृत की घटती लोकप्रियता के संदर्भ में विद्यार्थियों को समझाइये।
3. संस्कृत की अन्य भारतीय भाषाओं के विकास के संदर्भ में क्या भूमिका है ?
4. माध्यमिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण का स्थान निर्धारित कीजिये।
5. विदेशों में संस्कृत साहित्य का अध्ययन कहां-कहां और कैसे हो रहा है ?
6. संस्कृत शिक्षण के किसी तीन उद्देश्यों का वर्णन कीजिये।
7. संस्कृत भाषा में पद्य-शिक्षण हेतु कक्षा आठवीं के लिये किसी प्रकरण पर पाठ-योजना का प्रारूप बनाइये।
8. मध्य प्रदेश शासन ने संस्कृत शिक्षण हेतु क्या प्रयत्न किये हैं ?
9. त्रिभाषा सूत्र के संदर्भ में संस्कृत आयोग की प्रमुख अनुशंसाएं कौन सी हैं ? उनका उल्लेख कीजिये।
10. अच्छा मापन आप किसे कहेंगे ? कोई दस विशेषताएं बताइये।
11. निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक परीक्षण में अन्तर सोदाहरण स्पष्ट कीजिये।
12. भाषाई कौशल कौन-कौन से हैं ? इनमें दक्षता प्राप्ति क्यों आवश्यक है ?
13. संस्कृत में पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धान्तों का उल्लेख कीजिये।
14. विद्यार्थियों में सुन्दर व शुद्ध लेखन हेतु आप कौन-कौन सी पाठ्य सहगामी गतिविधियां आयोजित करेंगे ? किन्हीं पांच गतिविधियों को उदाहरण दीजिये।

**खण्ड ब**

1. "संस्कृत साहित्य एक समृद्ध साहित्य है।" इस कथन को सिद्ध करते हुए देश में भावात्मक एकता स्थापित करने में संस्कृत के महत्व को प्रतिपादित कीजिये।
2. संस्कृत शिक्षण मातृभाषा के सहयोग से ही होना चाहिये। इस कथन के पक्ष-विपक्ष में उदाहरण सहित तर्क प्रस्तुत कीजिये।
3. विद्यार्थी संस्कृत भाषा पढ़ते हैं, किन्तु बोलते नहीं हैं। विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा में वाचन कौशल विकसित करने हेतु एक संस्कृत शिक्षक को क्या-क्या प्रयास करना चाहिये ?
4. कक्षा आठवीं के लिये संस्कृत भाषा के व्याकरण शिक्षण हेतु एक उपलब्धि परीक्षण की पाठयोजना उत्तर सहित एवं नील प्रपत्र (ब्लू प्रिन्ट) सहित बनाइये।

---

# JS-806-N

## September 2021
## B. Ed. II Semester Examination

**PC-I – Pedagogy of School Subject – Part I : CIVICS (F)**

[Max. Marks 75
[Min. Marks 30

नोट : खण्ड अ में से किन्हीं 11 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न का उत्तर 100-150 शब्दों से अधिक न हो। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है। खण्ड ब में से किन्हीं 2 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न का उत्तर 400-500 शब्दों से अधिक न हो। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।
**Attempt any 11 questions from Section A. Answer may not exceed 100-150 words. Each question carries 5 marks. Attempt any 2 questions from Section B. Answer may not exceed 400-500 words. Each question carries 10 marks.**

### खण्ड अ Section A

1. नागरिकशास्त्र से आप क्या समझते हैं ?
What do you mean by Civics ? Describe the scope of Civics.

2. सिद्ध कीजिए कि नागरिकशास्त्र कला और विज्ञान का समन्वित रूप है।
Prove that the Civics is an Integral Form of Art and Science.

3. "मानव एक सामाजिक प्राणी के रूप में" समझाइए।
Explain "Man as a Social Animal and as a Citizens'.

4. विद्यालय पाठ्यचर्या में नागरिकशास्त्र का क्या महत्त्व है ? स्पष्ट कीजिए।
What is the importance of Civics in school curriculum ? Clarify.

5. भारतीय परिप्रेक्ष्य में मौलिक अधिकारों एवं कर्तव्यों की उपयोगिता का वर्णन कीजिए।
Describe the utility of Fundamental Rights and Duties in reference of India.

6. नागरिकशास्त्र और अर्थशास्त्र में सहसम्बन्ध स्थापित कीजिए।
Establish correlation between Civics and Economics.

7. पाठ योजना बनाते समय शिक्षकों को कौन-कौन सी बिन्दुओं का ध्यान रखना चाहिए ? स्पष्ट कीजिए।
What points should be kept in mind by the teacher during construction of Lesson Plan ? Explain.

8. नागरिकशास्त्र शिक्षण विषय के अन्तर्गत एक अच्छी वार्षिक योजना की प्रमुख विशेषताएं लिखिए।
Write the main characteristics of a good lesson plan the subject in Civics teaching.

9. शिक्षण सामग्री से क्या आशय है ? नागरिक शिक्षण के लिए आप किन शिक्षण सामग्रियों का उपयोग करेंगे ?
What do you mean by teaching aids which teaching aids will you use for Civics teaching ?

10. शिक्षण विधि एवं शिक्षण तकनीकि में क्या सम्बन्ध है ? स्पष्ट कीजिए।
What is the relationship between Teaching Method and Teaching Technique ? Explain.

11. नागरिकशास्त्र शिक्षण में पाठ्यसहगामी क्रियाओं में प्राचार्य की भूमिका पर प्रकाश डालिये।
Highlight the role of the principal in curricular activities in Civics teaching.

12. नागरिकशास्त्र शिक्षण में कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट की उपयोगिता पर संक्षिप्त लेख लिखिए।
Write a short note on the utility of computer and internet in the teaching of Civics.

13. वाद विवाद विधि क्या है ? नागरिकशास्त्र शिक्षण में इसका क्या महत्त्व है ?
What is discussion method ? What is importance of this method in teaching of Civics ?

14. 'आत्मकथा', 'मेग्जीन' इन दो प्रकरणों पर टिप्पणी लिखिए।
'Auto Biographic,', 'Magazines' write short note on these two topics.



P. T. O.

खण्ड ब Section B

1. नागरिकशास्त्र शिक्षण के पांच लक्ष्य लिखिए।
Write five aims of Civics teaching.

2. परीक्षण मदों के प्रकारों का वर्णन कीजिए। नागरिकशास्त्र हेतु एक उपयुक्त उपलब्धि परीक्षण पत्र का निर्माण कीजिए।
Explain the types of test items and construct appropriate achievement test for Civics.

3. "श्रव्य और दृश्य सामग्री नागरिकशास्त्र शिक्षण के सबसे अच्छे साधन हैं।" स्पष्ट कीजिए।
"Audio and Visual aids are the best resource of Civics teaching." Clarify.

4. नागरिकशास्त्र विषय की कक्षा-7 की किसी प्रकरण पर पाठ योजना तैयार कीजिए।
Prepare a lesson plan on any topic of Civics for Class 7th.

---

(1)

# September 2021
## M. Ed. II Semester Examination

### RESEARCH DATA ANALYSIS AND INTERPRETATION
PAPER II

[Max. Marks 80
[Min. Marks 28

विशेष निर्देश : प्रत्येक प्रश्न के उत्तर की अधिकतम सीमा 250 से 300 शब्द है।
**Word limit for answer of each question is 250 to 300 words.**

नोट : सभी पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिये। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।
**Answer all five questions. All questions carry equal marks.**

1. (अ) शोध उपकरण एवं शोध प्रदत्त में सम्बन्ध स्थापित कीजिये।
Establish relation between Research Tools and Research Data.

(ब) गुणात्मक एवं मात्रात्मक प्रदत्तों में अन्तर स्पष्ट कीजिये। उदाहरण दीजिये।
Differentiate between qualitative and quantitative data ? Give examples.

अथवा OR

(अ) प्रदत्तों की विश्वसनीयता एवं वैधता की जांच कैसे की जाती है ? समझाइये।
State the testing method of reliability and validity of Data. Explain.

(ब) अव्यवस्थित आंकड़ों में मध्यांक एवं बहुलांक की गणना के सूत्रों की व्याख्या कीजिये।
Illustrate the formula for the calculation of median and mode of ungrouped data.

2. (अ) मापन के स्तर से आप क्या समझते हैं ? प्रत्येक स्तर को उदाहरण सहित समझाइये।
What do you mean by levels of measurement ? Explain with examples each level of measurement.

(ब) द्विमुखी अंक वितरणों में बहुलांक की गणना के लिये किस सूत्र का प्रयोग उपयुक्त रहता है ? और क्यों ?
Which formula is suitable for the calculation of mode in distribution of Bimodal Data ? And why ?

अथवा OR

(अ) केन्द्रीत प्रवृति के मापों में कौन सा माप अपेक्षाकृत अधिक स्थाई तथा विश्वसनीय रहता है ? और क्यों ?
Which measurement is comparatively more stable and reliable among the measurements of central tendency ? And why ?

(ब) विचलन की मापों से आप क्या समझते हैं ? विचलन के प्रकारों को उदाहरण सहित समझाइये।
What do you mean by measures of variability ? Explain the types of variability with examples.

3. (अ) सामान्य संभावना वक्र को उदाहरण सहित समझाइये।
Explain the NPC with suitable examples.

(ब) एक सामान्य अंक वितरण का मध्यमान 72.38 एवं मानक विचलन 7.62 है। गणना करके बताइये कि 80 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की संख्या कितनी होगी ?
In a normal distribution curved the mean value is 72.38 and SD is 7.62. Calculate the no. of persons who will score more then 80 marks.

अथवा OR

(अ) एक पुच्छीय एवं द्विपुच्छीय परीक्षण को उदाहरण सहित समझाइये।
Give examples to explain one tailed and two tailed test.

(ब) परिकल्पना परीक्षण में टाईप-I टाईप-II त्रुटि को समझाइये।
What do you understand by Type-I and Type-II error in hypothesis testing.



P. T. O.

(2)

4. (अ) एक मार्गीय एनोवा से आप क्या समझते हैं ?
What do you understand by one-way Anova ?

(ब) प्रसरण विश्लेषण का अर्थ बताते हुए उसकी मान्यताएं स्पष्ट कीजिये ।
What do you mean by Variance Analysis ? Variefy its assumptions.

अथवा OR

निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर टिप्पणी लिखिये :

(अ) टी-परीक्षण
(ब) $z$-स्कोर
(स) स्वतंत्रता के अंश
(द) सह-सम्बन्ध गुणांक
(इ) धनात्मक एवं ऋणात्मक सह-सम्बन्ध ।

Write notes on any four of the following :

(a) $t$-test
(b) $z$-score
(c) Degree of Freedom
(d) Co-relation Coefficient
(e) Positive and Negative Correlation.

5. (अ) डेटा विश्लेषण में कम्प्यूटर के उपयोग एवं कम्प्यूटर साफ्टवेयर पर प्रकाश डालिये ।
Focus on the use of computer and computer software in analysis of data.

(ब) प्रदत्त समंकों के रेखीय प्रस्तुतीकरण के विभिन्न रूपों को उदाहरण सहित समझाइये ।
Explain the representation of data with the help of different types of Bar diagram.

अथवा OR

(अ) निम्नलिखित आंकड़ों से माध्य विचलन ज्ञात कीजिये :
Calculate Mean Deviation with the following data :

8, 6, 4, 10, 12, 7, 5, 4, 4, 10.

(ब) विषमता से आप क्या समझते हैं ? उसके प्रकारों को उदाहरण सहित समझाइये ।
What do you mean by Skewness ? Explain the types of skewness with examples.

---

# JS-846

**September 2021**
M. Ed. IV Semester Examination

Special Second Advance Level – II
**CURRICULUM STUDIES**
PAPER IV

[Max. Marks 80
[Min. Marks 28

विशेष निर्देश : प्रत्येक प्रश्न के उत्तर की अधिकतम सीमा 250 से 300 शब्द है।
**Word limit for answer of each question is 250 to 300 words.**

नोट : सभी पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिये। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।
**Answer all five questions. All questions carry equal marks.**

1. नई शिक्षा नीति – 2020 के अनुसार पाठ्यक्रम विकास एवं क्रियान्वयन की कौन-कौन सी अनुशंसाएँ हैं ? विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।
Briefly describe the recommendations by New Education Policy – 2020 in the field of Curriculum Implementation and Developments. 16

अथवा OR

पाठ्यचर्या क्रियान्वयन के मुद्दे कौन-कौन से हैं ? पाठ्यचर्या क्रियान्वयन के किन्हीं दो प्रतिमानों की तुलना कीजिए।
What are the issues of Curriculum Implementation ? Describe and compare any two Model of Curriculum Implementation. 5+11

2. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की अवधारणा और उसके उपागमों को वैज्ञानिक और मानवतावादी दृष्टिकोण के संदर्भ में समझाइये।
Explain the concept of Curriculum Evaluation and its approaches with special reference to Scientific and Humanistic Approach. 16

अथवा OR

पाठ्यचर्या मूल्यांकन की प्रक्रिया को समझाइये। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के मॉडल का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।
Describe the process of Curriculum Evaluation. Critically evaluate Model of Curriculum Evaluation. 6+10

3. पाठ्यचर्या के विकास में पदाधिकारियों एवं लाभार्थियों की सहभागिता पर चर्चा कीजिए।
Discuss participation of functionaries and beneficiaries in Curriculum Development. 16

अथवा OR

निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(अ) केन्द्रीयकृत एवं विकेन्द्रीकृत पाठ्यचर्या।

(ब) शिक्षकों के मध्य विविधता एवं योग्यता का पाठ्यक्रम विकास पर प्रभाव।

Write short notes on the following :

(a) Centralized and Decentralized Curriculum. 8

(b) Diversity and Competence among Teachers influenced the Curricular Development. 8



P. T. O.

4. पाठ्यक्रम निर्माण के समाजशास्त्रीय आधारों की विवेचना कीजिए।
Discuss the sociological basis of Curriculum Construction. 16

अथवा OR

निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(अ) भारत में पाठ्यक्रम अनुसंधान में अंतराल।

(ब) शिक्षक-शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (2009)।

Write short notes on the following :

(a) Gaps in Curriculum Research in India. 8

(b) National Curriculum Framework for Teacher Education (2009). 8

5. भारतीय पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की तुलना संयुक्त राज्य अमेरिका, युनाइटेड किंगडम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन से कीजिए।
Compare educational objectives of Indian Curriculum with United Kingdom (UK) of Great Britain and United States of America (USA). 16

अथवा OR

भारत एवं सोवियत संघ (यू एस एस आर) की उच्च शिक्षा प्रणाली की तुलना निम्नांकित आधारों पर कीजिए :

(अ) शैक्षिक संरचना (ब) पाठ्यचर्या (स) परीक्षा प्रणाली।

Compare the Higher Education System of India and USSR on following bases :

(a) Education Structure (b) Curriculum (c) Examination System. 16

# JS-832

## September 2021
## M. Ed. II Semester Examination

Second Advance Level – I
**EDUCATIONAL ADMINISTRATION**

[Max. Marks 80
[Min. Marks 28

विशेष निर्देश : प्रत्येक प्रश्न के उत्तर की अधिकतम सीमा 250 से 300 शब्द है।
**Word limit for answer of each question is 250 to 300 words.**

नोट : सभी पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिये। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।
**Answer all five questions. All questions carry equal marks.**

1. "प्रशासन निर्णय लेने पर आरम्भ होता है व निर्णय पर ही समाप्त होता है।" इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। प्रशासनिक निर्णय करने की प्रक्रिया को भी समझाइये।
"Administration starts when decision making and end with decision making." Comments on this statement. Also explain the process of scientific decision making. 10+6

अथवा OR

POSDCORB से आप क्या समझते हो ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। एक संस्था के मुखिया के रूप में यह आपको कैसे प्रभावशाली बनाता है ?
What do you understand by POSDCORB ? Explain with example. As the head of institution how will it make you effective administrator ? 8+8

2. नेतृत्व के समस्त सिद्धान्तों को सूचीबद्ध कीजिए। नेतृत्व के किन्हीं दो सिद्धान्तों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।
List all the theories of leadership and critically evaluate any two theories of leadership. 8+8

अथवा OR

"छात्र का सर्वांगिण विकास प्रजातांत्रिक प्रशासनिक व्यवस्था के द्वारा ही सम्भव है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए। प्रजातांत्रिक व एकतंत्रीय व्यवस्था में शिक्षा की प्रकृति को स्पष्ट कीजिए।
"All round development of students is possible only by democratic education administration." Discuss this statement and describe the nature of education in democratic and an auto critic setup. 8+8

3. संस्थागत नियोजन एवं शैक्षिक नियोजन में अन्तर स्पष्ट कीजिए। अपनी संस्था के लिए एक साल हेतु संस्थागत योजना तैयार कीजिए।
Differentiate between institutional planning and educational planning and prepare the year institutional plane for your institution. 8+8

अथवा OR

प्रणाली उपागम से क्या समझते हैं ? शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रणाली उपागम का एक रेखाचित्र बनाइये।
What do you understand by system approach ? Digrammatically represent the system for achieving goals of education ? 6+10

4. "पर्यवेक्षण उत्तम प्रशासन की आत्मा है।" इस कथन का मूल्यांकन करते हुये इसके महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
"Supervision is the soul of good administration. "Evaluate this statement and discuss its importance and methods. 10+6

अथवा OR

शैक्षिक पर्यवेक्षण की आधुनिक अवधारणा स्पष्ट कीजिए। शैक्षिक पर्यवेक्षण के उद्देश्य क्या हैं ? प्रभावी शिक्षण में इसका महत्त्व प्रतिपादित कीजिए।
Explain the modern concept of educational supervision. What are the aims of the educational supervision ? Discuss its importance for effective teaching. 5+5+6

P. T. O.

5. मानव संसाधन विकास मंत्रालय की क्रियाओं का सविस्तार वर्णन कीजिए।
Describe activities of the ministry of Human Resource Development in detail. 16

अथवा OR

निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :
(अ) शिक्षा के संवैधानिक प्रावधान।
(ब) पंचायती राज प्रणाली में शैक्षिक प्रशासन।
Write short notes on the following :
(a) Educational Provision in Constitution.
(b) Educational Administration in Panchayati Raj. 16

Swa. Gulab Bai Yadav Smriti Shiksha Mahavidhyalaya ★ BORAWAN (M.P.) ★

Prof. S.K. Tiwari
*Principal*
Swa. Gulab Bai Yadav Smriti
Shiksha Mahavidhyalaya
BORAWAN (M.P.)